आओ! संस्कृत सीखें!

GUIDE BOOK

गुजराती लेखक :- पं. शिवलालभाई-पाटण

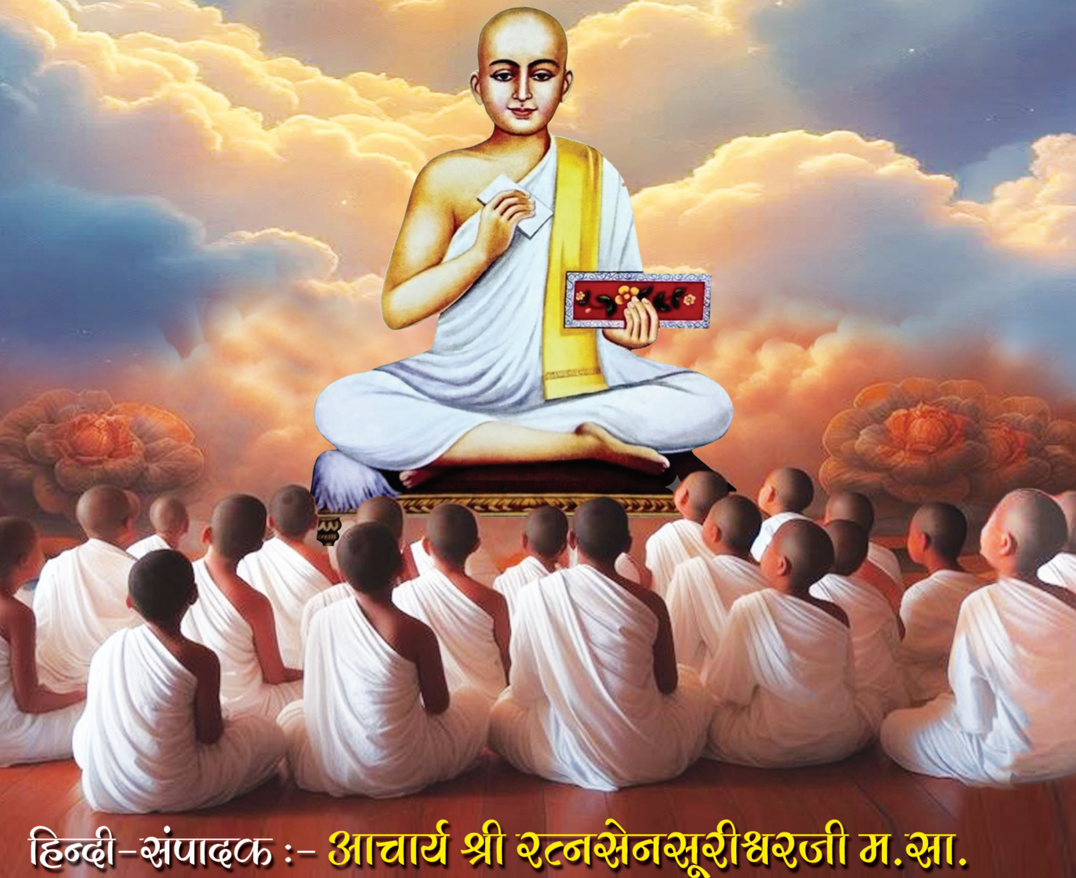

हिन्दी-संपादक :- आचार्य श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

आओ ! संस्कृत सीखें !

(Guide Book)

-: गुजराती लेखक :-

पं. शिवलालभाई नेमचंदभाई शाह-पाटण

हिन्दी अनुवाद के संपादक

परम शासन प्रभावक, महाराष्ट्र देशोद्धारक **पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय रामचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजा** के तेजस्वी शिष्यरत्न **बीसवीं सदी के महान् योगी, नवकार साधक पूज्यपाद पंन्यासप्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य** के चरम शिष्यरत्न प्रवचन-प्रभावक, सरस्वती नंदन, जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर **पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**

278

प्रकाशक

दिव्य संदेश प्रकाशन

C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor,
बे.व्यु. बिल्डिंग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट,
कालबादेवी, मुंबई-400 002.
Cell 84 84 84 84 51 (only whatsapp)

हिन्दी आवृत्ति : प्रथम • **मूल्य :** 270/- रुपये • **प्रतियाँ :** 500
विमोचन : दि. 11-8-2026
विमोचन स्थल : प्रेमसूरि आराधना भवन, पिंडवाडा, (राज.)
• **Website :** divyasandesh.store

आजीवन सदस्य योजना

आजीवन सदस्यता शुल्क - 4000/- रु.

• आप जैन धर्म के रहस्य, जैन इतिहास, जैन तत्त्वज्ञान, जैन आचार मार्ग, प्रेरणादायी कथाएँ आदि का अध्ययन करना चाहते हों तो आज ही आप **दिव्य संदेश प्रकाशन** मुम्बई की आजीवन सदस्यता प्राप्त कर लें। सदस्य बनते ही अध्यात्मयोगी निःस्पृह शिरोमणि स्व. पूज्यपाद पंन्यासप्रवर **श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्यश्री** एवं उन्हीं के चरम शिष्यरत्न प्रवचन प्रभावक परम पूज्य ***आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.*** सा. द्वारा लिखित उपलब्ध 7 पुस्तकें दी जाएंगी और **अर्हद् दिव्य संदेश** मासिक तथा भविष्य में हिन्दी भाषा में प्रकाशित पुस्तकें (Open Book Exam साधु–साध्वी उपयोगी पुस्तकें एवं पुनः मुद्रित पुस्तकों को छोड़कर) घर बैठे प्राप्त होगी। आप आजीवन सदस्यता शुल्क मुंबई या बैंगलोर के पते पर दिव्य संदेश प्रकाशन-मुंबई के नाम से चैक व ड्राफ्ट से भेजें।

प्राप्ति स्थान

1. चेतन हसमुखलालजी मेहता
बोरीवली (West) (M.S.)
M. 9867058940

2. प्रवीण गुरुजी
C/o. श्री आत्म कमल लब्धिसूरि
जैन पुस्तकालय
श्री आदिनाथ जैन टेंपल,
चिकपेठ, बेंगलोर-560 053.
M. 9036810930

3. चंदन एजेन्सी
607, चीरा बाजार,
मुंबई-400 002.
M.9820303451

आजीवन सदस्यता शुल्क
Rs. 4000/- *भिजवाने का पता एवं पुस्तक-प्राप्ति-स्थान :*

(1) दिव्य संदेश प्रकाशन
C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor, बे व्यु बिल्डिंग,
विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी,
मुंबई-400 002. Mobile : 84 84 84 84 51 (only whatsapp)

(2) दिव्य संदेश प्रचारक
प्रकाश बड़ोल्ला, 52, 3rd Cross, शंकरमट रोड, शंकरपुरा,
बैंगलोर-560 004. M. 8971230600

प्रकाशक की कलम से...

अध्यात्मयोगी, निःस्पृह शिरोमणि, नमस्कार महामंत्र के बेजोड साधक **पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य** के कृपापात्र चरम शिष्यरत्न **मरुधररत्न, सरस्वती नंदन, जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** के संयम सुवर्ण वर्ष की अनुमोदनार्थ उन्हीं के द्वारा हिन्दी भाषा में संपादित **278वीं पुस्तक `आओ ! संस्कृत सीखें Guide Book''** का प्रकाशन करते हुए हमें अत्यंत ही हर्ष हो रहा है। भवोदधित्राता अपने गुरुदेवश्री के कालधर्म के बाद वि.सं. 2038 से प्रारंभ हुई उनकी साहित्य यात्रा निराबाध गति से चल रही है, जो निकट भविष्य में **300 के अंक को पार कर जाएगी ।**

यद्यपि श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ में हिन्दी भाषी विशाल वर्ग हैं, परंतु श्वे.मू. जैन संघ का विपूल साहित्य गुजराती भाषा में है। हिन्दी साहित्य की बहुत बडी कमी थी, परंतु वर्षों पूर्व वि.सं. 2046 में जयपुर शहर में शिखरबद्ध जिनालय की प्रतिष्ठा के पावन प्रसंग पर जब **मु.श्री रत्नसेनविजयजी म.सा.** ने देखा कि– **``दिगंबर, स्थानकवासी और तेरापंथी का हिन्दी भाषा में विपूल साहित्य है, परंतु श्वे. मूर्तिपूजक संघ का हिन्दी साहित्य बहुत ही कम है ।''** इस बात को लक्ष्य में रखकर **पू. मुनिराजश्री** ने हिन्दी भाषा में साहित्य सर्जन का संकल्प किया। अपने परमोपकारी गुरुदेवश्री की असीम कृपावृष्टि के फल स्वरुप वे इस कार्य में अच्छी सफलता हासिल कर सके। आज उस साहित्य का 278 की सीमा को पार कर चूका है। निकट भविष्य में ही उनकी 300 वीं पुस्तक के प्रकाशन की संभावना हैं।

हमें आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास हैं कि पूज्यश्री द्वारा संपादित यह प्रकाशन हिन्दी भाषी प्रजा के लिए खूब उपयोगी बनेगा ।

संपादक की कलम से...

वि.सं. 1193 में गुजरात के सम्राट् सिद्धराज जयसिंह ने कलिकाल सर्वज्ञ **हेमचन्द्राचार्यजी** को संस्कृत व्याकरण रचने के लिए विनती की थी ।

बुद्धि निधान **हेमचन्द्रसूरिजी म.** ने एक ही वर्ष की अल्पावधि में लघुवृत्ति, बृहद्वृत्ति तथा बृहन्न्यास युक्त **'सिद्ध हेमचन्द्र शब्दानुशासनम्'** व्याकरण की रचना की थी ।

18 देशों के अधिपति सम्राट् कुमारपाल महाराजा ने भी इस व्याकरण का अभ्यास कर संस्कृत भाषा पर प्रभुत्व किया था ।

इसी व्याकरण को सरलता से समझने के लिए उपाध्याय श्री मेघविजयजी ने **'चंद्रप्रभा हैम कौमुदी'** की रचना तथा **महोपाध्याय श्री विनयविजयजी म.** ने **'हैमलघु-प्रक्रिया'** की भी रचना की थी ।

गुजराती भाषा समझने वाला भी संस्कृत भाषा को सीख सके, इसके लिए पाटण (गुज.) के पंडितवर्य **श्री शिवलालभाई** ने **हैम संस्कृत प्रवेशिका-भाग-1, 2 व 3** की रचना की थी ।

मैंने भी अपनी मुमुक्षु अवस्था में **पू.मु.श्री धुरंधरविजयजी म.** तथा **पू.मु.श्री वज्रसेनविजयजी म.सा.** के पास **सिद्धहेमसंस्कृत प्रवेशिका भाग 1 व 2** का तथा दीक्षा बाद पाटण में **पं. शिवलालभाई** के पास **सिद्धहेमशब्दानुशासनम्-लघुवृत्ति** तथा **बृहद्वृत्ति** का अभ्यास किया था ।

हिन्दी भाषी प्रजा भी संस्कृत भाषा का अभ्यास सरलता से कर सके, इस लक्ष्य को ध्यान में रखकर वर्षों

इस **Guide Book** के संपादन में **मुनिराज श्री स्थूलभद्रविजयजी म.** ने भी खुब श्रम लिया है, इसके लिए वे धन्यवाद के पात्र है ।

प्रस्तुत Guide Book में सिद्धहेम प्रवेशिका, मध्यमा व उत्तमा अर्थात् 'आओ संस्कृत सीखें ! भाग-1, 2 व 3' में पूछे गए संस्कृत व हिन्दी अनुवाद के प्रश्नों के उत्तर दिए है ।

तीनों भागों का अभ्यास करनेवाले विद्यार्थियों के लिए यह **Guide Book** खूब उपयोगी बनेगी, ऐसा आत्म विश्वास है ।

सिद्धहेम प्रवेशिका के तीन भागों का अच्छी तरह से अभ्यास किया जाय तो संस्कृत भाषा पर अच्छा प्रभुत्व प्राप्त हो सकता है ।

भाषा बोध का सही उपयोग तत्त्वज्ञान का अभ्यास ही है ।

पूर्वाचार्य महर्षियों ने भावी प्रजा के हित के लिए संस्कृत भाषा में सैकडों ग्रंथों का सर्जन किया है ।

इस पुस्तक का अभ्यास कर सभी पुण्यात्माएं जीवन में तत्त्वज्ञान को प्राप्त करे और उसके फल स्वरुप आत्म कल्याण के मार्ग में खूब खूब आगे बढे, इसी शुभ कामना के साथ !

प्रेमसूरि आराधना भवन,
पिंडवाडा (राज.)
दि. 20-07-2026

गुरुपाद पद्मरेणु
आचार्य रत्नसेनसूरि

अनुक्रमणिका

आओ ! संस्कृत सीखें (भाग-1)
की मार्गदर्शिका
पाठ-1 से पाठ-51 1-36

आओ ! संस्कृत सीखें (भाग-2)
की मार्गदर्शिका
पाठ-1 से पाठ-36 41-90

परिशिष्ट 93

आओ ! संस्कृत सीखें (भाग-3)
की मार्गदर्शिका
पाठ-1 से पाठ-18 101-141

आओ ! संस्कृत सीखें (भाग-1) की मार्गदर्शिका

पाठ-1 एवं 2

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. मैं नमस्कार करता हूँ ।
2. तुम पढ़ते हो ।
3. तुम गिरते हो ।
4. मैं पढ़ता हूँ ।
5. वह नमस्कार करता है ।

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. नमसि । **2. पतामि ।** 3. पठति । **4. पतसि ।** 5. पठामि ।

पाठ-3

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. वे दोनों गिरते हैं ।
2. तुम रक्षण करते हो ।
2. वे दोनों पढ़ते हैं ।
3. वे दोनों नमस्कार करते हैं ।
4. वह बोलता है ।
6. हम दोनों पढ़ते हैं ।

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. वसतः । **2. वदसि ।** 3. वदावः । **4. रक्षति ।**
5. पतथः । **6. खादामि ।**

पाठ-4

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. वे सब चलते हैं ।
2. तुम दोनों भटकते हो ।
3. हम सब चलते हैं ।
4. वे सब नमस्कार करते हैं ।
5. हम सब रहते हैं ।

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. अर्चन्ति । 2. वदन्ति । **3. चलामः ।** 4. चरथः । **5. पठामः ।**

पाठ-5

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. हम सब रक्षण करते हैं ।
2. हम दोनों जीते हैं ।
3. **तुम त्याग करते हो ।**
4. **वे सब झरते हैं ।**
5. तुम दोनों बोलते हो ।
6. वे दोनों पूजा करते हैं ।
7. **हम सब पढ़ते हैं ।**
8. **मैं त्याग करता हूँ ।**
9. मैं खाता हूँ ।
10. वह चलता है ।
11. **तुम गिरते हो ।**
12. **मैं रहता हूँ ।**
13. तुम दोनों भटकते हो ।

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. पतसि ।
2. **चलति ।**
3. खादाव ।
4. **पताव: ।**
5. खादथ ।
6. **त्यजन्ति ।**
7. अटथ: ।
8. **पठत: ।**
9. अर्चामि ।
10. **जीवति ।**
11. रक्षामि ।
12. **भणसि ।**
13. वसाम: ।

पाठ-6

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. अहन्नमामि ।
2. **वयवँवदाम: ।**
3. यूयम्पठथ ।
4. **त्वमर्चसि ।**
5. युवाञ्जीवथ: ।
6. **आवां त्यजाव: ।**

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. वह नमस्कार करता है ।
2. वे सब रक्षण करते हैं ।
3. **वे दोनों पढ़ते हैं ।**
4. **तुम गिरते हो ।**
5. हम सब जीते हैं ।
6. मैं चलता हूँ ।

पाठ-7

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. **ते वर्षन्ति ।**
2. आवाञ्पाव: ।
3. **वयङ्क्रीडाम: ।**
4. यूयञ्चरथ ।
5. **वयञ्चलाम: ।**
6. युवां शोचथ: ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. वह बरसता है ।
2. **वे सब खाना खाते हैं ।**
3. **वे सब क्रिया करते हैं ।**
4. तुम दोनों निन्दा करते हो ।
5. मैं रक्षण करता हूँ ।
6. **तुम भटकते हो ।**

पाठ-8

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. **आवाम्भवावः ।**
2. स क्षयति ।
3. यूययँ्सरथ ।
4. **तौ जेमतः ।**

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. **मैं जीतता रहा हूँ ।**
2. हम दोनों स्मरण करते हैं ।
3. हम सब तैरते हैं ।
4. **तुम भागते हो ।**

पाठ-9

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. ते लुभ्यन्ति ।
2. **आवां मुह्यावः ।**
3. **युवां त्यजथः ।**
4. यूयङ्कुप्यथ ।
5. तौ नश्यतः ।
6. **वयन्नृत्यामः ।**

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. **वे दोनों पोषण करते हैं ।**
2. वे सब आलोटते हैं ।
3. वह बोलता है ।
4. **मैं संतोष पाता हूँ ।**
5. **तुम सब खेद पाते हो ।**
6. तुम दोनों कोप करते हो ।

पाठ-10

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. तौ मिलतः ।
2. **अहञ्जीवामि ।**
3. **यूयल्ँलिखथ ।**
4. वयं स्पृशामः ।
5. जेमामः ।
6. **ते क्षुभ्यन्ति ।**
7. **स स्फुरति ।**
8. यूयं निन्दथ ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. वे मिलते हैं ।
2. **हम दोनों नाचते हैं ।**
3. **तुम सब पढ़ते हो ।**
4. तुम दोनों तैरते हो ।
5. वे सब खिलते हैं ।
6. **वह सर्जन करता है ।**
7. **हम सब आलोटते हैं ।**
8. तुम जीतते हो ।

पाठ-11

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. युवां शोचथः ।
2. **तौ सान्त्वयतः ।**
3. अहं नृत्यामि ।
4. **युवां पूजयथः ।**
5. वयं वर्णयामः ।
6. **युवां लिखथः ।**

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. हम विचार करते हैं ।
2. **हम दोनों स्पर्श करते हैं ।**
3. **तुम दंडित होते हो ।**
4. वे लोभ करते हैं ।
5. वे बरसते हैं ।
6. **तुम दोनों दु:खी होते हो ।**

पाठ-12

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. **यूयं चोरयथ ।**
2. युवां भूषयथः ।
3. **युवा तोलयथः ।**
4. अहं तोलयामि ।
5. **ते चोरयन्ति ।**
6. आवाङ्घोषयावः ।
7. **त्वं पुष्यसि ।**
8. वयं रचयामः ।
9. **यूयं सरथ ।**

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. वे चोरी करते हैं ।
2. **मैं घोषणा करता हूँ ।**
3. **हम दोनों तोलते हैं ।**
4. तुम शोभा करते हो ।
5. तुम दोनों चोरी करते हो ।
6. **तुम सब घोषणा करते हो ।**
7. **हम सांत्वना देते हैं ।**
8. मैं जीतता हूँ ।
9. वे सब पूजा करते हैं ।

पाठ-13

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. त्वं भक्षयसि ।
2. **यूयन्ताडयथ ।**
3. अहं पारयामि ।
4. **वयं पालयामः ।**
5. आवां स्पृहयावः ।
6. **अहं तरामि ।**

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. तुम सब भक्षण करते हो ।
2. **तुम कहते हो ।**
3. **वे सब गिनते हैं ।**
4. तुम दोनों रचना करते हो ।
5. मैं स्पृहा करता हूँ ।
6. **हम सब आलोटते हैं ।**

पाठ-14

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. **स शाम्यति / सान्त्वयति ।**
2. वयं तिष्ठामः ।
3. **तौ माद्यतः।**
4. ते पश्यन्ति ।
5. **यूयं पिबथ ।**

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. **मैं जाता हूँ ।**
2. तुम खेद पाते हो ।
3. तुम दोनों इच्छा करते हो ।
4. **हम दोनों पूछते हैं ।**
5. **तुम देते हो ।**

पाठ-15

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. **वयवृँवर्धामहे ।**
2. युवाम्पचथः ।
3. **आवां वन्दावहे ।**
4. ते तिष्ठन्ति ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. **तुम हरण करते हो ।**
2. हम सब हरण करते हैं ।
3. हम दोनों पकाते हैं ।
4. **मैं पकाता हूँ ।**

पाठ-16

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. **यूयं क्व गच्छथ ?**
2. वयमत्र तिष्ठामः ।
3. **त्वं चोरयसि ।**
4. अहं न चोरयामि ।
5. **त्वङ्कदा गच्छसि ?**
6. अहमिदानीं गच्छामि ।
7. **ते प्रातः पठन्ति ।**

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. तुम कहाँ जाते हो ?
2. **मैं यहाँ खड़ा हूँ ।**
3. **मैं सुबह में पढ़ता हूँ ।**
4. वह सुबह में नहीं पढ़ता है ।
5. तुम बहुत बार खाते हो ।
6. **वह कब जाता है ?**
7. **वह अभी जाता है ।**

पाठ-17

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. सुरेन्द्रः पूजयति । | **2. कूर्मौ सरतः ।** | **3. चन्द्रः क्षयति ।**
4. अहमत्राऽस्मि । | **5. बालाः श्राम्यन्ति ।** | 6. आचार्यौ क्व गच्छतः ।
7. नृपाः पालयन्ति । | 8. यूयं क्व वसथ ?

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. रतिलाल पूछता है । | **2. आचार्य कहते हैं ।**
3. लड्डू हैं । (बहुवचन) | 4. हम दोनों यहाँ खड़े हैं ।
5. वे दोनों बालक नहीं पढ़ते हैं । | **6. बालक पढ़ाई करते हैं ।**
7. दो मोर नाचते हैं । | 8. तुम दोनों कहाँ जाते हो ?

पाठ-18

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. नृपो रक्षति । | **2. वसन्तलालश्चिन्तयति ।** | 3. कूर्मस्सरति ।
4. धर्मोरक्षति । | 5. इति आचार्याः कथयन्ति । | **6. बालः श्राम्यति ।**
7. नृपस्तुष्यति । | **8. चन्द्रो वर्धते ।** | 9. जनास्तरन्ति ।
10. रतिलालोऽत्रास्ति । | **11. त्वं प्रातरटसि ।**

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. धर्म का जय होती है । | **2. बालक दौडता है ।**
3. दो साधु जाते रहे हैं । | 4. वे दोनों कहाँ जाते हैं ?
5. जहाँ आचार्य खड़े हैं । | **6. वे दोनों वहाँ जाते हैं ।**
7. मैं सुबह में स्मरण करता हूँ । | 8. लड्डू है । (एकवचन)
9. राजा शान्त हो रहे हैं । | **10. हिरण चरते हैं ।**
11. सुबह में बालक पढ़ाई करते हैं । | 12. समुद्र में खलबलाहट होती है ।

पाठ-19

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. मृगा धावन्ति । | 2. जन इच्छति । | **3. जीवा जीवन्ति** ।
4. बाला मुह्यन्ति । | **5. देवदत्तः पचति ।** | 6. नृपा रक्षन्ति ।
7. तौ जनौ क्व गच्छतः । | 8. देवो वन्दते । | **9.बाला बहुशः खादन्ति ।**
10. अत्र मोदका न सन्ति ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. धर्म करने वाले जय पाते हैं ।
2. श्रमण जाते रहे हैं ।
3. धार्मिक पुरुष आगे बढ़ते हैं ।
4. मोर नाचते हैं ।
5. भोगीलाल हरण करता है ।
6. बालक चाहते हैं ।
7. तुम राजा हो ? हाँ, मैं राजा हूँ ।
8. प्रधान विचार करते हैं ।
9. यहाँ कांतिलाल है ? (नहीं), यहाँ कांतिलाल नहीं है ।
10. देव जल्दी जाता है ।

पाठ-20

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. बालश्चन्द्रं पश्यति ।
2. जना देवान् पूजयन्ति ।
3. नृपो ग्रामौ रक्षति ।
4. सुरेशचन्द्रो रमेशचन्द्रं स्पृहयति ।
5. जनकः पुत्रांश्चिन्तयति ।
6. स ब्राह्मणो मोदकौ खादति ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. मनुष्य धर्म को चाहते हैं ।
2. बालक मोदक खाता है ।
3. मैं वीर प्रभु को नमस्कार करता हूँ ।
4. शिष्य आचार्य को वंदन करते हैं ।
5. पिता पुत्रों को शान्त करते हैं ।
6. वह बिल्लियों को मारता है ।

पाठ-21

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. त्वं धनमिच्छसि ।
2. त्वं मुखं पश्यसि ।
3. वनं दहति ।
4. फलानि पतन्ति ।
5. जलं क्षरति ।
6. मित्रं धनं यच्छति ।
7. वयमन्नं खादामः ।
8. पुस्तके अत्र स्तः ।
9. नृपो नगरं रक्षति ।
10. अहं मित्राणि स्पृहयामि ।
11. बाला गृहं गच्छन्ति ।
12. रतिलालो मित्राणि पृच्छति ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. अंग स्फुरित होता है ।
2. यहाँ जल है ।
3. लकड़ी जलती है ।
4. दो फल गिरते हैं ।
5. कमल खिलते हैं ।
6. शरीर नष्ट होता है ।
7. साधु उद्यान में जाते हैं ।
8. मनुष्य धन की इच्छा करते हैं ।

9. देवदत्त पुस्तक लिखता है ।
10. हम धन का रक्षण करते हैं ।
11. वह पेट को स्पर्श करता है ।
12. हम मित्रों का त्याग नहीं करते हैं ।

पाठ-22

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. श्रमणा वनङ्गच्छन्ति ।
2. जना अन्नं खादन्ति ।
3. नृपश्चौरांस्ताडयति ।
4. शिष्य आचार्यं वन्दते ।
5. ब्राह्मणाः पचन्ति ।
6. अत्र तानि पुस्तकानि न सन्ति ।
7. आचार्यः पूज्योऽस्ति ।
8. अहमिदानीं पुस्तकल्ँलिखामि ।
9. आवां जलम्पिबावः ।
10. चौरा धनं हरन्ति ।
11. अहन्तानि मित्राणि स्मरामि ।
12. तेऽस्मान्न गणयन्ति ।
13. रतिलाल आचार्यं पृच्छति ।
14. कुशलअनमहं स्पृहयामि ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. सफेद घोड़ा दौड़ता है ।
2. वह देव को पूजता है ।
3. मैं उनको नहीं चाहता हूँ ।
4. वह उसे कहता है ।
5. वह वन जलता है ।
6. वह मुझे कहता है ।
7. दो कमल यहाँ हैं ।
8. हिरण घूमते (चरते) हैं ।
9. कछुआ हटता (जाता) है ।
10. वह धर्म का आचरण करता है ।
11. बहुत पानी है ।
12. अभी हम सब तुम सबको त्याग करते हैं ।
13. राजा हमें त्याग करता है ।
14. हम दोनों यहाँ नहीं रहते हैं ।
15. आप उन दोनों को चाहते हो, हम दोनों को नहीं ।
16. मैं दो फलों को देखता हूँ ।
17. भैंसा काला होता है ।
18. वह यहाँ खड़ा नहीं रहता है ।
19. वह वहाँ नहीं जाता है ।
20. मैं धर्म को नहीं छोड़ता हूँ ।
21. मैं उन दो घरों को देखता हूँ ।

पाठ-23

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. जना अलङ्कारैः शरीरं भूषयन्ति ।
2. धर्मेण धनं वर्धते ।
3. रथश्चक्राभ्याश्चलति ।
4. जीवा जलेन जीवन्ति ।
5. अहं युवाभ्यां सह तरामि ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. मनुष्य दुःख से मोहित होते हैं ।
2. बूढ़ा (आदमी) लकड़ी से चलता है ।
3. रतिलाल दोस्त के साथ रहता है ।
4. मैं उन दोनों के साथ नगर में जाता हूँ ।
5. बालक लड्डू से खुश होते हैं ।
6. हम दोनों के साथ, तुम सब वीर को पूजते हो ।
7. वह तुम्हारे साथ पढ़ता है, मेरे साथ नहीं पढ़ता ।
8. श्रीचन्द्र तुम्हारे साथ खाना खाता है ।

पाठ-24

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. आवां छात्राभ्यां पुस्तके यच्छावः ।
2. अहम्पुत्राभ्यां सह तुभ्यं बहुशो नमामि ।
3. धर्मः सुखाय भवति न दुःखाय ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. राजा ब्राह्मणों को सुवर्ण देते हैं ।
2. वह उन दोनों शिष्यों को धर्म कहता है ।
3. हम बच्चों को लड्डू देते हैं ।
4. धन दान देने के लिए है, मद करने के लिए नहीं है ।
5. साधुओं का कल्याण हो ।
6. तुम्हे नमस्कार हो ।

पाठ-25

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. श्री महावीरोऽङ्गेभ्योऽलङ्कारांस्त्यजति ।
2. इदानीं स गृहात् क्व गच्छति ?
3. धनं विना जना मुह्यन्ति ।
4. स युष्मद् धनमिच्छति ।
5. नृपश्चौरेभ्योऽस्मान्रक्षति ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. बच्चा महल से गिरता है ।
2. **धर्म के बिना सुख नहीं है ।**
3. झाड़ से पत्ते गिरते हैं ।
4. **चोर तुम्हारे पास से धन लेते हैं ।**
5. संघ एक नगर से दूसरे नगर में जाता है ।
6. **वह बंदर उस उद्यान से भागता है ।**
7. हम दोनों से पाप नष्ट होते हैं ।
8. **पुण्य के बिना सुख नहीं होता है ।**

पाठ-26

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. **युष्माकमुद्यानस्य तयोः वृक्षयोर्वानराः फलानि खादन्ति ।**
2. अहं मम नयनाभ्यां पश्यामि, तस्य नयनाभ्यां न पश्यामि ।
3. **तेषां पर्वतानां शिखरेषु तृणं दहति ।**
4. तस्मिन् गृहेऽस्माकअनकस्य धनमस्ति ।
5. **युष्माकं ग्रामेषु प्रभूतमन्नमस्ति ।**
6. तस्मिन् मार्गे सर्पो गच्छति ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. मनुष्य धर्म का फल चाहते है, परंतु धर्म को नहीं चाहते है ।
2. **हाथ का भूषण दान है, कंकण नहीं ।**
3. देह का भूषण शील है, अलंकार नहीं ।
4. **श्रमण मेरे घर में रहते हैं ।**
5. तुम्हारे में ज्ञान बढ़ता है, मेरे में नहीं बढ़ता है ।
6. **हमारे में पाप नहीं हैं ।**
7. वन-वन में चंदन नहीं होता है ।

पाठ-27

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. युद्धे योधा युध्यन्ते बाणाँश्च मुञ्चन्ते ।
2. **हे नृप ! देवालयान्विना तव ग्रामा न शोभन्ते ।**

3. अहं पुष्पैः श्रीमहावीरं पूजयामि ।

4. हे विनोद ! तवोद्याने पुष्पाणि सन्ति न वा ?

5. किङ्करा भारं वहन्तेऽन्नं च लभन्ते ।

6. रमेश ! त्वञ्च रतिलालश्च क्व गच्छथः ?

7. प्रातः विहगा आकाशे डयन्ते ।

8. रतिलालो वा शान्तिलालो वा वदति ।

9. नृपो याचकेभ्योऽन्नं यच्छति ।

10. कासारे कमलानि सन्ति ।

11. याचका धनं याचन्ते ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. **हे विनोद ! तुम ही संस्कृत अच्छे-से बोलते हो ।**
2. भोगीलाल ! हम उद्यान में देर तक खेलते हैं ।
3. **रमेश ! तुम और दिनेश सच नहीं बोलते हो ।**
4. मैं और रमेश गाँव में जाते हैं ।
5. **रे मानवो ! आप धर्म का सेवन क्यों नहीं करते हो ।**
6. यहाँ पर्वत के शिखर पर जल कहाँ से ?
7. **अरे दोस्त ! तुम मेरे घर से तुम्हारा धन लेकर क्यों नहीं जाते हो ?**
8. लालचन्द्र ! मोहनलाल और कान्तिलाल कहाँ रहते हैं ?
9. **अरे नौकरो ! तुम वृक्षों का सिंचन कब करते हो ? सिंचन करते हो या नहीं ? इस तरह राजा पूछता हैं ।**
10. जैसे चन्द्र बिना गगन शोभा नहीं देता, वैसे कमल बिना तालाब शोभा नहीं देता है ।
11. **ब्राह्मण लड्डू खाते हैं ।**
12. आकाश में चन्द्र शोभा देता है ।

पाठ-28

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. **वीरस्य भूषणं क्षमा धर्मस्य च भूषणं दया ।**
2. मम कन्ये क्रीडासु च कलासु च प्रवीणे स्तः ।
3. **सीता पुष्पाणां शोभना मालाः सृजति ।**

4. अत्र गङ्गया सह यमुना मिलति ।
5. **मालाभ्यामहं देवौ पूजयामि ।**
6. रामोऽयोध्याया नृपोऽस्ति ।
7. **सर्पस्य जिह्वे स्तः ।**
8. तस्यां पाठशालायां प्रभूता: कन्या: पठन्ति ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. तुम्हारी दो कन्याएँ अयोध्या का मार्ग पूछती हैं ।
2. **यमुना का पानी काला और गंगा का सफेद है ।**
3. पूज्य आचार्यों को वे बालिकाएँ नमस्कार करती हैं ।
4. **मथुरा में दो अच्छी पाठशालाएँ हैं ।**
5. उन दो पाठशालाओं में विद्यार्थी पढ़ते हैं ।
6. **जैसे लता से (बेल से) वृक्ष शोभते है, वैसे क्षमा से साधु शोभते हैं ।**
7. वे बालिकाएँ माला के लिए पुष्प ले जाती हैं ।
8. **गंगा में सरला, मंजुला और सीता खेलती है ।**
9. हे सीता ! तुम्हारी दो कन्याएँ देव को पूजती है ।
10. **हे स्त्रियो ! तुम घर का रक्षण क्यों नहीं करती हो ?**
11. चिंता शरीर को जलाती है और क्षमा पोषण करती है ।
12. **वह बालिका यमुना की ओर जाती है ।**
13. वीर का आभूषण क्षमा है ।

पाठ-29

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. याचका धनिकं प्रार्थयन्ते ।
2. **मोहनलालोऽध्ययनात् पराजयते ।**
3. चिमनलालो गोधूमेभ्य: प्रति तण्डुलान् प्रयच्छति ।
4. **रतिलाल: पापाद्विरमति ।**
5. अद्य नृप: प्रतिष्ठते ।
6. **शिष्या आचार्यमनुरुध्यन्ते ।**
7. कारणं विना कार्यं न भवति ।
8. **देवो विजयते ।**

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. **उद्यम से ही कार्य सिद्ध होते हैं, मनोरथ द्वारा नहीं, सचमुच सोये हुए सिंह के मुँह में हिरण प्रवेश नहीं करते हैं ।**
2. लोभ से क्रोध उत्पन्न होता है, लोभ से काम उत्पन्न होता है, लोभ से मोह और नाश होता है, लोभ पाप का कारण है ।
3. **आचार्य सौराष्ट्र में विहार करते हैं ।**
4. धर्म से सुख है और पाप से दु:ख है ।
5. **देवदत्त दु:ख का अनुभव करता है ।**
6. भोगीलाल गाँव से आता है ।
7. **सज्जन पाप का त्याग करते हैं ।**
8. विद्या विनय से शोभती है ।

पाठ-30

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. श्रावकैः श्रद्धया पुष्पैः श्रीमहावीरः पूज्यते ।
2. ब्राह्मणैर्मोदकाः खाद्यन्ते ।
3. नृपस्य पुरुषैश्चौरास्ताड्यन्ते ।
4. युष्माभिरहं कथ्ये ।
5. मया पुस्तकं लिख्यते ।
6. **रसिकेन पापाद्विरम्यते ।**
7. **मया यूयम् पूज्यध्वे ।**
8. **शिष्यैराचार्या वन्द्यन्ते ।**
9. **सूदेन तण्डुलाः पच्यन्ते ।**
10. **युष्माभिः पापे न पत्यते ।**
11. **अस्माभिर्युवां दृश्येथे ।**
12. रतिलालो गृहाद्वनं गच्छति ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. **युद्ध में वीरपुरुषों के द्वारा लड़ा जाता है और बाण छोड़े जाते हैं ।**
2. सरला के द्वारा पुष्पों की माला सर्जन की जाती है ।
3. **रात्रि में चन्द्र के द्वारा प्रकाशित हुआ जाता है ।**
4. आचार्य के द्वारा धर्म का उपदेश दिया जाता है ।
5. **तृष्णा के द्वारा मानव हराया जाता है ।**
6. देवदत्त के द्वारा सुख का अनुभव किया जाता है ।
7. **न प्राप्त हो सके ऐसी कोई वस्तु, किसी भी जगह से प्राप्त नहीं की जा सकती ।**
8. राजा के द्वारा हम आदेश किये जाते है ।

9. मेरे द्वारा आज गाँव जाया जाता है ।

10. मित्रों के द्वारा आपका त्याग किया जाता है ।

पाठ-31

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. ह्यः छात्राः पाठशालायां नाऽऽगच्छन् ।
2. **भोजः पण्डितेभ्यः प्रभूतं धनमयच्छत् ।**
3. धनपालो धारायामवसत् ।
4. **तस्य सभायां प्रभूताः पण्डिता आसन् ।**
5. अहमज्ञानाद् धनस्य लोभेऽपतम् ।
6. **तेषु दिवसेष्वहं सुखमन्वभवम् ।**
7. स नृपो धनेन समार्ध्यत् ।
8. **पुराऽत्र नगरमासीत् ।**
9. रामस्य पुत्रावास्ताम् ।
10. **देवदत्त ! त्वं ग्राममगच्छः ?**

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. आचार्य ने शिष्यों को धर्म कहा ।
2. **सिद्धराज ने सौराष्ट्र को जीता ।**
3. यहाँ पहले विद्यार्थी रहते थे ।
4. **कारागृह में से चोर भाग गये ।**
5. कल यहाँ मैंने बाघ देखा था ।
6. **हम अयोध्या में लंबे समय तक रहे थे ।**
7. युधिष्ठिर ने नगर में प्रवेश किया ।
8. **राजाओं ने ब्राह्मणों को बहुत धन दिया ।**
9. बहुत ब्राह्मण थे ।
10. **रतिलाल मेरे साथ शत्रुंजय पर चढ़ा था ।**
11. हे अनिलकुमार ! रात को चोरों ने तुम्हारा धन चुरा लिया ।
12. **हे देवदत्त ! तुम कहाँ गये थे ? मैं अयोध्या गया था ।**
13. हे मंजुला ! सरला अयोध्या से आयी ?
14. **कुमारपाल राजा ने भी सिद्ध हेमचन्द्र व्याकरण का अभ्यास किया था ।**

15. तब मैं स्वर्ग के सुख का अनुभव करता था और वह नरक के दु:ख का अनुभव करता था ।

पाठ-32

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. आचार्येण धर्म उपादिश्यत ।
2. **तेनाऽहंनाऽदृश्ये ।**
3. ह्य आकाशे चन्द्रो न प्राकाशत ।
4. **फलानां भारेण वृक्षैरनम्यत ।**
5. मया शत्रुञ्जयस्य मन्दिराण्यदृश्यन्त ।
6. **प्रातराकाशे विहगा डयन्ते ।**
7. भिक्षुका नृपमन्नमयाचन्त ।
8. **देवदत्तेन व्यापारेण धनमलभ्यत ।**
9. तेन गङ्गाया जलमानीयत् ।
10. **रामेण जनकस्याज्ञाऽनन्वरुध्यत ।**
11. कृषिवला बलीवर्दान् गृहं नयन्ति ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. **श्री हेमचन्द्राचार्य के द्वारा सिद्ध हेमचन्द्र व्याकरण की रचना की गई ।**
2. दुर्योधन ने जुए के द्वारा पांडवों का राज्य हासिल किया ।
3. **वनमाला के द्वारा जंगल में बंदर देखे गए ।**
4. जिनेश्वर देव के द्वारा पानी में असंख्य जीव देखे गए ।
5. **आम के ऊपर (को देखकर) मोर खुश हुआ ।**
6. उस मार्ग के द्वारा चोर गये ।
7. **बालकों ने लड्डू खाये ।**
8. नारी ने लज्जा को छोड़ा नहीं ।
9. **बालिकाओं ने साध्वी चंदना को नमस्कार किया ।**
10. देवदत्त जल्दी आया ।
11. **बैल के द्वारा घास से संतोष हुआ गया ।**
12. बाण के द्वारा लक्ष्मण गिरा ।
13. **बालक कुए में गिर गया ।**
14. सीता ने शील का रक्षण किया ।

पाठ-33

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. **दुर्योधनेन द्यूतेन पाण्डवा जिता आसन् ।**
2. पाण्डवा हस्तिनापुरं परित्यज्य वनं गताः ।
3. **अद्य निशायामत्र सिंह आगतोऽस्ति ।**
4. तेन दुग्धमानीयास्मभ्यम् प्रदत्तम् ।
5. **स जलं पीत्वा रन्तुङ्गतोऽस्ति ।**
6. भारं गृहं नीत्वा तेन विश्रान्तम् ।
7. **स देवो भूत्वा स्वर्गे जातः ।**
8. मयाद्य तत्र न गतम् ।
9. **वने स्थितां सीतां रावणो लङ्कामनयत् ।**
10. कृषिवलाः क्षेत्रेषु बीजं वप्तुं गताः ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. **राम के साथ सीता वन में गई थी ।**
2. बैल, हाथी और घोड़े पानी पीने के लिए तालाब पर गये ।
3. **मुसाफिर देवालय में रहने की प्रार्थना करते हैं ।**
4. धनपाल धारा (नगरी) को छोड़कर साँचोर में रहा ।
5. **वह चोर देवालय में घुसा है ।**
6. राम ने रावण को जीतकर अयोध्या की ओर प्रयाण किया ।
7. **दुर्योधन पर क्रोध करके भीमसेन कंपित हुआ ।**
8. ब्राह्मणों को सोना मोहर देने के लिए राजा के द्वारा भंडारी को आदेश किया गया ।
9. **धन चोरी करके उस चोर के द्वारा वन में रहा गया ।**
10. विद्या प्रवास में मित्र (समान) है, पत्नी घर में मित्र है ।
    दवाई बीमार की मित्र है, धर्म मरे हुए का मित्र है ॥

पाठ-34

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. आतपेन क्लान्ता जना वृक्षस्य छायायामाश्रयन्त ।
2. **लज्जा योषिताम् भूषणमस्ति ।**

3. धर्मो जगतः शरणमस्ति ।

4. बालेभ्यो मोदका रोचन्ते ।

5. बालो मोदकाय स्पृहयति ।

6. युधि योद्धा युध्यन्ते ।

7. नृपः प्रधानेभ्यः कुप्यति ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. धर्म आपत्ति में शरण है ।

2. गगन में बिजली चमकती है ।

3. हवा से समुद्र में खलबलाहट होती है (क्षुब्ध होता है) ।

4. वीर पुरुषों के लिए युद्ध सचमुच हर्ष का कारण है ।

5. कुंभकार के द्वारा मिट्टी के बर्तन बनाए गए ।

6. कारण के जैसा कार्य जगत् में दिखता है ।

7. बादल शरद् ऋतु में गर्जना करता है (परंतु) बरसता नहीं है । वर्षाऋतु में गर्जना रहित बरसता है ।

8. उदार को धन तृण समान है, शूरवीर को मरण तृण समान है, वैरागी को पत्नी तृण समान है और स्पृहारहित को जगत् तृण समान है ।

पाठ-35

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. एष मम जनक आगच्छति ।

2. तानि दुःखानि न स्मराम्यहम् ।

3. असौ शोभनः प्रासादो नृपस्यास्ति ।

4. रतिलाल ! इदं पुस्तकं कस्यास्ति ?

5. कुमुदचन्द्र ! एतत्पुस्तकम्ममास्ति ।

6. अमूनि दृश्यन्ते तानि गृहाण्यस्माकं सन्ति ।

7. अत्रैते द्वे पुस्तके स्तः ते आवयोर्द्वयोः स्तः ।

8. मह्यं धर्मो रोचते तुभ्यञ्च धनं रोचते ।

9. एतौ द्वौ जनौ कस्माद् ग्रामादागतौ स्तः ?

10. एतेषु ग्रामेषु पुरा प्रभूता जैना अवसन् ।

11. मयैकेन इमे सर्वे ग्रामा रक्ष्यन्ते ।

12. येषां स्वभाव उदारोऽस्ति ते सर्वेभ्यो रोचन्ते ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. कौन क्या बोलता है ?
2. **किसका मैं और किसका भाई ?**
3. जिसके पास धन है वह मनुष्य कुलवान है ।
4. **सभी गुण सुवर्ण के अधीन हैं ।**
5. कर्तव्य से भ्रष्ट हुए को सभी व्यर्थ है ।
6. **राजा किसी के अपने नहीं होते हैं ।**
7. धर्म सभी का भूषण है ।
8. **जो संकट में खड़ा रहता है, वह भाई होता है ।**
9. मैं अकेला हूँ, मेरा कोई नहीं है ।
10. **ये दो भोगीलाल के पुत्र हैं । इन दोनों का ज्ञान अच्छा है ।**
11. यह वन रमणीय है, ये आम हैं, आम के पके हुए फल मुझे अच्छा लगते हैं ।
12. **यह वटवृक्ष है, यह नीम है, वृक्षों से गिरे हुए ये फूल हैं ।**
13. यह तालाब है, तालाब में ये कमल दिखाई देते हैं । ये हिरण दौड़ते हैं ।
14. **यह कौन आदमी आ रहा है ?**
15. सभी को मान होता है और आत्महित में प्रमाद करते हैं ।
16. **वह सचमुच दरिद्री है जिसकी तृष्णा अपार है ।**
17. जो जिसे प्रिय है, वह उसके हृदय में बसता है ।
18. **मैं संपूर्ण जगत् को देखता हूँ, मुझे कोई नहीं देखता है ।**
19. उपाय से जो संभव है, वह पराक्रम से संभव नहीं है ।
20. **जिस पुरुष को श्वसुर का शरण है, वह अधम पुरुष है ।**

पाठ-36

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. **याः कन्याः पठन्ति ताभ्योऽहं पारितोषिकं यच्छामि ।**
2. एष रतिलालः सर्वासु कलासु प्रवीणोऽस्ति ।
3. **एते द्वे बाले, के द्वे पुष्पमाले असृजताम् ।**
4. इयं सरला स्वे द्वे पुस्तके नयति ।
5. **अमूः कुम्भकारस्याङ्गना मृदो घटान् सृजन्ति ।**
6. यस्यां मथुरायां कृष्णोऽजायत तां परित्यज्य अस्यां द्वारिकायां सोऽवसत् ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. सभी स्त्री को शील श्रेष्ठ भूषण है ।
2. **राजा ने किन कन्याओं को मनोहर ये रत्नमालाएँ दीं ? इस मेरी कन्या को !**
3. इस अयोध्या में मैं लंबे समय तक रहा ।
4. **तुमने इस पाठशाला में किन-किन बालिकाओं की परीक्षा ली ?**
5. इन दो कन्याओं के द्वारा इन दो कलाओं में बहुत प्रयत्न किया गया ।
6. **एक यह पुष्पमाला और एक यह, ऐसी दो पुष्पमालाएँ मेरे गले में हैं ।**
7. विनय से देव को नमस्कार करके सभी साध्वियों द्वारा प्रवेश किया गया ।
8. **जो यह वहाँ गिरा हुआ वस्त्र दिखाई देता है, वह किसी बालिका का है, अतः वह जिसका है, उसको देने के लिए हमारे द्वारा प्रयत्न किया जाता है ।**
9. इस मिथिला में जिन राम और लक्ष्मण से जिस कन्या की शादी हुई थी उन दोनों में से एक का नाम सीता और एक का नाम उर्मिला था। उन दो कन्याओं के साथ राम और लक्ष्मण के द्वारा जिस अयोध्या में प्रवेश किया गया, वह यह है ।
10. **यह रत्नमाला मेरी है और यह तुम्हारी है ।**
11. ये दो कन्याएँ यमुना की ओर जाती हैं ।
12. **जिसका मै निरंतर चिंतन करता हूँ, वह मेरे विषय में राग रहित है । उस (स्त्री) को धिक्कार हो, उस (पुरुष) को धिक्कार हो, उस काम को धिक्कार हो, उस स्त्री को और मुझे धिक्कार हो ।**
13. यह कोई स्त्री वन में भटकती है ।
14. **यह बालिका मेरे द्वारा पहले देखी गई ।**
15. बिल्ली, भैंसा, गैंडा, कौआ और खराब पुरुष विश्वास से प्रभावित होते हैं (सिरपर चढ़ते हैं) इसलिए उनमें विश्वास करना योग्य नहीं ।

पाठ-37

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. अयं सुरभिर्वायुः कुत आगच्छति ?
2. **अमुष्मिन् कारागृहे त्रयश्चौराः सन्ति ।**

3. एभिस्त्रिभिर्योधैर्नृपेण नगरमरक्ष्यत ।

4. उद्यानस्य शीतोऽयं वायुरस्माकं चित्तं हरति ।

5. जैना जिनेश्वरं वैष्णवाश्च विष्णुं भजन्ति ।

6. अमुना वायुना तरुभ्यः सर्वाणि पुष्पाण्यक्षरन् ।

7. मनुष्येषु मानः पशुषु च मायास्ति ।

8. नृपतयोऽपि गुरूणां वचनान्यनुरुध्यन्ते ।

9. गुरवो नृपतिभ्यो धर्ममुपदिशन्ति ।

10. एभ्यः शिशुभ्यः कोऽपि किमपि न यच्छति ।

11. अमुनि फलानि एते वानरा अस्वादन् ।

12. मम पाणावेकोऽसिरस्ति ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. उन शांतिनाथ भगवान को बारबार नमस्कार हो ।

2. लोभ किसकी मौत के लिए नहीं होता है ?

3. पर्वत पर बादल बरस रहे है ।

4. सूर्य के उदय से मनुष्य खुश होते हैं ।

5. मुनि एक जगह स्थिर नहीं रहते हैं ।

6. न्याय से राजा शोभता है ।

7. यह हवा पुष्प की सुवास को हर लेती है ।

8. यह बालक खेलता है, इसलिए मुझे अच्छा लगता है ।

9. भोजराजा कवियों को धन देता था ।

10. इस बालक को पढ़ाई अच्छी नहीं लगती है ।

11. ये बहुत से लोग इस गांव से आए हैं ।

12. उनके पास से उस बात को मैं जानता हूँ ।

13. इन तीनों आचार्यों के चरणों में मैं नमा हुआ हूँ ।

14. चन्दन की महक अच्छी होती है ।

15. कंकु का स्पर्श कोमल होता है ।

16. हर पर्वत पर माणिक्य नहीं होता है, हर हाथी में मोती नहीं होता । सब जगह साधु नहीं होते और हर वन में चंदन नहीं होता ।

17. वृक्षों को हवा से भय है कमलों को शिशिर (ठंडी) ऋतु से भय है, पर्वतों को वज्र से भय है, साधुओं को दुर्जन से भय है ।

18. कोई किसी का मित्र नहीं, कोई किसी का शत्रु नहीं । वास्तव में कारण से ही मित्र तथा शत्रु होते हैं ।

पाठ-38

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. जना वस्विच्छन्ति ।
2. **भ्रमराः कमलेभ्यो मधु पिबन्ति ।**
3. अहं जिह्वया तालुं स्पृशामि ।
4. **अमुष्य कासारस्य वारि शुच्यस्ति ।**
5. अस्माद् घटाद्वारि क्षरति ।
6. **वारिणा अहम् मम हस्तौ च पादौ चाक्षाल्यन्त ।**
7. अस्योद्यानस्यैषु त्रिषु तरुषु बहूनि फलानि दृश्यन्ते ।
8. **भानोरातपेन तडागस्येदं वारि शुष्यति ।**
9. अमुष्मिन् ग्रामे मम त्रीणि मित्राण्यासन् ।
10. **अस्मिन् कासारे बहूनि कमलानि सन्ति ।**
11. अस्य बालस्य द्वाभ्यां नयनाभ्यामश्रूणि वहन्ति ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. मधु से भौंरा मदोन्मत बनता है ।
2. **पानी का स्पर्श ठंडा होता है ।**
3. बादल पानी बरसाता है ।
4. **कृष्ण लक्ष्मी को देखता है ।**
5. शहद में मधुरता है ।
6. **पानी से जीव जीते हैं ।**
7. पवित्र कुल का कल्याण हो ।
8. **ज्ञान से हीन (व्यक्ति) पशु समान है ।**
9. इस नगर में पहले मैं रहता था ।
10. **इन कवियों के द्वारा अच्छे काव्यों की रचना का जाती है ।**
11. जिह्वा के अग्र भाग पर शहद है, लेकिन दिल में जहर है ।
12. **जगत् में तीन तत्त्व हैं, देव, गुरु और धर्म ।**
13. शाम को चन्द्र दीपक है, सुबह में सूर्य दीपक है, तीन लोक में धर्म दीपक है, कुल में सुपुत्र दीपक है ।

14. शरीर अनित्य है, वैभव शाश्वत नहीं है, मृत्यु सदा पास में रहती है, इसलिए धर्म का संग्रह करने योग्य है ।

पाठ-39

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. कवीनां काव्यानि तेषां कीर्तये भवन्ति ।
2. **मुनिर्ज्ञानेन क्रियया च मुक्तिं लभते ।**
3. मुनयो रात्रौ श्रीमहावीरं ध्यायन्ति ।
4. **धर्मो जनं दुर्गते रक्षति ।**
5. सरला ऋषभदेवव्ँवन्दते ।
6. **अस्या नद्याः वारि बहु स्वादु अस्ति ।**
7. वध्वः श्वश्रूर्विनयेन नमन्ति ।
8. **सुप्तां दमयन्तीं परित्यज्य नलोऽन्यत्रागच्छत् ।**
9. बहुभिर्देवैर्देवीभिश्च सहेन्द्रा मेरुमागच्छन् ।
10. **हे दासि ! महिषी महालयेऽस्ति वा नास्ति ?**
11. अमुष्या नद्या इदं प्रवहणं समुद्रे गच्छति ।
12. **जलनिधिर्बह्वीनां नदीनां जलस्य निधिरस्ति ।**
13. अमुष्यां धारायां पुरा बहवः कवयोऽभवन् ।
14. **एताः पुष्पमाला महिष्यै नयामि ।**
15. साधूनां कीर्तिस्त्रिष्वपि लोकेषु प्रसरति ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. ग्वाला गायों को लेकर गाँव में जाता है ।
2. **बहुएँ बावड़ी में से पानी ग्रहण करके ले जा रही हैं ।**
3. इन औषधियों की बेल को तुम क्यों देख रहे हो ?
4. **कृपण की ऋद्धि के द्वारा दूसरे सुख का अनुभव करते हैं ।**
5. राम ने अपनी बहन शान्ता को बहुत सा धन दिया ।
6. **इन रास्तों से राजा का रथ गया ।**
7. इस साध्वी चंदना आर्या को बारबार नमस्कार हो ।
8. **जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है, वहाँ देवता क्रीड़ा करते हैं ।**
9. इस तरह बाण से मैंने शत्रु को जीता ।
10. **अयोध्या नगरी सरयू नदी के किनारे पर है ।**

11. **``तुम हम''** और **``हम तुम''** इस तरह हमारी दोनों की बुद्धि थी। अब क्या हुआ ? कि जिससे **``तुम, तुम''** और **``हम, हम''** (हुए)।

12. समुद्र में वृष्टि व्यर्थ है, पेट भरे हुए को भोजन व्यर्थ है, समर्थ को दान व्यर्थ है और दिन में दीपक व्यर्थ है।

13. खराब मनुष्य की विद्या वाद के लिए, धन मद के लिए और शक्ति दु:ख देने के लिए होती है, अच्छे मनुष्य की विद्या ज्ञान के लिए, धन दान के लिए और शक्ति दूसरों की रक्षा के लिए होती है। अच्छे मनुष्य और खराब मनुष्य के गुण विपरीत होते हैं।

पाठ-40

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. मेघे वर्षति मयूरा नृत्यन्ति।

2. दीपे सति कोऽग्निमपेक्षते ?

3. महालये प्रविशतीर्महिषी: पश्यन्नृपस्तिष्ठति।

4. काले गच्छति तस्य शोकोऽशाम्यत्।

5. दिनेषु गच्छत्सु रतिलाल: पण्डितोऽभवत्।

6. लताया: मूले नष्टे पर्णानि शुष्यन्ति।

7. गुरोस्तिष्ठत: शिष्य उपविशति।

8. जीवन् नरो भद्रम् पश्यति।

9. सतां सद्भिस्संग: पुण्येनैव भवति।

10. ग्रामं गच्छन्तीं जननीम्पश्यन्ती बाला रटति।

11. युष्माकं गृहमागच्छतो ममानन्दो भवति।

12. वने चरन्तीभिर्धेनुभि: कासारे जलं पिबन्त्या व्याघ्रो अदृश्यत।

13. अमुष्मिन्मार्गे चलतां लोकानां धनश्चौरा न चोरयन्ति।

14. धावतोऽश्वात् सोऽपतत्।

15. चौरैश्चौर्यमाणान्याभूषणान्यस्माभिरलभ्यन्त।

16. लोकान्पीडयतो जनान् नृपो दण्डयति ताडयति च।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. नगर मे प्रवेश करते हुए दो मित्र तुम्हारे हर्ष के लिए क्यों नहीं हुए ?

2. राम ने सती सीता को वन में छोड़ दिया।

3. उपाय होने पर सभी के चित्त का रंजन करना चाहिए।

4. **पताका से शोभित जिनमंदिर में गाती और खेलती हुई बालिकाएँ पिता के द्वारा देखी गयी ।**
5. देवों के द्वारा अनुभव किये जाते हुए सुख की राजा हमेशा स्पृहा करता है ।
6. **इस तालाब में बहुत से कमल पैदा होते हैं ।**
7. आपके नाथ होने पर प्रजा का अशुभ कहाँ से हो ?
8. **जिसके जीने पर बहुत से जीते हैं, वह यहाँ जीता है ।**
9. पूज्यों के द्वारा पूजाता हुआ सचमुच किस-किस के द्वारा पूजा नहीं जाता ?
10. **सूर्य का उदय होने पर सचमुच कमल खिलते हैं, चन्द्र के उदय होने पर चन्द्रकान्त मणि झरता है ।**
11. सत्पुरुषों का कोप नीच मनुष्य के स्नेह के समान होता है, (जैसे) सत्पुरुषों को कोप नहीं होता और होता तो लंबे समय तक नहीं टिकता, अगर लंबे समय तक होता है तो फल के विपरीत होता है ।
12. **दूर रहने पर भी सत्पुरुषों के गुण सर्वत्र पूजे जाते हैं, केतकी की गंध सूंघने के लिए भौंरे खुद जाते हैं ।**
13. अग्नि के द्वारा जलते हुए एक सूखे वृक्ष से सारा जंगल जलता है, उसी तरह खराब पुत्र से पूरा कुल जलता है ।

पाठ-41

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. **जनास्सत्यं वदेयुः ।**
2. नृपतिः प्रजां रक्षेत् ।
3. **शिष्यैर्गुरुर्वन्द्येत ।**
4. हे छात्रा ! युष्माभिः प्रातः पठ्येत ।
5. **यदि युष्माभिस्सुखं त्यज्येत तर्हि विद्या लभ्येत ।**
6. यदि नृपेण प्रजा पाल्येत तर्हि प्रजया नृपस्याज्ञानुरुध्येत ।
7. **यदि जना धर्ममाचरेयुस्तर्हि सुखं लभेरन् ।**
8. वयमत्रोद्यान उपविशेम ?
9. **अरे ! किमहं नृपं सेवेयोतेश्वरं भजेय ?**
10. भो जनाः ! शीलं पाल्येत लोभश्च त्यज्येत ।
11. **अत्र वृक्षस्य छायायामुपविश्य वयं विश्राम्येम ।**
12. अद्य रात्रौ मेघो वर्षेदपि ।

13. यद्यहं सत्यं वदेयं तर्हि नृपेण कारागृहाद् मुच्येय ।

14. अथाहमधर्मं नाचरेयमिति स नृपो धर्माचार्याय कथयत् ।

15. अथ युष्माभि र्धनस्य लोभस्त्यज्येत ।

16. नृपतयो ब्राह्मणेभ्यो धेनूर्यच्छन्ति ।

17. चन्द्र आकाशे प्रकाशेत ।

18. अपि रामो रावणेन सह युध्येत ।

19. अग्निना तप्तं सुवर्णं द्रवति ।

20. मृदो घटा भवन्ति सुवर्णस्य चालङ्कारा भवन्ति ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. असार में से सार लेना चाहिए ।

2. अति का सर्वत्र त्याग करना चाहिए ।

3. मैं पाप नहीं करूंगा ।

4. हे देवदत्त ! हम दोनों शत्रुंजय जायें ।

5. प्राणों के नाश में भी धर्म नहीं छोड़ना चाहिए ।

6. देवदत्त की पीड़ा (व्याधि) नष्ट हो, यदि वह पथ्य का सेवन करे तो ।

7. मानव सुख का अनुभव करेगा यदि वह अधर्म न करे तो ।

8. यहाँ मुनि के निवासस्थान पर हम जाएँ ।

9. शक्य है कि देवदत्त व्यापार के द्वारा बहुत सा धन कमाए ।

10. सचमुच, किया हुआ संग्रह लोक में अवसर आने पर लाभदायक होता है ।

11. सचमुच तीक्ष्ण हथियार होने पर हाथ से कौन प्रहार करेगा ?

12. सचमुच एक भी कला चित्त हर ले तो सभी कलाएँ चित्त का हरण क्यों न करें ?

13. भोजन के बिना जी सकते हैं, लेकिन पानी के बिना नहीं जी सकते ।

14. जिस पर राजा प्रसन्न है, उसका सेवक कौन नहीं होगा ?

15. पैसे के दु:ख में घबराना नहीं चाहिए और धर्म को छोड़ना नहीं चाहिए ।

16. कोई भी (चीज) स्वभाव से अच्छी होती है, या खराब होती है, (मगर) जो चीज जिसे अच्छी लगती हो, वह (चीज) उसके लिए अच्छी है ।

17. जिस देश में सन्मान नहीं, आजीविका नहीं, भाई नहीं, कोई भी विद्या की प्राप्ति नहीं, उसे उस देश को छोड़ देना चाहिए ।

18. समझदार मनुष्य को पीड़ा करनेवाले तीक्ष्ण शत्रु को, तीक्ष्ण शत्रु द्वारा उखाड़ देना चाहिए, जैसे सुख के लिए तीक्ष्ण काँटे से तीक्ष्ण काँटे को निकालते हैं ।

19. पंडित एक पाँव से चलता है और एक पाँव से खड़ा रहता है, दूसरी जगह देखे बिना पहला स्थान नहीं छोड़ना चाहिए ।

पाठ-42

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. देवदत्त ! त्वमतो गच्छ मा तिष्ठ ।
2. **जनाः ! सत्यं वदत, लोभं त्यजत ।**
3. क्षुधितायान्नं यच्छत, तृषिताय च जलं यच्छत ।
4. **यदि कीर्तिमिच्छथ तर्हि दीनानामापदं हरत ।**
5. छात्रैर्विद्या लभ्यताम् ।
6. **अहं देवालयं गच्छानि देवं च पूजयानि ।**
7. सर्वत्र जनाः शान्तिं लभन्ताम् ।
8. **अस्माभिः शत्रूणामप्यपराधाः क्षम्यन्ताम् ।**
9. युष्मानं धर्मस्य लाभो भवतु ।
10. **हे जनाः ! सत्यं मृगयध्वम् ।**
11. यूयं धर्ममाचरत, पापं नाचरत ।
12. **युष्माभिः छात्रेभ्यः पुस्तकान्यर्प्यन्ताम् ।**
13. अहं संसारकारागृहाद् मुच्यै ।
14. **अरे किङ्करा ! यूयं इमान् वृक्षान् जलेन सिञ्चत ।**
15. हे पुत्र ! त्वंसाधुर्भव प्रभूताश्च विद्यां लभस्व ।
16. **अरे ! त्वं नृपस्य समीपे गच्छ, गत्वा च नृपाय कथय यद् अस्मात्पञ्जराद्विहगान् मुञ्च ।**
17. धनस्य लोभादपि मयाऽसत्यं न कथ्यताम् ।
18. **एतान् मृदो घटान् गृहं नयध्वम् ।**
19. गोपो धेनूर्ग्रामं नयतु ।
20. **आगच्छत, वयमत्रोद्यान उपविशाम ।**
21. दिनेश ! अथ त्वं पठ, मा रमस्व !

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. **वर्धमान स्वामी को नमस्कार हो ।**
2. सभी जगत् का कल्याण हो ।
3. **हे विद्यार्थियो ! व्याकरण पढ़ो ।**
4. बालिकाएँ देव के आगे नाच करें ।
5. **रतिलाल ! तुम असत्य मत बोलो ।**
6. शत्रु विपरीत मुखवाले हों ।
7. **हे तृष्णा ! अभी तुम मुझे छोड़ दो ।**
8. तुम मेरे मित्र हो ।
9. **पाप शांत हो जाए ।**
10. वे जिनेन्द्र जय पाएँ ।
11. **हे मानवो ! विनय को मत छोड़ो ।**
12. हे देवदत्त ! आसन पर बैठो और पानी पीओ ।
13. **हे देवदत्त ! खूब जीयो और विद्या प्राप्त करो ।**
14. हे माता ! वापस हम शत्रुंजय जाएँ ।
15. **नौकरो ! वजन उठाओ और जल्दी चलो ।**
16. अरे ! क्या हम संस्कृत पढ़ें या अंग्रेजी ?
17. **तुम्हारे द्वारा देव पूजे जाएँ और उनकी आज्ञा मानी जाय ।**
18. गुण को पूछो, रूप को नहीं, शील और कुल को पूछो, धन को नहीं !
19. **समय पर बहुत पानी के द्वारा बादल बरसे ।**
20. हे युधिष्ठिर ! दरिद्र मनुष्यों का पोषण करो, समर्थ को धन मत दो । रोगी को दवाई हितकर है, नीरोग को दवाई से क्या ?

पाठ-43

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. उत्तमजना धर्म न परित्यजन्ति ।
2. **नदीतीरे वृक्षाः सन्ति ।**
3. गृहद्वारे स तिष्ठति ।
4. **देवगुरू पूज्यौ स्तः ।**
5. गजाश्वबलीवर्दा जलं पीत्वा गताः ।
6. **पण्डितानां सभामध्ये-ऽपण्डिता मौनं भजेयुः ।**
7. सुखदुःखे आगच्छतो गच्छतश्च ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. विनय में शिष्य की परीक्षा होती है ।
2. **भगवान का दर्शन निष्फल नहीं होते है ।**
3. परोपकार पुण्य के लिए होता है और दूसरों को दु:ख देना (वह) पाप के लिए होता है ।
4. **क्रोध अनर्थ (दु:ख) का मूल है, क्रोध संसार का बंधन है ।**
5. स्वप्न में भी साधु अपने देह का सुख नहीं चाहते हैं ।
6. **हंस सफेद, बगला सफेद, (तो) बगले और हंस में फर्क क्या ? पानी और दूध को अलग करने में सचमुच हंस हंस है और बगला बगला है ।**
7. विदेश में विद्या धन है, संकट में बुद्धि धन है, परलोक में धर्म धन है, और सब जगह शील धन है ।
8. **कौआ कौओं को बुलाता है, पर याचक याचक को नहीं बुलाता, कौआ और याचक में कौआ अच्छा, मगर याचक नहीं ।**
9. जिन दो का धन समान है और जिन दोनों का कुल समान है, उन दोनों की दोस्ती और शादी होती है, मगर उत्तम और अधम की मैत्री और शादी नहीं होती ।
10. **अभ्यास बिना विद्या विष है, अजीर्ण में भोजन विष है, दरिद्र को सभा विष है और वृद्ध पुरुष को युवती विष है ।**
11. चन्दन के वृक्ष का मूल सर्पों से, शिखर बंदरों से, शाखा पक्षियों से और फूल भ्रमरों से हमेशा आश्रित हुए होते हैं, सज्जन मनुष्यों की संपत्ति परोपकार के लिए होती है ।

समासविग्रह

1) बकहंसयो: (सप्तमी द्विवचन)– बकश्च हंसश्च बकहंसौ ।
(द्वन्द्व) तयो:–बकहंसयो: ।

2) क्षीरनीरविभागे (सप्तमी एकवचन)– क्षीरं च नीरं च क्षीरनीरे (द्वन्द्व)
क्षीरनीरयो: विभाग: क्षीरनीरविभाग: (षष्ठी तत्पुरुष)
तस्मिन् क्षीरनीरविभागे ।

3) परलोके (सप्तमी एकवचन)– परश्चासौ लोकश्च परलोक: (कर्मधारय)
तस्मिन् परलोके ।

4) अनभ्यासे (सप्तमी एकवचन)– न अभ्यास-अनभ्यास (नञ् तत्पुरुष)
तस्मिन् अनभ्यासे ।

5) चन्दनपादपस्य (षष्ठी एकवचन)–चन्दनस्य पदाप: चन्दनपादप:।
(षष्ठी तत्पुरुष) तस्य चन्दनपादपस्य ।

**6) परोपकाराय (चतुर्थी एकवचन)–परेषाम् उपकार: परोपकार: ।
(षष्ठी तत्पुरुष) तस्मै परोपकाराय ।**

पाठ-44

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. उपपर्वतं नदी वहति ।
2. **एषा नदी स्वादुजलाऽस्ति ।**
3. अभया इमे मार्गा: सन्ति ।
4. **प्रियदर्शन: सपुत्र: पत्तनमागतोऽस्ति ।**
5. वीतराग: श्रीमहावीरोऽस्माकं नाथोस्ति ।
6. **अनुरामं सीता गच्छति ।**
7. एष जनोऽज्ञानोऽस्ति ।
8. **नलदमयन्त्यौ वन आटताम् ।**
9. प्रभुमहावीरस्य ज्ञानमनन्तमासीत् ।
10. **मत्तगजमिदं वनमस्ति ।**
11. अभयेऽस्मिन् राज्ये जना: सुखेन वसन्ति ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. **पृथ्वी बहुत रत्नवाली है ।**
2. वैराग्य ही भयरहित है ।
3. **राम और रावण का युद्ध राम और रावण के जैसा है ।**
4. शोकरहित मैं शोकवाली तुम को देखने में समर्थ नहीं हूँ ।
5. **उदार स्वभाववालों को तो पृथ्वी ही कुटुंब है ।**
6. यह मुहूर्त बहुत विघ्नवाला है ।
7. **एक बार जिसका शील नष्ट हो गया ऐसी सती हमेशा असती है (फिर सती नहीं कहलाती) ।**
8. जो क्षण में रुष्ट, क्षण में तुष्ट और क्षणक्षण में रुष्ट-तुष्ट होते हैं, उनका चित्त व्यवस्थित नहीं । उनकी मेहरबानी भी बड़ी भयंकर होती है ।
9. **वृक्ष की शाखा (यह) तत्पुरुष है, सफेद घोड़ा (यह) कर्मधारय है । लाल वस्त्र है जिसका वह (यह) बहुव्रीहि है । चन्द्र और सूर्य (यह) द्वन्द्व है ।**

समासविग्रह

1) बहुरत्ना (प्र.ए.व.) बहुनि रत्नानि यस्यां सा बहुरत्ना । (बहुव्रीहि)

2) अशोकः (प्र.ए.व.) न विद्यते शोको यस्य सः अशोकः (नञ् बहुव्रीहि)

3) सशोका (प्र.ए.व.) शोकेन सह वर्तते सशोका (सहार्थ बहुव्रीहि)

4) अव्यवस्थितचित्तानाम् (ष.बहु.व.)
नव्यवस्थितं अव्यवस्थितम् । (नञ् तत्पुरुष)
अव्यवस्थितम् चित्तं येषां ते अव्यवस्थितचित्ताः (बहुव्रीहि)
तेषां अव्यवस्थित चित्तानाम् ।

5) उपपर्वतम् (स.ए.व. अव्यय) पर्वतस्य समीपे इति उपपर्वतम् (अव्ययी भाव)

पाठ-45

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. भवता राज्यभारो वहनीयोऽस्ति ।
2. **भवद्भिः सर्वैरेष ऋषिः पूजनीयोऽस्ति ।**
3. भवतो राज्ये सर्वत्र शान्तिर्भवतु ।
4. **अधुनैते ग्रन्था न लभ्याः ।**
5. यूयं क्व गतवन्तः ।
6. **रतिलालात्शान्तिलालः पटुः ।**
7. रामो रावणं जयेत् ।
8. **एतौ द्वौ शिष्यौ योग्यौ स्तः तौ सिद्धान्तम् पठेताम् ।**
9. वयं दास्यो भवत्या आज्ञां कथयितुमुपनृपं गतवत्य आसन् ।
10. **अमुष्य नृपस्य त्रिषु प्रधानेष्विमौ द्वौ प्रधानौ श्रेष्ठौस्तः ।**
11. कवीनां सिद्धसेनो मुख्याः सन्ति ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. धर्म से श्रेष्ठ मित्र (दूसरा) नहीं।
2. **आपका यह महल सचमुच रम्यदर्शनवाला है ।**
3. आपका कल्याण हो ।
4. **हे देवी ! आपका कल्याण हो ।**
5. आपके जाने पर, हमारे लिए मरण ही शरण है ।
6. **बालिकाएँ उद्यान में से फूलों को लेकर देवालय में गई ।**

7. गुणों से (सज्जन) प्रेम पात्र होता है, दुर्जन (गुण बिना का मनुष्य) रूप द्वारा प्रेम पात्र नहीं होता ।

8. नायक के बिना का स्थान रहने योग्य नहीं, (वैसे ही) बहुत नायकवाले स्थान में भी नहीं रहना ।

9. नहीं जन्मे हुए, मरे हुए और मूर्ख (पुत्र) में, पहले दो अच्छे परंतु अंतिम अच्छा नहीं ।

10. सचमुच कन्या अवश्य देने योग्य है ।

11. जिस कुल में जो मनुष्य मुख्य है वह हमेशा प्रयत्न से रक्षण करने योग्य है ।

12. जिसका उदय है, वे वन्द्य हैं, जैसे चन्द्र और सूर्य ।

13. सेव्य की सेवा का अवसर सचमुच पुण्य से ही मिलता है ।

14. पुष्पों में चंपा, नगरी में लंका, नदियों में गंगा और राजाओं में राम (मुख्य) हैं ।

15. विपत्ति का इलाज सचमुच प्रारंभ में ही सोचना चाहिए, अग्नि से घर जलता है, तब कुआ खोदना योग्य नहीं ।

16. विद्या से अलंकृत होने पर भी दुर्जन त्याग करने योग्य है, मणि से भूषित सर्प क्या भयंकर नहीं है ?

17. एक त्याग गुण अच्छा है, अन्य गुणों की राशियों से क्या ? मेघ और वृक्ष त्याग से जगत् में पूजनीय हैं ।

पाठ-46

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. अस्य नृपस्य सेना महती बलवत्तरा चास्ति ।

2. आसु बालासु इमे द्वे बाले पटिष्ठे स्तः ।

3. अनयो र्बालयोरयं बालः श्रेयानस्ति ।

4. भवान् माम् पुत्रवत् पश्यतु ।

5. सर्वेषु भवान् मम प्रियतमोऽस्ति ।

6. भवन्तमहं देववत्पश्यामि ।

7. ब्राह्मणेभ्यः क्षत्रियाः शूरतरा भवन्ति ।

8. बलवद्भ्यो बुद्धिमन्तो बलवत्तराः सन्ति ।

9. व्याकरणेषु आचार्यहेमचन्द्रस्य व्याकरणं श्रेष्ठतममस्ति ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. **सुख और दु:ख चक्र की तरह बदलते रहते हैं ।**
2. आप देखो, ये वेगवाले घोड़े दौड़ते हैं ।
3. **कुस्थान में प्रवेश से गुणवान भी दु:खी होता है ।**
4. सचमुच, शत्रु के दीन–क्षीण होने पर महान् पुरुषों का कोप शान्त होता है ।
5. **थोड़ा भी अमृत अच्छा है लेकिन विष का समूह भी अच्छा नहीं ।**
6. पराभव होने पर अभिमानी व्यक्ति को विदेश जाना अच्छा है ।
7. **महान् पुरुषों की प्रवृत्ति सचमुच दूसरों के उपकार के लिए होती है ।**
8. महान् पुरुषों के भी कल्याणकारी कार्य बहुत विघ्नवाले होते हैं ।
9. **कुरूपता शील से शोभा देती है और कुभोजन गर्म होने पर शोभा देता है ।**
10. अशुभ हो या शुभ हो, वास्तव में बड़े पुरुषों का सब बड़ा होता है ।
11. **सचमुच हारे हुए शत्रु पर भी महान् पुरुष कृपालु होते हैं ।**
12. दयालु संत पुरुष दूसरों के दु:ख को देखने में समर्थ नहीं होते हैं ।
13. **लोक में सभी जगह हमेशा सभी धनवान ही बलवान होते हैं ।**
14. यह बालक बुद्धिमान है और विनयवालों में श्रेष्ठ है ।
15. **बुद्धिशाली मनुष्यों को भी दरिद्रता दिखती है ।**
16. ये चरवाहे गायवाले हैं, इसलिए इनका शरीर ज्यादा बलवान है ।
17. **बड़ों को ही संपत्ति और बड़ों को ही आपत्तियाँ आती हैं ।**
18. मुझे जीवन की आशा बलवान है और धनकी आशा कमजोर है । हे मुसाफिर, तुम जाओं या रहों । (मैंने) खुद की अवस्था सचमुच कहकर बता दी है ।
19. **साँप क्रूर है और दुर्जन क्रूर है, परंतु साँप से दुर्जन ज्यादा क्रूर है । साँप मन्त्र से शान्त मगर दुर्जन को किसी भी तरह शान्त नहीं किया जा सकता है ।**
20. पुत्र, स्त्री और मित्रजन सभी धन से रहित (व्यक्ति) को छोड़ देते हैं, पैसेवाले होने पर फिर से उनका आश्रय करते हैं । लोक में सचमुच, पैसा ही पुरुष का बंधु है ।

पाठ-47

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. हे राजन् ! त्वं प्रजां पालय ।
2. **अस्याः कन्यायाः कबर्यां द्वे दाम्नी स्तः ।**
3. युष्माकं बन्धोर्नाम कथय ।
4. **अस्मिन् राज्ञि प्रभूतः पराक्रमोऽस्ति ।**
5. राजमहिष्यौ रथ उपविश्योद्यानं गतौ ।
6. **बालेनाकाशे शश्यदृश्यत ।**
7. गुणी गुणं पश्यति न दोषम् ।
8. **भाव्यन्यथा न भवति ।**
9. योगिनः शिखरिणां गुहासु वसन्ति ।
10. **हस्तिनो मूर्धनि मौक्तिकं जायते ।**

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. अहो ! इस राजा के विवेक की सीमा ।
2. **उनके घर में अनाज के ढेर की तरह रत्नों के ढेर हैं ।**
3. स्वयं को प्रतिकूल आचरण दूसरों के साथ न करें ।
4. **राजाओं में विद्या पूजित है, परंतु धन नहीं ।**
5. जन्म का दुःख, जरा का दुःख और मरण का दुःख बार-बार आता है ।
6. **कर्म की गति विचित्र है ।**
7. जैसा राजा वैसी प्रजा ।
8. **जो खुद को पसंद नहीं है, उस मधुर भोजन से भी क्या ?**
9. सचमुच पशु भी अपने प्राणों की तरह खुद के पुत्र को संभालते हैं ।
10. **लंबे समय बाद भी कर्म सभी को अवश्य फल देता है ।**
11. भविष्य का कार्य हुआ ।
12. **सेवाधर्म कठिन है, योगियों को भी अगम्य है ।**
13. सचमुच, स्त्रियाँ मायावी होती हैं ।
14. **जैसे नेत्र बिना मुख, स्तंभ बिना घर शोभा नहीं देता, उसी प्रकार मंत्री के बिना राज्य शोभा नहीं देता है ।**
15. धीर पुरुषों का भूषण विद्या है, मंत्रियों का भूषण राजा है, राजाओं का भूषण न्याय है, शील सब का भूषण है ।

पाठ-48

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. वणिक् स्वग्रामात् सर्पिर्पत्तनं नयति ।
2. **कवीनां वाक्षु माधुर्यमस्ति ।**
3. सर्पि र्भक्षणेनायुर्वर्धते ।
4. **क्षुधा समा वेदना नास्ति ।**
5. हरिणाः ककुभो लङ्घन्ते ।
6. **दुर्योधनः पाण्डवानां द्विडासीत् ।**
7. स्वर्गेऽप्सरोभिः सह देवाः क्रीडन्ति ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. **कुलवान की वाणी झूठी नहीं होती ।**
2. सर्पों के लिए दूध का पान जहर के लिए होता है ।
3. **दूसरों को पीड़ा देनेवाला सत्य वचन भी बोलना नहीं चाहिए ।**
4. दुष्टों का निग्रह और साधु का रक्षण करना राजाओं के लिए योग्य है ।
5. **लोक में चंदन शीतल है, चन्दन से भी चन्द्रमा शीतल है, इन दोनों से भी साधु की संगत ज्यादा शीतल मानी गयी है ।**
6. उस गाँव में यश जिसका धन है, ऐसा धन नाम का सार्थवाह था, जैसे सागर नदियों का वैसे वह संपत्तियों का एक स्थान था ।

पाठ-49

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. सीतात्मनो ननान्दुः शान्तायाः पादयोरपतत् ।
2. **योषितां जामाता वल्लभोऽस्ति ।**
3. अभिमन्योर्मातुर्नाम सुभद्राऽऽसीत् ।
4. **हे देवरेष हरिणः शोभनतमोऽस्ति ।**
5. एषां वैद्यानामौषधानि रोगस्यापहर्तॄणि सन्ति ।
6. **अस्य दातृ राज्ञो राज्ञ्योऽपि दात्र्य आसन् ।**
7. मम भर्तर्येकोऽपि दोषो नास्ति ।

8. **जना नावा समुद्रे तरन्ति ।**
9. इयं मम स्वसुः श्वश्रूरस्ति ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. सच्ची या झूठी मनुष्य की कीर्ति जयवाली होती है ।
2. **सास के दु:ख में बेटी को पिता का घर शरण है ।**
3. रे चित्त ! क्यों भाई ! पिशाच की तरह दौड़ता है ।
4. **स्वयं से प्रसिद्ध हुए उत्तम, पिता से प्रसिद्ध हुए मध्यम, मामा से प्रसिद्ध हुए अधम और श्वसुर से प्रसिद्ध हुए अधम में अधम गिने जाते हैं ।**
5. मित्र, स्वजन, पुत्र, भाई, माता-पिता भी, भाग्य प्रतिकूल होने पर स्वजन को छोड़ देते हैं ।
6. **लोभी मनुष्य दरिद्रपने की शंका से पैसे को नहीं देता है और सचमुच दाता उसी शंका से पैसे दे देता है ।**
7. धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का उत्तम कारण आरोग्य है, रोग उनका (आरोग्य) कल्याण और जीवन का हरण करनेवाला है ।
8. **ऋण करनेवाला पिता शत्रु है, मूर्ख पुत्र शत्रु है । (ऐसा) अप्रिय और हितकारी कहनेवाला और सुनने वाला दुर्लभ है ।**

पाठ-50

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. एतस्य देवालयस्य चत्वारि द्वाराणि सन्ति ।
2. **त्रिंशतो दिनानामेको मासो भवति ।**
3. पतनाच्चतुर्षु योजनेषु गतेषु महेशानमागच्छति ।
4. **एकस्मिन्वर्षे षड्ऋतव आगच्छन्ति ।**
5. भगवतो महावीरस्यैकादश गणभृत आसन् ।
6. **अस्माकं सेनायां तिस्त्रः कोट्यश्चत्वारि लक्षाणि विंशतिश्च सहस्त्राणि सैनिकाः सन्ति ।**
7. तस्य सेनायां पञ्चाशद् लक्षाणि षष्टिः सहस्त्राणि पञ्च शतानि नवतिश्च सैनिकाः सन्ति ।
8. **अद्य मया सप्तति विद्यार्थिनः परीक्षिताः ।**

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. राजा की पत्नी, गुरु की पत्नी, भाई की पत्नी, पत्नी की माता और खुद की माता ये पाँच माताएँ मानी हुई हैं ।
2. **कमल में लालिमा, सत्पुरुषों का परोपकारीपना, दुर्जनों का निर्दयपना इन तीनों में ये तीन स्वभाव-सिद्ध हैं ।**
3. दान, भोग और नाश ये तीनों धन की गतियाँ हैं ।
4. **सौ में एक शूरवीर होता है और हजारों में एक पंडित होता है, दश हजार में एक वक्ता होता है, परंतु दातार होता या नहीं भी होता है ।**
5. सचमुच, चींटी धीरे-धीरे हजार योजन जाती है, नहीं चलनेवाला गुरुड़ एक कदम भी नहीं जाता है ।

पाठ-51

हिन्दी का संस्कृत अनुवाद

1. इमे द्वे नगर्यावतिशोभने स्तः तत एनयोर्बहवो धनिका वसन्ति ।
2. **आगच्छ, गच्छ, उत्तिष्ठोपविश, वद, मौनं भज–इति धनिका याचकैः क्रीडन्ति ।**
3. एतयो र्द्वयो वृक्षयो र्य एते विहगा दृश्यन्ते तेऽस्मिन् पञ्जर आसन् वयमेनान् पञ्जराद्मुञ्चाम ।
4. **यद्यहं प्रजां पालयेयं तर्हि प्रजा मामनुसरेत् ।**
5. धर्मो वो धनयँ्यच्छतु नो ज्ञानम् ।

संस्कृत का हिन्दी अनुवाद

1. जिस कारण से एक सेवक होता है और दूसरा स्वामी होता है, एक भिक्षा माँगता है और दूसरा भिक्षा देता है ।
2. **इत्यादि अच्छी तरह से यहाँ धर्म अधर्म के बड़े फल को देखकर भी जो न माने उस बुद्धिशाली का कल्याण हो ।**
3. स्वभाव से अति भयंकर इस असार संसार में, समुद्र में जलजंतु की तरह दु:ख की सीमा नहीं है ।
4. **गज, भुजंग और पक्षियों के बंधन को, चन्द्र सूर्य के ग्रहपीड़न को**

और बुद्धिमान की द्ररिद्रता को देखकर, अहो ! विधि बलवान है, इस तरह मेरी मति है ।

5. सह्याद्रि पर्वत के उत्तर भाग में जहाँ गोदावरी नदी है, वह प्रदेश इस समस्त पृथ्वी में मनोरम है ।

6. **कौन किसको हँसता है ? कौन दो किन दो को हँसते हैं ? कौन किसको हँसते हैं ? स्त्री का होठ, पल्लव को देखकर हँसता है, दो हाथ दो कमलों को देखकर हँसते हैं और दाँत कलियों को देखकर हँसते हैं ।**

7. सुख का अर्थी विद्या को छोड़ता है, विद्या का अर्थी सुख को छोड़ता है, सुख के अर्थी को विद्या कहाँ से ? और विद्या के अर्थी को सुख कहाँ से ?

8. **विद्याभ्यास और विचार समान को शोभते हैं । वैसे विवाह और विवाद समान को ही शोभा देते हैं ।**

9. दिन में उल्लू नहीं देखता, कौआ रात को नहीं देखता । (परंतु) कामान्ध कोई अपूर्व है, जो दिन और रात नहीं देखता है ।

10. **शिशिर ऋतु में अग्नि अमृत है, प्रिय का दर्शन अमृत है, राजा का सन्मान अमृत है और दूध का भोजन अमृत है ।**

सुभाषितानि

1. पुरुष का आभूषण रूप है, रूप का आभूषण गुण है, गुण का आभूषण ज्ञान है और ज्ञान का आभूषण क्षमा है ।

2. **विद्या के समान नेत्र नहीं, सत्य के समान तप नहीं, लोभ के समान दुःख नहीं और त्याग के समान सुख नहीं है ।**

3. उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम ये छह जिसमें होते हैं, उस पर देव प्रसन्न होते हैं ।

4. **असती स्त्री लज्जावाली होती है, खारा पानी शीतल होता है । दंभी, विवेकी होता है, और धूर्तजन प्रिय बोलनेवाला होता है ।**

5. यह अपना अथवा पराया है, इस तरह की गिनती तुच्छ मनवालों की होती है, उदार मनवालों के लिए तो पृथ्वी ही कुटुम्ब है ।

6. **देना चाहिए, भोगना चाहिए, वैभव हो तो संचय नहीं करना चाहिए । देखो, यहां मधुमक्खियों के द्वारा एकत्र किये मधु को दूसरे लेकर जाते हैं ।**

7. चींटियों द्वारा उपार्जित अनाज, मक्खियों के द्वारा इकट्ठा किया मधु, लोभियों के द्वारा एकत्र किया द्रव्य, जड़सहित विनाश पाता है ।

8. कृपण मनुष्य खुद के हाथ में रहे मांस की तरह धन का रक्षण करते हैं, और सज्जन मनुष्य उस द्रव्य का मैल की तरह दान करते हैं ।

9. पर्वत बड़ा है, पर्वत से समुद्र बड़ा है, समुद्र से आकाश बड़ा है, आकाश से भी ब्रह्म (ज्ञान) बड़ा है और ब्रह्म से भी आशा बड़ी है ।

10. आशा सचमुच मनुष्य को कोई आश्चर्ययुक्त बेड़ी है, जिससे बँधे हुए (मनुष्य) दौड़ते है, (और) मुक्त हुए पंगु की तरह खड़े रहते हैं ।

11. सचमुच, मूर्खों को उपदेश कोप के लिए होता है, शान्ति के लिए नहीं होता है । साँपों को दूध पिलाना केवल विष बढ़ानेवाला होता हैं ।

12. जिसके पास धन है, वह मनुष्य कुलवान है, वही वक्ता है, और वही दर्शनीय है, वही पंडित है, वही श्रुत (ज्ञान) वाला है और गुण को जाननेवाला है, सब गुण सुवर्ण के आश्रित रहते हैं ।

13. मनोहर अच्छे मुख से बोलता है और सचमुच तीक्ष्ण चित्त द्वारा प्रहार करता है । स्त्रियों की वाणी में शहद होता है और हृदय में भयंकर जहर होता है ।

14. भूमि के नाश में अथवा बुद्धिशाली नौकर के नाश में राजा का नाश ही है, उन दोनों को समान कहा गया, (वह) सचमुच बराबर नहीं है, (क्योंकि) नष्ट हुई भूमि सुलभ है, परंतु नष्ट हुए नौकर सुलभ नहीं ।

15. दिन के पूर्वार्ध की छाया प्रारंभ में बड़ी और क्रम से क्षयवाली (कम-कम) होती है, (दिन के दूसरे भाग की छाया) पहले छोटी और फिर वृद्धिवाली होती है । वैसे खल और सज्जन की दोस्ती दिन के पूर्वार्ध और परार्ध की छाया की तरह भिन्न-भिन्न होती है ।

16. बाघ, हाथी आदि द्वारा सेवित, मनुष्य से रहित और बहुत काँटों से युक्त वन अच्छा । (वनमें) घास की शय्या और पहनने के लिए वृक्ष की छाल होती है । (ये सब ठीक) परंतु धनहीन होकर भाइयों के बीच रहकर जीना अच्छा नहीं है ।

17. विपत्ति में धैर्य, अभ्युदय में क्षमा, सभा में वाणी की पटुता, युद्ध में पराक्रम, यश में अभिरुचि, शास्त्र-श्रवण का व्यसन, सचमुच महात्माओं को ये स्वभाव सिद्ध हैं।

सुभाषितानी–समासविग्रह

1) आश्चर्यशृङखला (प्र.ए.व.) आश्चर्येण युक्ता (तृतीया तत्पुरुष)
आश्चर्ययुक्ता चासौ शृङ्खला च आश्चर्यशृङ्खला
(मध्यम पद लोपी तत्पुरुष)

2) आरम्भगुर्वी (प्र.ए.व.) आरम्भे गुर्वी आरम्भगुर्वी (सप्तमी तत्पुरुष)

3) पूर्वार्धपरार्धभिन्ना (प्र.ए.व.) पूर्वार्धश्च परार्धश्च पूर्वार्धपरार्धौ (द्वन्द्व)
पूर्वार्धपरार्धयोर्भिन्ना पूर्वार्धपरार्धभिन्ना (षष्ठी तत्पुरुष)

4) व्याघ्रगजादि सेवितम् (प्र.ए.व.) व्याघ्राश्च गजाश्च व्याघ्रगजाः (द्वन्द्व) व्यघ्रगजा आदौ येषां ते व्याघ्रगजादयः (बहुव्रीहि) व्याघ्रगजादिभिः सेवितम् व्याघ्रगजादिसेवितम् (तृतीया तत्पुरुष)

5) परिधानवल्कलम् – परिधाने वल्केलम् (सप्तमी तत्पुरुष)

कथा

किसी स्थान में एक कुंभकार रहता था, वह एक बार प्रमाद से आधे टूटे हुए घड़ों के ठीकरों पर खूब वेग से दौड़ते हुए गिर पड़ा। उन ठीकरों से उसका ललाट फट गया। खून से लथपथ शरीरवाला बड़ी मुश्किल से खड़ा होकर अपने घर गया। उसके बाद अपथ्य के सेवन से उसका वह घाव भयंकर हो गया। फिर कठिनाई से नीरोग हुआ।

अब एक बार दुष्काल से पीड़ित देश में वह कुंभकार कुछ राजसेवकों के साथ दूसरे देश में गया और किसी राजा का सेवक बना। उस राजा ने भी उसके मस्तक में बड़े प्रहार का घाव देखकर सोचा कि यह कोई वीर पुरुष है, निश्चय ही इसके ललाट में प्रहार का चिह्न है, इसलिए सभी राजपुत्रों के बीच उसको सम्मान आदि द्वारा प्रसन्नता से देखता है। वे राजपुत्र भी उसकी उस प्रसन्नता को देख ईर्ष्या रखते हुए राजा के भय से कुछ बोलते नहीं हैं।

अब एक बार युद्ध का प्रसंग आने पर उस राजा ने उस कुंभकार को एकान्त में पूछा, **'हे राजपुत्र ! तुम्हारा नाम क्या है ?'** और तुम्हारी जाति

कौनसी है ? कौनसे युद्ध में प्रहार लगा है ? वह बोला, **'देव ! यह शस्त्र का प्रहार नहीं है ।'** मैं युधिष्ठिर नाम का कुंभकार हूँ । मेरे घर में बहुत घड़ों के टुकड़े पडे थे । एक बार मैं दारु पीकर निकला और दौडतें हुए ठीकरों पर गिर पड़ा, उन ठीकरों के प्रहार से मेरा ललाट ऐसी विकरालता को प्राप्त हुआ है ।

राजा ने सोचा, **'अहो ! मैं कुंभकार के द्वारा ठगा गया । उसने कुंभकार को कहा, 'हे कुंभकार ! तुम यहाँ से जल्दी चले जाओं ।'**

कथा–समासविग्रह

1) अर्धभग्नघट खर्परोपरि (अव्यय)
अर्धेन भग्ना: अर्धभग्ना: (तृतीया तत्पुरुष)
अर्धभग्नाश्च ते घटाश्च अर्धभग्न घटा: (कर्मधारय)
अर्धभग्नघटानां खर्पराणि अर्धभग्नघटखर्पराणि (तृतीया तत्पुरुष)
अर्भभग्नघट खर्पराणामुपरि अर्धभग्नघटखर्परोपरि । (षष्ठी तत्पुरुष)

2) रुधिरप्लाविततनु: (प्र.ए.व.)
रुधिरेण प्लाविता रुधिरप्लाविता (तृतीया तत्पुरुष)
रुधिरप्लाविता तनु: यस्य स रुधिरप्लाविततनु: । (बहुवीहि)

3) युधिष्ठिरनामा (प्र.ए.व.)
युधिष्ठिरो नाम यस्य स युधिष्ठिरनामा । (बहुव्रीहि)

आओ ! संस्कृत सीखें (भाग-2) की मार्गदर्शिका

पाठ-1

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. धर्म रक्षण का साधन (त्राणम्) है और शरण भी है ।
2. **यमुना गंगा में मिलती है ।**
3. हे राजा ! विजय पाओ ।
4. **हे पुत्र ! तुम क्या इच्छा करते हो ?**
5. तुम अभी अकार्य से रुक जाओ ।
6. **हे पुत्री ! तुम मेरे पीछे चलो ।**
7. बालक स्तन से दूध पीता है ।
8. **राजा प्रजा के हित के लिए प्रवृत्ति करे ।**
9. हे वत्स ! रथ में बैठकर तुम्हारी राजधानी की ओर प्रयाण करो ।
10. **हे माता ! यह पुरुष मुझे 'पुत्र' इस प्रकार कहकर आलिंगन करता है ।**
11. बड़ों के गुण अपने आप प्रकट होते हैं ।
12. **अरे ! यह बालक, क्या मालूम वास्तव में क्रीड़ा करने के लिए सिंह के बच्चे को जबरदस्ती खींच रहा है ।**
13. तुम्हारा शस्त्र दु:खियों के रक्षण के लिए है, निरपराध पर प्रहार करने के लिए नहीं है ।
14. **पैसे कमाने में दु:ख है और कमाये हुए पैसों का रक्षण करने में भी दु:ख है ।**
15. अगर मैं संसार-समुद्र में भटक रहा हूँ, तो मेरा पुरुषार्थ कौन सा ?
16. **शरद्ऋतु के समय जैसा, यह प्रात: समय अभी प्रकट हो रहा है ।**
17. हे पुत्री ! जिस कारण से तुम मौन हो, उस कारण को तुम कहो ।
18. **हे हाथ ! मैं किसी मनोरथ की इच्छा नहीं रखता हूँ, तुम फिजूल में क्यों स्पंदन कर रहे हो (दायाँ हाथ स्पंदन कर रहा है, उसे व्यक्ति स्वयं कह रहा है)**
19. हे हृदय ! तुम अभिलाषा वाले बन जाओ, अभी संदेह का निर्णय हुआ है 'जिसको तुम अग्नि मान रहे हो, वह तो स्पर्श करने योग्य रत्न है ।'

20. हे भगवन्त ! मेरे उस प्रमाद के आचरण को आप सहन करो । वास्तव में पृथ्वी की उपमा वाले महान् पुरुष हमेशा सब कुछ सहन करने वाले होते हैं ।

21. पृथ्वी, समुद्र और पर्वत को पार कर सकते हैं, लेकिन राजा के मन को किसी के द्वारा या कैसे भी, कभी भी समझ नहीं सकते ।

22. वास्तव में जिसका जन्म, याचना करनेवाले मनुष्य की मनोवृत्ति को पूर्ण करने के लिए नहीं है, उसके द्वारा यह भूमि अति भारवाली है, परन्तु वृक्षों से, पर्वतों से और समुद्रों से अतिभार वाली नहीं है ।

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. मुनयः परिषहान्सहन्ते ।

2. सूर्य उदयति कुमुदानि च म्लायन्ति ।

3. व्यवसायिभिर्जनैस्त्वर्यते ।

4. व्याघ्रा अपि पलायन्ते ज्वलज्ज्वलनदर्शनात् ।

5. स्वं न श्लाघ्यम् ।

6. सूर्यस्य तापेन तडागस्यतोयं उत्क्वथति ।

7. तव वपुः विभ्राजते ।

8. स्पर्धमाणाय कर्मणा नमोऽस्तु वर्धमानाय ।

पाठ-2

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. साधु सदाचार का पालन करते हैं ।

2. घास भी गाय के दूध के लिए समर्थ है ।

3. गधे आपस में दाँतों से काटते हैं ।

4. तुम उस कथा को छुपाओं मत, (छुपाए बिना) कहो ।

5. जो मन को नियम में जोड़ता है, वास्तव में उसके पाप नष्ट हो जाते हैं ।

6. याचकों को धन (इच्छित) देने वाले राजा ने उत्कृष्ट ख्याति प्राप्त की ।

7. कमल के पराग को चूस-चूस कर भ्रमर खुश होवे ।

8. **वे दोनों पति-पत्नी, बार बार मीठे झरणों के पानी को पीते-पीते वृक्ष की गाढ़ छाया में आराम करते-करते अलग-अलग फूलों को सूँघते-सूँघते पर्वत के ऊपर चढ़े ।**

9. उसके बाद चोरों ने सभी मनुष्यों के अलंकार आदि को लूटना शुरू किया ।

10. **सूर्य के तपने पर रात्रि, लोगों की दृष्टि के आवरण के लिए कैसे समर्थ हो ?**

11. बजाना, (धमेत्) बजाना (लेकिन) ज्यादा मत बजाना, ज्यादा बजाना शोभास्पद नहीं है (ज्यादा अच्छा नहीं है)

12. **चंदन, अगरु, कस्तूरी और कपूर वगैरे की गंध से साँप की तरह काम भी अचानक मनुष्य पर आक्रमण करता है ।**

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. **भीममपि दन्दशूकं पिपीलिकाप्रकरो दशति ।**
2. वल्लयः पर्णैः फलानि गूहन्ति ।
3. **कुमारपालस्य कीर्तिं साधवोऽपि पणायन्ति ।**
4. सिद्धराजः स्वीयाञ्शत्रूनधूपायत् ।
5. **वयं जिनं पनायामहे ।**
6. वणिजः कोटिभी रूप्यकै र्नित्यं पणन्ते ।
7. **दन्दशूको बिलान्निरक्रामददशच्च ।**
8. यूयमकार्येषु कथं सज्जथ ।
9. **तस्य चित्तमध्ययनेऽसजत् ।**
10. रजको राज्ञ्या वस्त्राणि रजति ।

पाठ-3

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. कुम्भकार के चक्र पर चढ़ी हुई मिट्टी के समान, मेरा मन भी बहुत समय से भटकता है ।
2. **स्त्री की खुशामत करने वाले जीव संसार में भटकते हैं ।**
3. जो स्त्रियों में रागी नहीं होता है, ज्ञान और विवेक उसकी ओर आता है ।
4. **अपने खुद के पुत्र की तरह इस बालक में मेरा मन क्यों स्नेह करता है ।**

5. वास्तव में जीव जन्म लेते हैं और मरते हैं ।

6. निर्धन मनुष्यों के मनोरथ (उनके) हृदय में ही लीन हो जाते हैं ।

7. सभी प्राणी, इच्छित वस्तु को पाकर सुखी होते हैं ।

8. आज मेरा मन वैराग्य में तल्लीन है ।

9. तुम ही एक मेरे भाई हो, जिस कारण मेरे कार्य के लिए दु:खी हो रहें हो ।

10. जिस कारण अयोग्य भी वन्दनीय होता है, वह प्रभाव वास्तव में धन का है ।

11. उत्तम पुरुष, विद्यावान पुरुष सदैव प्रशंसनीय और पूजनीय होते हैं । विद्याहीन पुरुष विद्वान मनुष्यों की सभा में शोभा नहीं पाते हैं ।

12. सत्पुरुषों को वृद्धावस्था, पहले चित्त में आती है, उसके बाद काया में आती है, लेकिन असत्पुरुषों को वृद्धावस्था पहले काया में आती है, लेकिन चित्त में कभी भी नहीं आती है ।

13. कुपित भाग्य के बींधने पर प्राणियों के लिए धर्म ही कवच है, अत: वही (धर्म) हमारा शरण हो ।

14. अति दु:खदायी ऐसे विषयों में सुख मानने वाला मनुष्य, आश्चर्य है कि (उसमें) थोड़ा भी वैराग्य पाता नहीं है, जिस प्रकार अशुचि में भी सुख मानने वाला अशुचि का कीड़ा अशुचि में वैराग्य नहीं पाता है ।

15. जहाँ दया नहीं, वह दीक्षा नहीं है, वह भिक्षा नहीं है, वह दान नहीं है, वह तप नहीं है, वह ध्यान नहीं है, (और) वह मौन नहीं है ।

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. कपि-र्बालानभ्यधावद्, बाला अत्रस्यन्नतो रक्षायाययस्यन्नक्लाम्यंश्च किन्तु भीमो नाऽत्रसदत एव रक्षाया अयसन्नक्लामँश्च कौतुकेन कपिं द्रष्टुं समयसत् ।

2. स सह दीव्यद्भयो बालेभ्य: फलानि यच्छति ।

3. युधि योधा इषुन्निरस्यन्ति इषवश्च योधान् विध्यन्ति ।

4. जीर्यतो जनस्य केशा, जीर्यन्ति दन्ता, जीर्यन्ति नेत्रे श्रोत्रे च जीर्यतस्तृष्णैका न जीर्यति ।

पाठ-4

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. हे पिता ! (आपके द्वारा) भरत (का) बहुत हर्ष के साथ राज्य के लिए अभिषेक कराया जाय ।
2. **हे पुत्री ! तुम मुझे और सखियों को मिलो ।**
3. ये मनुष्य मेरे रत्न और सोने वगैरे को छीन लेते हैं ।
4. **सभी लोग (कर्म द्वारा) लिप्त होते हैं, ज्ञानसिद्ध लिप्त नहीं होता है ।**
5. मैं सभी प्रकार से (मेरे) खुद के प्रमाद से लज्जा पाया हुआ हूँ, आप मेहरबानी करो । (मेरे ऊपर आप प्रसन्न हो)
6. **निश्चय से जो जीव मरता है, वही वापस उत्पन्न होता है ।**
7. वहाँ सबका भाता और घास आदि समाप्त हो गया ।
8. **यह आश्रम द्वार है, जितने में प्रवेश कर रहा हूँ । (उतने में) आश्रम स्थान शान्त है और (मेरा दायाँ) हाथ फरक रहा है, यहाँ फल कहाँ से होगा अथवा अवश्य होनेवाले (कार्य) का कारण सर्वत्र होता है ।**
9. मानों अंधकार अंगों को लिपटता है, मानों आकाश काजल को बरसाता है, असत्पुरुषों की सेवा की तरह (मेरी) दृष्टि निष्फल हुई है । (अन्धा मनुष्य बोल रहा है) ।
10. **अज्ञानी मनुष्य वास्तव में अज्ञान में ही मग्न रहता है, जैसे सूअर विष्ठा में मग्न रहता है, उसी प्रकार ज्ञानी ज्ञान में मग्न रहता है, जैसे हंस मानसरोवर में मग्न रहता है ।**

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. **वैद्येन व्याधिभिः म्रियमाणस्य जनस्य व्याधि र्ह्रियते ।**
2. गृहाद्गच्छन्पुत्रः पितरमापृच्छत ।
3. **वल्लभोऽद्भुतेन विनयेन शौर्येण च राज्ञश्चित्ते न्यविशत ।**
4. गुरुः सुधातुल्यया वाचा शिष्याणां संशयं वृश्चति, येन शिष्याः स्वीयं मस्तकं धुवन्तो गुरुं नुवन्ति ।
5. **अर्जुनो द्रोणाचार्याद्धनुर्विद्यामविन्दत ।**
6. तेन जातेन पुत्रेण को गुणो मृतेन च कोऽवगुणो यतो यस्मिन्सति पितु भूमिरपरेणाक्रम्यते ।

पाठ-5

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. स्पृहा वाले मनुष्य घास और रुई जैसे हल्के दिखते हैं।
2. **जिसके हाथ जोड़े हुए हैं ऐसे स्पृहा वाले मनुष्यों के द्वारा कौन-कौन प्रार्थना नहीं कराये जाते है। (अर्थात् सभी कराये जाते हैं)**
3. फिर भी, अभी भी उनको देखकर मेरे पापों को मैं धो रहा हूँ।
4. **जैसे मेघ पानी के द्वारा (विश्व को खुश करता है), उसी प्रकार उसने धर्म के द्वारा विश्व को खुश किया।**
5. ग्रीष्म ऋतु में प्राणी मानों पकाए जाते हैं, धूल मानों तपाई जाती है, पानी मानों उबलता हैं, (और) पर्वत मानों धमधमते हैं (तपते हैं)।
6. **दूध पिलाना आदि क्रियाओं से धाव माताओं के द्वारा लालन-पालन कराता हुआ वह राजपुत्र क्रमश: वृक्ष की तरह बढ़ा।**
7. चार (तत, वितत, घन, सुषिर) प्रकार के वाद्ययंत्र में चतुर ऐसा यह गन्धर्व वर्ग तुम्हारे आगे संगीत के लिए सज्ज (तैयार) खड़ा है।
8. **पुत्री के वियोग रूपी नये दु:खों से क्या गृहस्थ पीड़ा नहीं पाते हैं ? (पीड़ा पाते हैं)।**

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. **लोक उद्योतकरांस्तीर्थकरानहं कीर्तयामि।**
2. यो गुरो र्दोषांश्छादयति स छात्र: कथ्यते।
3. **जनान्प्रीणन्ज्याकर्षणेन च धनु र्धूनयन्नर्जुनो रङ्गभूमावागच्छत्।**
4. जनो यानि कष्टानि धनाय साहयति तानि कष्टानि धर्माय न सहति।

पाठ-6

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. यदि किसी काम के लिए विलम्ब न हो तो अभ्युदय के लिए प्रयाण किया जाय।
2. **उस राजा ने वैद्यमंडल को बुलाया। राजाओं द्वारा निष्प्रयोजन अधिकारी लोग बुलाए नहीं जाते हैं।**
3. ताजे पुष्पों की माला की तरह आपकी आज्ञा सैकड़ों राजाओं के द्वारा वहन की जाती है।

4. **मृग के भय से क्या जौ नहीं बोए जाते हैं ? (बोते हैं)**
5. और गंधर्वों ने मधुर मंगल गायनों द्वारा गाया ।
6. **जिस प्रकार (मनुष्य) कुदाल के द्वारा खोद कर भूमि में से पानी लेता है, वैसे ही गुरु में रही हुई विद्या को सेवा करने वाला प्राप्त करता है ।**
7. वास्तव में वह विद्या नहीं है, वह दान नहीं है, वह शिल्प (कारीगरी) नहीं है, वह कला नहीं है, वह स्थिरता नहीं है, यदि याचकों के द्वारा धनवानों का गान नहीं होता । अर्थात् याचक धनवानों को सर्वगुणसम्पन्न कहते हैं ।

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. **सूरस्स एवास्ति हि येनेन्द्रियाणि जीयेरन्, पण्डितस्स एवास्ति हि येन धर्म आचर्येत, वक्ता स एवास्ति हि येन सत्यमुद्येत, दाता च स एवास्ति हि येनाभयं दीयेत ।**
2. परीक्षकेण छात्रा: प्रश्नं पृच्छ्यन्ते छात्रै: स्मर्यते परीक्षकाय चोत्तरं दीयते ।
3. **तन्तुवाय: तन्तून्वयति ।**
4. (य:) गर्तां खनेत् स पतेत् ।
5. **किङ्करैरयं भारो ग्रामं नेतुमुह्यते ।**
6. तस्य भ्रात्रा पुष्करेण नल: सर्वमप्यजीयत ।
7. **आचार्येण धर्मकथा कथयितुमारभ्यते ।**

पाठ-7

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. जो लोग निश्चय ही मेरे विनाश के लिए चन्द्रगुप्त की सेवा में तैयार थे, वे ही मेरी सेवा क्यों कर रहे हैं ?
2. **उस सन्देश को सुनने के लिए देव लायक है ।**
3. अन्धा मनुष्य गले में डाली हुई माला को भी सर्प की शंका से हिलाता है ।
4. **कान में सुई के प्रवेश जैसा उसने पुत्री का जन्म सुना ।**

5. हे आर्यपुत्र ! आपके बिना एक मुहूर्त भी रहने के लिए मैं शक्तिमान नहीं हूँ, इसलिए मेरे द्वारा भी अवश्य जंगल (अरण्य) में जाया जाए । यदि मेरी अवगणना करके जाते हो तो जाओ, तुम्हारा इष्ट सिद्ध हो ।

6. यह बड़ी कथा है, संक्षेप में कहना मुश्किल है ।

7. वर्णन कराता हुआ उसका वृत्तान्त तुम सुनों ।

8. दशरथ राजा ने सामन्त और सचिवों को भी राम को लाने के लिए भेजा ।

9. दु:ख की बात है कि हर रोज इसी प्रकार बोलती हुई मैं तुम्हें भी दु:खी कर रही हूँ ।

10. किस प्रयोजन से मेरे द्वारा यह भेजा गया है ? इस प्रकार प्रयोजन बहुत होने से वास्तव में मैं याद नहीं कर पाता हूँ ।

11. जितेन्द्रियता विनय का साधन है, विनय से गुणों की अधिकता प्राप्त होती है, गुण की अधिकता से लोग अनुरागी बनते हैं, और लोगों के अनुराग से सम्पत्ति होती है ।

12. हे महानुभाव ! तुम खेद मत करों, अभी वास्तव में शान्त हो जाओं, खोज करते हुए मेरे द्वारा तुम्हारी प्रिया प्राप्त हुई है ।

13. शास्त्र रूपी दीपक के बिना अदृष्ट अर्थ में दौड़ते हुए जड़ लोग कदम-कदम पर स्खलना पाते हुए अत्यन्त दु:खी होते हैं ।

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. हंसा कुसुमान्यचिनोत्तेषां च स्त्रजमसृजत् ।

2. स शिखरिणो गुहायामुपविश्य विद्यामसाध्नोत्, विद्यादेव्यकथयत् वरं वृणु, अहं वरं दातुं शक्नोमि ।

3. सत्कार्येण जनस्य कीर्ति लोंकेऽश्नुते ।

4. अरि-सैन्यं पराजेतुं तेऽधृष्णुवन्, यथा च दात्रैस्तृणं कृणुयुस्तथासि-भिश्शत्रुसैन्यमकृन्तन् ।

5. अरे सुशीले ! कुथमत्र प्रस्तृणु ।

6. अखिला लोका महत्वाय प्रस्पन्दन्ते, किन्तु महत्वं मुक्तेन हस्तेन प्राप्यते ।

7. दिवसैरर्जितं खाद, मूर्ख ! एकमपि द्रम्मं मा सञ्चिनु, यत: किमपि तद्भयमापतति हि येन जन्म समाप्यते ।

पाठ-8

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. गुणों में प्रयत्न करो, आडम्बर करने से क्या प्रयोजन है ?
2. **'इसका हम वध कर रहे हैं' 'इसकी हम भक्ति कर रहे हैं', इस प्रकार जो दोनों की बुद्धि है, उन दोनों पर भी हितबुद्धि रखनी चाहिए ।**
3. अगर तुम वास्तव में सुख को चाहते हो, तो मन को थोड़ा भी विषयों में लिप्त मत करो और खराब काम मत करो ।
4. **हे मूढ़ ! हवा की तरह चपल मन को तुम स्थिर (निश्चित) करों ।**
5. अहो ! अति घमण्डवाले ये चक्रीपुत्र हमारा योग्य कहा हुआ भी मानते नहीं हैं । घमण्ड को धिक्कार हो !
6. **भगवान सुमतिनाथ स्वामी आपके इच्छित (विस्तारों) को पूर्ण करें ।**
7. देशकाल के अनुसार उचित क्रिया को करता हुआ (मनुष्य) वास्तव में दु:खी नहीं होता है ।
8. **आलस्य, वास्तव में मनुष्य के शरीर में रहा हुआ बड़ा शत्रु है । उद्यम जैसा कोई मित्र नहीं है, जिस (उद्यम) को करके (मनुष्य) दु:खी नहीं होता है ।**
9. जैसे हजारों गायों में बछड़ा अपनी माता को खोज लेता है, वैसे ही पूर्व में किया हुआ कर्म, करने वाले के पीछे चलता है ।
10. **निर्गुणी प्राणियों पर साधु दया करते हैं । वास्तव में चन्द्र चाण्डाल के घर से (गिरती) किरणों को रोक नहीं लेता है ।**
11. कुलवानों के साथ संगति, पण्डितों के साथ मित्रता और ज्ञातिजनों के साथ मेल करने वाला मनुष्य कभी विनाश नहीं पाता है ।

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. **अहं भरतस्य पार्श्वे एकं शोभनं पुस्तकमपश्यमवन्वि च, अपि स मह्यं तन्नायच्छत् ।**
2. लोका: कोपं कृत्वा स्वीयां निर्बलतामाविष्कुर्वन्ति ।
3. **भगवान् महावीरो घोरेण तपसा कर्माण्यक्षिणोत् ।**
4. यस्स्वस्य गुणाँश्छादयति परस्य च गुणान्प्रकटान्करोति, तस्य सुजनस्य यूयं पूजां कुरुत ।

पाठ-9

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. मुझे छुट्टी दो, जहाँ मेरे बन्धुजन हैं, वहाँ जाउँ ।
2. **उसने बर्तन बेचे ।**
3. हे सारथी ! घोड़ों को हाँकों ! पवित्र आश्रम के दर्शन करके आत्मा को तो पवित्र करें ।
4. **कड़वी तुम्बड़ी का पका हुआ फल भी कौन खाता है ?**
5. इन फलों को आप ग्रहण करो !
6. **यह आपकी स्त्री है, इसको छोड़ो या अपनाओ ।**
7. किस कर्म से भव रूपी अटवी में भ्रमण होता है और किस कर्म से मोक्ष मिलता है, इस प्रकार जानने के लिए, हे मूढ़ ! जो तुम समझते हो (इच्छा करते हो) तो जैन आगमों को देखों ।
8. **भासुरक ! यह सब जानता है, बाहर ले जाकर जितनी देर में कहे, तब तक तुम्हारे द्वारा (उसे) मारा जाय ।**
9. हे विजया ! क्या तुम इस भूषण को पहिचानती हो ?
10. **इस विद्या को भक्ति पूर्वक, नम्र मन से, विकल्प किए बिना ग्रहण करों ।**
11. मेरे भी चरित्र को संक्षेप में जानों ।
12. **हे नृपचन्द्र ! मेरे मन के सन्तोष के लिए तुम इस पर प्रसन्न हो जाओं ।**
13. महान् शील द्वारा वह अपने दोनों कुलों को पवित्र करती है ।
14. **(तुम) रत्नों की चोरी करों और देवांगनाओं का हरण करों ।**
15. यहाँ मेरा बहुत धन है, हे भाई ! उसको तुम ग्रहण करों ।
16. **कर्मविपाक के परवश हुए जगत् को जानने वाले मुनि दु:ख में दीन नहीं बनते हैं और सुख में विस्मित (आनन्दित) नहीं होते हैं ।**
17. (काम–क्रोधादि) अभ्यन्तर शत्रुओं का मन्थन करने में क्रोध के आडम्बर से (आवेश से जैसे) लाल नहीं हुई हो ऐसी पद्मप्रभ प्रभु के देह की कान्ति आपका कल्याण करे ।

18. (मनुष्य) बाहर भेजने पर नोकर को जानता है (पहिचानता) । दु:ख आने पर भाइयों को जानता (पहिचानता) है, आपत्ति आने पर मित्र को जानता (पहिचानता) है, और वैभव (ऋद्धि) का क्षय होने पर स्त्री को जानता (पहिचानता) है ।

19. भववास से विमुख बनी हुई आत्मा को मोहराजा की नोकरानी ऐसी इन्द्रियाँ विषम पाश से बाँधती हैं ।

20. असार पदार्थों का भी समूह वास्तव में दुर्जय है । घास द्वारा भी डोरी बनती है जिससे हाथी भी बँधा जाता है ।

21. जो खुद के चरित्र द्वारा अपने पिता को खुश करता है, वह (सच्चा) पुत्र है । जो पति का हित चाहती है वह (सच्ची) पत्नी है । जो सुख में और दु:ख में समान क्रिया वाला है, वह (सच्चा) मित्र है, जगत् में ये तीन वस्तुएँ पुण्य करने वाले को ही प्राप्त होती हैं ।

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. तं दुरात्मानं निबिडैर्बन्धनैर्बधान कारागृहे च निक्षिप ।

2. पश्यत ! मधुव्रत: पुष्पेऽलीनान्मधु च पिबति ।

3. यदा जना असत्यं गृणन्ति तदा सतां हृदयं क्षुभ्नाति ।

4. यूयं पुष्पाणां मालां ग्रथ्नीत वृथा न क्लिश्नीत, त्वं पुष्पं मा मुषाण, यूयन्तु कुसुमानि मृद्नीथ ।

5. कलिकालसर्वज्ञप्रभुश्रीहेमचन्द्रसूरेर्व्याकरणं दृष्ट्वा पण्डिता मस्तकं धुनन्ति ।

6. कन्या: स्वीयान्घटान् जलेनापृणन् ।

7. तापसो वृक्षाणां पल्लवैस्स्वीयमुटजमस्तृणात् ।

8. जनो वृक्षात्फलानि गृह्णाति कटूनि च पर्णानि परिवर्जयति, तदापि महाद्रुम: सुजन इव पर्णान्युत्सङ्गे धारयति ।

9. काले पक्वं धान्यं यथा कृषीवलो लुनाति तथा जातं प्राणिनं कृतान्तो लुनाति ।

10. स्ववचसा परिहृतमाहारमहं कथं गृह्णीयाम् ।

11. पण्डिता: प्रियस्य वियोगविषस्य वेगं जानन्ति तत एव बिलगतं सर्पमिव प्रेमं परिहरन्ति ।

12. तस्या मुखकबरीबन्धौ शोभां धरत: जाने शशिराहू मल्लयुद्धं कुरुत: ।

पाठ-10

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. सिद्धराज ने अवन्ती नगरी को घेर लिया था।
2. **(मनुष्य को) धर्म कार्य में धन को उपयोग में लेना चाहिए।**
3. तुम्हारे उत्सुक चित्त को रोकना चाहिए।
4. **जैसे तैसे (किसी भी प्रकार से) भी प्राणियों पर दया करों, जैसे तैसे धर्म करों, जैसे तैसे भी शान्ति रखों, जैसे तैसे भी कर्म का छेद करों।**
5. जो रात में भी खाते हैं, वे पाप रूपी सरोवर में डूबते हैं।
6. **सूखे लकड़े और मूर्ख को भेद सकते हैं, फिर भी वे झुकते नहीं हैं।**
7. हजारों मुर्खों से एक बुद्धिमान ज्यादा है–विशेष है।
8. **उसी के बुद्धिरूपी बाण से (उसी के) मर्म को भेद रहा हूँ।**
9. क्या पता ! उनके हृदय को लज्जा भेदती नहीं है।
10. **मेरे हाथियों का झुण्ड नगर को घेर ले।**
11. मित्र के स्नेह से विह्वल बना हुआ वह अभी मुझे साहस में जोड़ता है।
12. **यह स्त्री पानी ढो रही है, यह स्त्री सुगन्धित द्रव्यों को पीस रही है।**
13. जिसके लिए (पैसे के लिए) पुत्र पिता को, पिता पुत्र को शत्रु की तरह मारते हैं और मित्र, मित्र से मित्रता तोड़ते हैं।
14. **जिस (स्पृहा या विषलता) का फल, मुखशोष, मूर्छा और दीनता है, उस स्पृहा रूपी विषलता को पण्डित पुरुष ज्ञान रूपी दातरड़े से काट लेते हैं।**
15. (रोहणाचल की भूमि में भी) वहाँ भी उपाय बिना रत्न के ढेर प्राप्त नहीं होते हैं। सामने पड़ा हुआ भी भोजन हाथ बिना (प्रयत्न बिना) वास्तव में कौन खाता है !

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. **कमपि प्राणिनं न हिंस्यात्।**
2. सन्तः सदसद् विविञ्चन्ति।
3. **त्वं सद्भिस्सह संपृङ्ग्धि तत्त्वं च विन्त्स्व।**
4. मरुद्वृक्षान्भनक्ति तथा त्वं मम मनोरथानभनक्।
5. **इष्टस्य वियोगेऽनिष्टस्य च संयोगे मूर्खाः खिन्दतेऽपि यः प्राज्ञस्स न खिन्ते, मन्यते च हि जनः कृतस्य कर्मणः फलं भुनक्ति।**

6. जनोऽन्यस्य गुणानेव व्यञ्ज्यात् ।
7. **सा हरिद्रां लवणं मरिचं चाक्षुन्त तदाहं गोधुममपिनषं त्वं चाधुना पिप्पलीं पिण्ढि ।**
8. त्वं मामकार्यं कुर्वाणमरुणस्तच्छोभनतरमकुरुथा: ।

पाठ-11

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. जो सत्य वचन बोलता है, जो विशेष उपशम को धारण करता है और जो शत्रु को भी मित्र समान देखता है, उसे मोक्ष मिलता है ।
2. **वह इस प्रकार विचार करता हुआ जाकर राजा को बोला ।**
3. जाओ ! इस प्रकार प्रधान को कहो ।
4. **यह बालक मुझे महान् तेज का बीज (कारण) लगता है ।**
5. आप ही लोक-व्यवहार में अच्छी तरह से निपुण हो ।
6. **हे स्त्री, तुम्हारे हृदय में से दु:ख दूर हो ।**
7. इस प्रकार गुणवान् चक्रवर्ती पुत्र को प्राप्त कर ।
8. **अरे पुत्र ! अरे पुत्र ! अरे पुत्र ! इस प्रकार बोलता हुआ राजा मूर्च्छित होकर जमीन पर गिरा और प्राणों से मुक्त हुआ ।**
9. जो मन में पश्चात्ताप हुआ है उसे प्रकट करना शक्य नहीं है ।
10. **कैकेयी ने भरत के भूषण रूप भरत नाम के पुत्र को जन्म दिया ।**
11. हम आपकी बुद्धि का उल्लंघन करने में समर्थ नहीं हैं ।
12. **हे माता ! खेलने गए कृष्ण ने स्वेच्छा से मिट्टी खाई है ।**
    'कृष्ण ! सच्ची बात है ?'
    इस प्रकार कौन कहता है ?
    बलराम कहता है ।
    माता ! गलत बात है (मेरा) मुख देखो ।
13. हे भूपाल ! तीन भुवन का उदर बहुत बड़ा है, अत: उसमें समाने के लिए अशक्य भी तुम्हारा यश उसमें समाता है ।
14. **पहले राजा, पहले साधु और पहले तीर्थंकर, ऐसे ऋषभ स्वामी की हम स्तवना करते हैं ।**
15. एक ही चैतन्य बाल्यावस्था में से युवावस्था और युवावस्था में से वृद्धावस्था में जाता है वैसे एक जन्म से दूसरे जन्म में (भी) जाता है ।

16. आओ, जाओ, बैठो, खड़े हो जाओ, मौन रखो, इस प्रकार आशा रूपी ग्रह से पीड़ित याचकों द्वारा धनिक क्रीड़ा करते हैं ।

17. क्या करूँ ! कहाँ जाऊँ ! किस की शरण स्वीकार करूँ ! दुष्ट-दुर्भर उदर से मैं प्राणों द्वारा भी विडम्बित हुआ हूँ ।

18. आज रात्रि के प्रारम्भ में ही सोया हुआ मेरा यह छोटा पुत्र अचानक महाक्रूर सर्प द्वारा डंसा गया है ।

19. हे वत्स ! वृद्धावस्था से पीड़ित मनुष्य प्राय: करके दूसरों की निन्दा में तत्पर होते हैं, कदम कदम पर क्रोध करते हैं और सिर्फ सोते रहते हैं ।

20. सत्य बोलना चाहिए, प्रिय बोलना चाहिए, सत्य भी अप्रिय लगे, ऐसा नहीं बोलना चाहिए और प्रिय भी असत्य नहीं बोलना चाहिए, यह शाश्वत धर्म है ।

21. प्रहर की तरह दिन बीतता है और दिन की तरह मास व्यतीत होता है, और मास की तरह वर्ष व्यतीत होता है, वर्ष की तरह यह यौवन व्यतीत होता है और यौवन की तरह जगत् का जीवन चलता रहता है ।

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. स्वं धनं दातुं दुष्करमस्ति, तप: कर्तुं न प्रतिभाति, एवमेव सुखं भोक्तुं मनोऽस्ति, अपि न भुज्यते ।

2. अनीतिं कुर्वाणं पुरुषमापदायाति ।

3. अखिलां पृथ्वीं जेतुं त्यक्तुं च व्रतं लातुं पालयितुं च भगवच्छान्तिनाथं विना भुवनेऽन्य: कोऽपि न शक्नोति ।

4. सिद्धहेमव्याकरणस्याष्टाप्यध्यायानहमध्यैयि ।

5. अहं सिद्धहेमव्याकरणस्य कर्त्तारमाचार्यहेमचन्द्रं भक्त्या नौमि ।

6. प्रातर्विहगा मधुरं रुवन्ति, छात्रा आनन्देनाधीयते, वायु र्मन्दं मन्दं वाति, सर्वे स्वेष्टदेवं स्तुवन्ति, अरुण उदयति, पक्षिणस्स्वीयान्नीडान् विमुच्यारण्यं यान्ति, तन्द्रिलाश्च जना: शेरते ।

7. कार्यभारेणाधुनाखिलां रात्रिं मया न शय्यते ।

पाठ-12

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. अहो ! प्रतापवाले भी इस शरीर का विश्वास करने की योग्यता !

2. आप मुझे आज्ञा करो ।

3. हे हृदय ! आश्वासन धर, आश्वासन धर, यह वास्तव में आर्यपुत्र है ।

4. तुम क्यो रो रहे हो ? तुम्हारे रोने का क्या कारण है ?

5. हृदय में नहीं समाते हुए शोक के कारण वह खूब रोई ।

6. श्वास छोड़कर (निःश्वस्य) वह धीरे से बोली, 'हे महाभाग ! मन्द भाग्यवाली मैं क्या करूँ ?

7. प्रताप से प्रकाशित दशरथ ने पृथ्वी पर राज्य किया ।

8. प्रयोजन बिना चाणक्य स्वप्न में भी चेष्टा नहीं करता है ।

9. विश्वास करने योग्य भी अपने वर्ग के विषय में हमारी बुद्धि विश्वास नहीं करती है ।

10. दमयन्ती ने रात्रि के शेष भाग में इस प्रकार का स्वप्न देखा, 'मैंने फले-फूले पत्ते वाले आम के वृक्ष पर चढ़कर भ्रमर की आवाज को सुनते हुए उसके फल खाए ।'

11. एक भी सुपुत्र द्वारा सिंहनी निर्भय होकर सोती है, जब कि दश पुत्र होने पर भी गधी भार को वहन करती है ।

12. जिसके दिन (धर्म-अर्थ-काम) तीन वर्ग से शून्य आते हैं और जाते हैं, वह लुहार की धमण की तरह श्वास लेने पर भी जीता नहीं है ।

13. जो (तत्त्वदृष्टि) सभी प्राणियों में रात्रि (समान) है, उसमें संयमी जागृत होते हैं और जिसमें (मिथ्यादृष्टि) प्राणी जागृत होते हैं, वह मुनि के लिए रात्रि समान है ।

14. शकुन्तला को देखकर दुष्यन्त बोलता है–अथवा मनुष्य की स्त्रियों में यह रूप कैसे संभव हो, प्रभा से देदीप्यमान ज्योति पृथ्वीतल में उदय नहीं पाती है ।

15. जिन सत्पुरुषों के हृदय में परोपकार की क्रिया जागृत है, उनकी विपत्तियाँ नष्ट होती हैं और कदम-कदम पर सम्पत्तियाँ होती हैं ।

16. दुर्विनीतों को शिक्षा करनेवाला पौरव राजा पृथ्वी पर राज्य करता हो तब वह कौन है, जो भोली तपस्वी कन्याओं के साथ अविनय का आचरण करता है ।

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. हे भ्रमर ! तं मार्गं दृष्ट्वा मा रुदिहि, यस्य वियोगे त्वं म्रियसे सा मालती देशान्तरं गतास्ति ।

2. बान्धवेषु करुणं रुदत्सु, जनो म्रियते ।

3. यथाकाशे तारामण्डले चन्द्रश्चकास्ति तथा वसुधावलये मुनिमण्डले आचार्यहेमचन्द्रश्चकास्ति ।

4. यावज्जनः श्वसिति तावत्प्राण्यात् ।

5. जैना उपवासदिने न किमपि जक्षति ।

6. ये पुरुषाः पुरुषार्थं न कुर्वते ते दरिद्रति ।

पाठ-13

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. आप यहीं पर एक मुहूर्त तक बैठो ।

2. मारों ! मारों, पास में जाओं ! पास में जाओं ! पकड़ों ! पकड़ों ।

3. शत्रुओं को तृण समान गिनने वाला अकेला ही रथ में बैठा ।

4. क्यों भाई ! तुम माता को प्रेमवाली नहीं जानते हो ?

5. तृष्णा का छेद करों, क्षमा धारण करों, मद को छोड़ों, सत्य बोलों ।

6. अयश को साफ करने की मैं इच्छा करता हूँ ।

7. हे श्रेष्ठी ! भले आए, यह आसन, आप उस पर बैठो ।

8. वह मूर्ख से द्वेष करता है, पंडित से नहीं ।

9. स्त्री घर कहलाती है ।

10. अथवा क्या ! सूर्य को परिश्रम नहीं करना पड़ता है, या निश्चल (चले बिना) बैठता नहीं है ।

11. शत्रु और मित्र पर समान भाव रखने वाला, सम्पूर्ण लोक को आर्द्र-करुण दृष्टि से देखने वाला, प्रमाणसर और प्रिय बोलने वाला (मनुष्य) मोक्षमार्ग में रहता है ।

12. जैसे दावानल से पेड़ों के झुण्ड जलते हैं, उसी प्रकार विषय की लोलुपता से मनुष्य का विनाश होता है, इसलिए विष की तरह विषयों को दूर कर समाधि में लीन चित्त (मन) से बैठों ।

13. तपस्या के तेज से दु:सह ऐसे गुरुजन को तुम प्रणाम करों, इस प्रकार हम आपको कह रहे हैं ।

14. अरे ! अरे ! राजन् ! यह आश्रम का मृग है । मारने योग्य नहीं है, मारने योग्य नहीं है ।

15. इस अशोक वृक्ष के मूल के नीचे आप तब तक बैठों, जितने में मैं आता हूँ ।

16. जो पहले, पृथ्वी के रक्षण के लिए भवनों में निवास चाहते हैं बाद में उनके लिए वृक्षों के मूल में घर बनते हैं ।

17. आपने जिसको संस्कारित किया है, उसके विषय में हम सब चाहते हैं ।

18. धर्म के प्रयोजन से अथवा रसनेन्द्रिय की लोलुपता से जो मनुष्य मांस खाते हैं अथवा प्राणियों को मारते हैं, वे नरक की अग्नि में पकाए जाते हैं ।

19. जो शत्रु को मित्र करता है, मित्र से द्वेष रखता है, मित्र को मारता है और खराब काम करता है, उसे (लोग) मुर्ख मनवाला कहते हैं ।

20. मानों देहधारी पुण्य का समूह न हो ! ऐसे ये मुनि, हताश ऐसे मेरे द्वारा मारे गए ! कहाँ जाऊँ और क्या करूँ ?

21. आपको नाथ (की तरह) स्वीकार करते हैं, आपकी स्तुति करते हैं, आपकी उपासना करते हैं, वास्तव में आप से अन्य (कोई) रक्षण करने वाला नहीं है, क्या कहूँ और क्या करूँ ।

22. पहले सभी में 'गुणवान' हैं, इस प्रकार जो कहा गया है, उसका दोष प्रतिज्ञा भंग से डरने वाले मनुष्य को बोलना नहीं चाहिए ।

23. विकसित नेत्रवाले सभी लोगों से आशीर्वाद दिया जानेवाला धन सार्थवाह प्रतिदिन सूर्य की तरह प्रयाण करता था ।

24. धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की स्थिति के लिए (आधार) प्राण हैं, उन (प्राणों) को मारते हुए क्या नहीं मारा गया और रक्षण करते हुए किसका रक्षण नहीं हुआ ।

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. दिनेश ! त्वं तव मुखं हस्तौ पादौ च मृड्ढि नवानि च वसनानि वरस्व ।
2. **सायं प्रातश्च गोपो धेनू दोग्धि ।**
3. अधुनाखिले भारतवर्षे प्रजाः प्रजा ईशते ।
4. **त्वं गुणिनं जनमीडिषे ।**
5. अणहिलपुरपत्तनं गुर्जर-राष्ट्रस्य राजधानी आसीत् तद्यूयं न वित्थ ?
6. **गोपालो यस्मिन् समये धेनूरधोक् तदा वयं व्याकरणमध्यैमहि ।**
7. अलिः पुष्पाद् मधु लेढि ।
8. **प्रातः सायं च शीतलेन जलेन नयने प्रमृज्यात् ।**
9. कंचिदपि न द्विष्यात्, कंचिदपि न हन्यात् ।

10. ये प्राणिनो घ्नन्ति ते पापेन निजमात्मानं दिहन्ति ।
11. त्वमेतां वार्त्तामवेरपि मां नाऽवक् ।
12. स खड्गेन तं मस्तकेऽहन् ।

पाठ-14

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. मिथ्या धर्म को छोड़कर सद्धर्म का आचरण करों ।
2. **मैं, पति के साथ वृद्धों के सामने जाने में शरमाती हूँ ।**
3. अभक्त बालकों को भी पूज्य सलाह देते हैं, परन्तु छोड़ते नहीं हैं ।
4. **तरुणावस्था समाप्त होने के बाद इन्द्रियों की हानि होने पर भी खेद की बात है कि वृद्ध भी विषयों की विलासिता को छोड़ते नहीं हैं ।**
5. वास्तव में शिव की जटा के समूह को, अथवा आकाश को छोड़कर क्षीण भी चन्द्र पृथ्वी पर स्थान बाँधता (लेता) नहीं है ।
6. **दुर्दशा में पड़े हुए पति को तुम्हारे द्वारा भी छोड़ा जाय तो निश्चय ही सूर्य पश्चिम में उगेगा ।**
7. अत्यंत क्रोधायमान राजाओं को वास्तव में खुद का कोई आत्मीय नहीं है । स्पर्श किया हुआ अग्नि, अच्छी तरह से होम करने वाले को भी जला देता है ।
8. **अंग शिथिल हो गया है, सिर सफेद हो गया है, मुँह में दाँत गिर गये हैं, लकड़ी लेकर चलता है, तो भी वृद्ध मनुष्य आशा रूपी पिंड को छोड़ता नहीं है ।**
9. जैसे भ्रमर प्रभात में, अन्दर बर्फवाले मचकुन्द के फूल को छोड़ने में और भोगने में समर्थ नहीं है, उसी प्रकार मैं त्याग करने और भोगने में समर्थ नहीं हूँ ।

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. अहं मृत्योर्न बिभेमि यतोमृतमिय जिनवचनमपिबम् ।
2. **तपोऽग्नौ कर्मसमिधं जुहुधि ।**
3. ते भयान्न बिभ्यति धैर्यं च न जहति ।
4. **वयं मदिरा – पानमजहीम ।**
5. तेऽसत्यं ब्रुवन्तो न जिह्रियति ।

पाठ-15

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. आश्चर्यचकित दृष्टिवाले नगरजनों के द्वारा अनेक प्रकार से अभिनन्दन कराता हुआ वह राजा अत्यन्त खुश हुआ ।
2. **हे महात्मा ! सर्व शक्ति से तुम आत्मा की रक्षा करो ।**
3. किसी के साथ सज्जन मनुष्य विरोध नहीं करता है ।
4. **नहीं दिया हुआ, तृण जितना भी धन कदापि लेना नहीं ।**
5. जो वास्तव में थोड़ा खाता है, वह बहुत खाता है ।
6. **वास्तव में जो मनुष्य अपात्र को अमृत जैसा सत्ज्ञान देता है, वह मनुष्य सज्जनों के बीच हँसी का पात्र बनता है और अनर्थ का मूल बनता है ।**
7. चलने वाले मनुष्य की कहीं पर प्रमादवश भूल होती ही है, वहाँ दुर्जन हँसते हैं और सज्जन समाधान करते हैं ।
8. **बड़ों को मारकर और छोटों को भी कपट से ठगकर जो राज्य ग्रहण होता है, वह बड़ा भी (राज्य) मुझे न मिले ।**
9. हे पृथ्वी देवी ! प्रसन्न हो, फुटकर जगह दो । आकाश से भी गिरनेवाले को पृथ्वी ही शरण है ।
10. **जैसे मूर्ख मनुष्य बोर के बदले में चिंतामणि दे देता है, उसी प्रकार अति खेद की बात है कि मनुष्य, जनरञ्जन के लिए सद्धर्म को छोड़ देता है ।**
11. ज्ञानमग्न को जो सुख होता है, उसे कहना अशक्य है । प्रिय के आलिंगन के साथ और चन्दन के विलेपन के साथ भी तुलना की जाए वैसा नहीं है ।
12. **दान, भोग और नाश ये धन की तीन गतियाँ हैं, जो देता नहीं और खाता भी नहीं, उसके धन की तीसरी गति (नाश) होती है ।**
13. सत्पुरुषों का अलंकार कौन-सा ? शील ! लेकिन सोने से बना हुआ (आभूषण) नहीं । प्रयत्न से ग्रहण करने योग्य क्या ? धर्म, लेकिन धन आदि नहीं ।
14. **समुद्र सहित पृथ्वी को जीते बिना, अनेक प्रकार के यज्ञों द्वारा यज्ञ किये बिना और अर्थिजनों को दान दिए बिना, मैं राजा कैसे बनूँ ?**

15. अचानक क्रीड़ा के रस के भंग को सामान्य व्यक्ति भी सहन नहीं करता है, तो लोकोत्तर तेज को धारण करनेवाला राजा क्या सहन करेगा ?

16. एकदम जल्दी से काम नहीं करें । अविवेक परम आपत्ति का स्थान है, वास्तव में सोचकर करनेवाले को, गुणों में लुब्ध (लोग) सम्पत्ति अपने आप प्राप्त करती है ।

17. कलहंस के समूह को पास में लानेवाली, अगस्ति की दृष्टि द्वारा पानी को निर्मल करती हुई, मोती की सीप में उज्ज्वल गर्भ को धारण करनेवाली शरदऋतु विचित्र आचरण द्वारा शोभती है ।

18. मलिन दो वस्त्रों को पहनती हुई, तप से शुष्क मुखवाली, एक वेणी को धारण की हुई ऐसी शुद्ध शीलवंती, अति निर्दय ऐसे मेरे दीर्घ विरह व्रत को धारण करती है ।

19. राम सोने के मृग को नहीं पहिचान सके । नहुष राजा ने ब्राह्मणों को पालकी में जोड़ा । ब्राह्मण की बछड़े वाली गाय की चोरी करने में अर्जुन की बुद्धि हुई, धर्मपुत्रने (युधिष्ठिर ने) दाँव में चार भाई और पटराणी दे दी । प्राय: सत्पुरुष भी विनाश के समय बुद्धि से भ्रष्ट हो जाते हैं ।

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. यदि महत्वमिच्छथ तर्हि दत्त, न मार्गयत ।
2. **जीवानां यावद् मध्ये विषमा कार्यगतिरायाति तावदितर–जनस्त्वास्तां सुजनोऽप्यन्तरं ददाति ।**
3. किल न खादति न पिबति न ददाति धर्मे च न व्ययति कृपणो न जानाति यद् यमस्य दूत: क्षणात्प्रभवति ।
4. **आशाश्वतमसारं मरणान्तं च देहावासं जानन्को जनो मृत्योरुद्विज्यात् !**
5. केऽपि प्रणयिनो मनोरथान्पिप्रति केचिच्च कुक्षिमपि न बिभ्रति ।
6. **सर्पस्य विषं तस्य शोणितेऽवेवेट् ।**
7. रजकस्तडागे वस्त्राणि नेनेक्ति ।
8. **नृपतेरिमेऽधिकारिणो भूमिं मिमते ।**
9. अहमिमं ग्रन्थं निर्माय ममशक्तिममिमि ।
10. **भगवान् हेमचन्द्रसूरिरणहिलपुर-पत्तने सिद्धहेमव्याकरणं निरमिमीत ।**
11. कर्मणो मुक्तो जीव उज्जिहीते लोकाग्रमधितिष्ठति च ।

पाठ-16

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. हे मित्र ! त्याज्य वस्तुओं में पौरव राजाओं का मन प्रवृत्ति नहीं करता है।
2. **उस कारण पति के हाथ के स्पर्श का सुख भी मुझे मिला नहीं।**
3. वास्तव में दुर्दशा में गिरी हुई स्त्रियों को धैर्य गुण कहाँ से होगा ?
4. **पहले के न्याय और पहले के धर्म में यह (राजा) तत्पर है।**
5. पृथ्वी का शासन करते हुए राम राजा ने पृथ्वी को स्वर्ग जैसी कर दी।
6. **कोई भी प्राज्ञ पुरुष स्त्रियों को स्पृहा सहित देखने में उद्यम नहीं करता है।**
7. हड्डियों में धन, मांस में सुख, चमड़ी में भोग, आँखों में स्त्रियाँ, गति में वाहन, स्वर में आज्ञा (है) मगर सत्त्व में सब कुछ प्रतिष्ठित है।
8. **जब तक मनुष्य आरम्भ बिना का होता है, तभी तक लक्ष्मी विपरीत मुखवाली होती है, परन्तु आरम्भ सहित मनुष्य के लिए लक्ष्मी स्नेही, चपल नेत्र वाली होती है।**
9. इस पृथ्वी का राज्य पवन युक्त मेघ के समान विलास वाला है, विषयों का भोग प्रारम्भ में ही मधुर है। मनुष्य के प्राण घास के अग्रभाग पर रहे हुए जलबिन्दु समान हैं, वास्तव में धर्म ही परलोक की यात्रा में परम मित्र है।
10. **परोपकार के लिए नदियाँ बहती हैं। परोपकार के लिए वृक्ष फलते हैं। परोपकार के लिए गाय दूध देती है। सज्जन पुरुषों की विभूतियाँ (वैभव) परोपकार के लिए होती हैं।**

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. त्वं दध्ना सहौदनं भुङ्क्ष्व माषान्मा भुङ्क्ष्व।
2. **सोऽक्षणा काणोऽस्ति कर्णाभ्यां च बधिरोऽस्ति।**
3. प्रातस्तमोभिस्सह क्रोष्टारोऽपि कुञ्जेषु निविशन्ते।
4. **गोः पयः प्रकृत्यातिमधुरमस्ति बुद्धिं च पुष्णाति।**
5. स्त्रियो वदनेन कमलं गत्या च हंसं जयन्ति।
6. **सत्यः स्त्रियः पत्युराज्ञां प्रभोराज्ञामिव मन्वते।**
7. हे वत्स ! रायं लभस्व रायम्, राया विना किमपि नास्ति जनाः कथयन्ति यद् **'वसु विना ना पशुः'**।

पाठ-17

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. हे मित्र ! यह आसन है, तुम इस पर बैठों ।
2. **हर मार्ग पर राज्य के लोग कुमार को प्रणाम करते हैं ।**
3. जाओ, सभी प्रकार से तुम्हारा मार्ग कल्याणकारी बने ।
4. **वह एक पुरुष है, जो कुटुम्ब का भरणपोषण करता है ।**
5. हंस वास्तव में दूध को ग्रहण करता है और उसके साथ रहे हुए पानी को छोड़ देता है ।
6. **प्रधान, राजा, मंत्री तथा सामन्तों से असहाय ऐसे मुझे, अत्यधिक सैन्य जिसने दिया उसने मुझे पवित्र दिन में भेजा ।**
7. जैसे स्वर्ग में असंख्य देव हैं और आकाश में असंख्य तारे हैं, वैसे ही परमात्मा में असंख्य गुण हैं ।
8. **धन के साधन रूप सामग्री को प्राप्त कर स्त्री भी धन कमाती है ।**
9. आपको मुनि परमपुरुष मानते हैं ।
10. **जैसे-जैसे प्रयत्न भाग्य से सिद्धि प्राप्त नहीं करता है, वैसे-वैसे धीरपुरुषों के हृदय में अधिक उत्साह होता है ।**
11. हर एक महीने में कृष्ण और शुक्ल पक्ष की चांदनी समान होती है, फिर भी उन दोनों में से एक पक्ष शुक्ल कहलाता है, क्योंकि यश पुण्य द्वारा प्राप्त होता है ।
12. **विद्या और विनय युक्त ब्राह्मण में गाय, हाथी, कुत्ता और चाण्डाल में भी पण्डित पुरुष समान दृष्टि वाले होते हैं ।**
13. रात्रि में दीपक, समुद्र में द्वीप, मारवाड़ में वृक्ष, बर्फ में अग्नि, उसी प्रकार कलिकाल में दु:ख से प्राप्त हो ऐसे, आपके इन चरण कमलों की रज प्राप्त हुई है ।
14. **असंयमी इन्द्रियों को आपत्ति का मार्ग कहा है और इन्द्रियों पर जय को सम्पत्ति का मार्ग कहा है । जो मार्ग इष्ट हो, उस मार्ग से जाए ।**
15. अग्नि, पानी, स्त्री, मूर्ख, सर्प और राजकुल ये छह तत्काल प्राण लेने वाले हैं इसलिए इनका सेवन सावधानीपूर्वक करना चाहिए ।
16. **अच्छा स्वप्न देखकर सोना नहीं और दिन में अच्छे गुरु को कहना, लेकिन खराब स्वप्न देखकर इससे विपरीत करना ।**

17. नीति में निपुण मनुष्य, निंदा या प्रशंसा करो, लक्ष्मी आओं या इच्छा से जाओं, मृत्यु आज हो या दूसरे काल में हो, लेकिन धीर पुरुष न्याय मार्ग से एक कदम भी विचलित नहीं होते हैं ।

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. **स राजा द्विषामस्ना राक्षसानप्रीणयत् ।**
2. गोप्यो यथा दधि मथ्नन्ति तथा देवा मेरुं मन्थानं कृत्वाम्भोधिममथ्नन् ।
3. **यदा भगवतो जन्म भवति तदा मघवा (सौधर्माधिपतिः) सकलसुराऽसुरेन्द्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृङ्गे भगवतो जन्माभिषेकं करोति ।**
4. जरस्यपि जना भोगतृष्णां न जहति ।
5. **अस्मिन्नासनि भवानास्तामस्मिँश्चासनेऽहमासै ।**
6. अस्य यूनो मतिः शून्या लाङ्गूलमिव वक्रास्ति ।
7. **आद्भिरस्नात्वा नृपतयो ब्राह्मणेभ्यो रायं रान्ति ।**
8. अस्य पुंसः स्कन्धै दृढौ स्तः दौषौ प्रशस्यौ स्तः तस्मादयं पुमाननड्वानिवाभाति ।
9. **पुषा तमो हन्ति ।**

पाठ-18

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. क्या होगा ? जो होना होगा वह होगा, कोई जानता नहीं कि कल क्या होगा ?
2. **तुम जल्दी मत करो, तुम्हारी यह इच्छा पूर्ण होगी ।**
3. हे मित्र वसुदत्त ! मैं क्या उत्तर दूंगा ?
4. **नवीन पश्चात्ताप रूपी अग्नि से जलते देहवाला मैं एक दिन भी स्वस्थ चित्तवाला नहीं रहूंगा ।**
5. तीव्र तप करे, अरण्य में रहे, पर्वत पर रहे परन्तु जब तक वह विषयों से दूर नहीं होगा, तब तक मोक्ष प्राप्त नहीं करेगा ।
6. **हाथी, घोड़ा और रथ से सज्ज नगर के द्वार को देखकर उसने सोचा, ''अगर इसी दरवाजे से प्रवेश के लिए राह देखूंगा तो समय का उल्लंघन होगा ।''**
7. मेरा शोक कैसे शान्त होगा ?

8. सत्य बात कहो, यदि नहीं कहोंगे तो तुम्हारा मस्तक छेद दूंगा। दुष्ट को शिक्षा करने में हत्या नहीं है।

9. भविष्य में होने वाले अकाल को जानकर सभी दूसरे देश में गये, जहाँ जीवन है, वह देश है।

10. आज मैं मित्र के साथ खाना खानेवाला हूँ, इसलिए तुम दिव्य (सुन्दर) रसोई बनाओं।

11. परलोक में सुख स्वरूप धर्म की मैं लेश भी उपेक्षा नहीं करूंगा।

12. मुझे कोई भी गलत मार्ग पर ले जाने में समर्थ नहीं है, इसलिए परलोक में सुख देनेवाले मार्ग को मैं छोडूंगा नहीं।

13. मलयकेतु (कहता है), `आर्य ! कोई मनुष्य है, जो कुसुमपुर जाता है, अथवा वहाँ से आता है।'

14. राक्षस – (कहता है), `अब जाने-आने का काम पूरा हो गया है, थोड़े दिनों में हम सब वहाँ जायेंगे।

15. हा ! हा ! हा ! वीर ! यह क्या किया ? इस अवसर पर (आपने) मुझे अलग कर दिया ? क्या (मैं) बालक की तरह आपके पीछे पड़ता या केवलज्ञान में भाग माँगता ? क्या मुक्ति में जगह कम पड़ती या क्या मैं आपको भार रूप होता ? इसलिए आप मुझे छोड़कर चले गये और इस प्रकार वीर ! वीर ! कहते हुए गौतम के मुख में ``वी'' रह गया।

16. `चाणक्य से चलित भक्तिवाले मौर्य को मैं आराम से जीत लूंगा' इस कारण अभी जो यह व्यूह आपके द्वारा वास्तव में रचा गया है, वह सब (व्यूह) हे शठ ! निश्चय ही तुम्हारे ही दूषण के लिए होगा।

17. इसके लिए योग्य पति कौन होगा ? इस प्रकार रात-दिन उसके पिता जनक राजा चिन्ता करते थे।

18. तृण से भी हल्की रुई है, रुई से भी हल्का याचक है, वह (याचक) वायु द्वारा क्यों नहीं ले जाया गया ? मुझ से भी प्रार्थना करेगा, माँगेगा।

19. पुत्र वनवास जाएगा और पति प्रव्रज्या लेंगे, यह सुनकर भी, हे कौशल्या ! तुम्हारा हृदय फटा नहीं। तुम वज्रमयी हो।

20. प्रतिज्ञा से आप भी अगर चलायमान होते हो, तो हे प्रभो ! निश्चय ही समुद्र मर्यादा का भंग करेगा।

21. दीपक के बिना जैसे अँधेरे में नहीं रह सकते वैसे ही निर्मल केवलज्ञान रूपी प्रकाश-वाले आपके बिना, इस संसार में हम कैसे रहेंगे ?

22. आप रक्षण करने वाले हो तो, सज्जनों को धर्म क्रिया में विघ्न कहाँ से आएगा ? सूर्य तपता हो तो अंधकार कैसे प्रकट होगा ?

23. यह (सार्थवाह) मार्ग में चोरों से रक्षण करेगा, शिकारी प्राणियों के उपद्रव से भी रक्षण करेगा और बीमारों को सगे भाई की तरह पालेगा।

24. पत्थर फेंकने वाले को छोड़कर कुत्ता पत्थर को चाटता है, लेकिन सिंह बाण को छोड़कर बाण फेंकने वाले के सामने जाता है।

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. अहं श्वोऽहम्मदाबादं गन्तास्मि, अपि मेघो वर्षिष्यति तर्हि मया गन्तुं न शक्ष्यते ।

2. यदि त्वं मयाऽभिहितं हितं वचोऽमंस्यथाः, तर्हि त्वमस्यां दुःखगर्तायां नाऽपतिष्यः ।

3. येयं पौर्णमास्यागामिन्यस्ति, अस्यां चैत्ये महोत्सवः प्रवर्तिष्यते ।

4. वयं यावज्जीवमध्येष्यामहे तत्त्वानि च भोत्स्यामहे ।

5. अद्य श्वो वा वयमेतान्लुण्टाकान् नूनं गृहीष्यामः ।

6. रामो वनमेष्यति तर्ह्यहं तमन्वेष्यामि । न खलु रामं विना स्थातुं लक्ष्मणः क्षमः ।

7. यथा विकसितं कुसुममल्प-समये म्लायति तथेदं यौवनमल्पसमये म्लास्यति ।

8. यथोदयं प्राप्तः सूर्योऽस्तमेति तथेदं जीवितमप्येकदिनेऽस्तमेष्यत्येव ।

9. अस्मिन्मार्गेऽनेके कण्टकास्सन्ति ततोऽस्मिन्मार्गे गन्तुं ते न प्रयतिष्यन्ते ।

10. मया विना रामो कथं जीविष्यति । तं च विनाऽहं कथं जीविष्यामि ।

11. यदि स समरादित्यकथामश्रोष्यत्तर्हि तस्य मनोऽवश्यं व्यरङ्क्ष्यत् ।

12. शिशुपालेन वरिष्यमाणा कन्या रुक्मिणी कृष्णवासुदेवेन वृता ।

13. कपिं शीतेन कम्पमानं दृष्ट्वाऽवदत्सुगृही-हे कपे ! यदि त्वमहमिव गृहमभन्त्स्यस्तर्हित्वमेवं शीतेन नाऽकम्पिष्यथाः ।

पाठ-19

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. हाथी का वजन वास्तव में हाथियों द्वारा ही उठाया जा सकता है, दूसरों के द्वारा नहीं ।
2. **सैकड़ों मधुर वचनों के द्वारा भी मैं उसे वह सब पूछूंगा ।**
3. (हाथी के मुँह में) कवल डालना सरल है (लेकिन) हाथी के मुँह में से केवल खींचना शक्य नहीं है ।
4. **'मर जाऊँगा, मर जाऊँगा' इस प्रकार की भावनावाले सत्त्व बिना के जीव फिजूल ही जीवन को धारण कर मर जाते हैं ।**
5. अगर मैं वहाँ होता तो उन दुरात्माओं को नये नये बन्धनों के द्वारा शिक्षा करता ।
6. **आपके चरणों का अवलम्बन लेने वाला अज्ञानी ऐसा भी मैं संसार का पार पा जाऊँगा क्योंकि गाय की पूँछ को पकड़ने वाला ग्वाले का बालक नदी पार उतर जाता है ।**
7. आपके साथ दीक्षा लूँगा, आपके साथ विहार करूंगा और आपके साथ दु:ख में सहन हों, ऐसे परिषहों को मैं सहन करूंगा ।
8. **हे त्रिजगत्गुरु ! आपके साथ उपसर्गों को सहन करूंगा, किसी भी हालत में मैं यहाँ नहीं रहूंगा, मेरे ऊपर मेहरबानी करों ।**
9. भागे हुए अथवा विनाश पाये हुए, आपको छोड़कर गए हुए हमारे मुख को ऋषि के हत्यारे के मुख की तरह, स्वामी किस प्रकार देखेंगे ?
10. **तुम्हारे बिना गए हुए हमको देखकर आज लोग भी हसेंगे, हे हृदय ! पानी छाँटे हुए कच्चे घड़े की तरह जल्दी से फूट जा ।**
11. मेरे द्वारा अकेली छोड़ी हुई (और बाद में) जगी हुई, यह मुग्ध नेत्रवाली (दमयन्ती) मेरे साथ मानों स्पर्धा से जीवन से भी मुक्त हो जाएगी ।
12. **समर्पित ऐसी इसे ठगकर अन्यत्र जाने के लिए मेरा मन उत्साहित नहीं है । मेरा जीवन या मरण इसी के साथ हो ।**
13. अथवा नरक जैसे जंगल में नरक के जीव की तरह अनेक दु:खों का भोगी मैं अकेला होऊँ, परन्तु वह नहीं होनी चाहिए ।
14. **तथा मेरे द्वारा वस्त्र में लिखी आज्ञा का अनुसरण कर यह मृगलोचना स्वयं स्वजन के घर जाकर कुशलतापूर्वक रहेगी ।**

15. इस प्रकार निश्चय करके और उस रात का उल्लंघन करके नल राजा पत्नी के जगने के समय से पहले ही जल्दी से चले गये ।

16. धन से मैं पूर्ण हूँ, ऐसा जानकर खुश मत हो और धन बिना मैं खाली हूँ, ऐसा जानकर खेद मत करों । खाली को भरा हुआ और भरे हुए को खाली करने में विधि (कर्म) को देर नहीं लगती है ।

17. हे वीर ! तुम्हारे बिना अब शून्य वन समान घर में कैसे जाएँ, तुम्हारे बिना किसके साथ वार्तालाप करें और हे बन्धु ! अब तुम्हारे बिना किसके साथ भोजन करें (करेंगे) ।

18. हे बन्धु ! अब हमारी आँखों को अमृत के अंजन समान अतिप्रिय तुम्हारा दर्शन कब होगा ? हे विशाल गुणों से मनोहर ! राग रहित चित्तवाले तुम कभी हमें भी याद करना ।

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. वयं श्वो ज्ञानपञ्चमीदिने शुभमुहूर्ते व्याकरणमध्येतुं प्रारब्धास्महे व्याकरणमधीत्य वयं सिद्धान्तमध्येष्यामहे ।

2. यदि यूयं सदाचारे वर्त्स्यथ तर्हि सरस्वती-लक्ष्मीभ्यां वर्धिष्यध्वे ।

3. अयं मुनिरात्मनस्तपस्तेजसा कर्माणि भक्ष्यति शाश्वते च सुखे मङ्क्ष्यति ।

4. युष्माकं कुमारैस्स्तोकेन समयेन प्रभूता विद्या ग्राहिष्यन्ते यतस्ते विनीतास्सन्ति ।

5. एतान्युप्तानि शस्यानि पक्ष्यन्ति तदा कृषीवलैर्लाविष्यन्ते ।

6. अधुनेदं करोमि पश्चादेतत्करिष्यामि, एनद्विधाय पुनः श्वस्तत्कर्त्तास्मि एवं स्वप्नतुल्ये जीवलोके को मंस्यते ।

7. यदि रामो वने नागमिष्यद् रावणेन च सीता नाऽहारिष्यत तर्हि रामायणे-ऽलेखिष्यतापि किम् ।

8. श्वः किंकरा अन्नस्येमा गोणीर्वोढारः ।

9. यूयमणहिल्लपुरपत्तनं गमिष्यथ तदा तत्रास्थितान्यतिप्राचीनानि पुस्तकभाण्डागाराणि ऐतिहासिकप्राचीनावशेषांश्च द्रक्ष्यथ ।

10. रुक्मिणी नारदायाकथयदार्य ! ममाशासीद्यद्यूयं मम पुत्रस्य प्रवृत्तिमा-नेष्यथ । नारदोऽकथयद्रुक्मिणि ! शोकं मुञ्च तवापत्यस्य गवेषणामकृत्वा पुनस्त्वां न द्रक्ष्यामि, एष निश्चयोऽस्ति, एवं कथयित्वा नारद आकाशमार्गेणोदपतत् ।

11. एतानि फलानि स्प्रष्टुमप्यस्मभ्यं न कल्प्स्यते तदा खादितुं का वार्ता ।

12. यथा सिंहं दृष्ट्वा हरिणा वनाङ्गणान्नश्यन्ति तथा भीमं दृष्ट्वा ते सर्वे योद्धारो रणाङ्गणान्नङ्क्ष्यन्ति ।

पाठ-20

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. शरद् ऋतु के कारण से चन्द्र की किरणें अधिक शोभावाली होती हैं ।
2. **बलवानों से भी बलवान यह पृथ्वी बहुरत्न वाली है ।**
3. विद्वानों की बुद्धि को वास्तव में दुसाध्य क्या है ?
4. **पुण्यशाली पुरुषों को परदेश में भी लक्ष्मी निश्चय ही साथ रहने वाली होती है ।**
5. दरिद्र (गरीब) मनुष्यों की स्त्रियाँ ज्यादातर जल्दी गर्भ धारण करने वाली होती हैं । **(गर्भं बिभ्रति इति गर्भभृत:)**
6. **अञ्जन का अंश भी धोए हुए सफेद कपड़े की शोभा के नाश के लिए होता है । (श्रिया: छिद् = श्रीछिद् तस्यै श्रीछिदे)**
7. अपने-अपने उचित कर्म को करते कमठ और धरणेन्द्र के ऊपर समान मनोवृत्ति रखनेवाले पार्श्वनाथ भगवान आपकी लक्ष्मी (शोभा) के लिए हों ।
8. **धर्म में धन की बुद्धि धारण करों, धन में कभी भी धन की बुद्धि धारण मत करों । सद्गुरु की कही हुई शिक्षा का सेवन करों, लेकिन स्त्री की सेवा न करों ।**
9. मोह के अस्त्र को जिसने निष्फल किया है, ऐसे ज्ञान रूपी बख्तर को जो धारण करता है, उसे कर्म के संग्राम की क्रीड़ा में भय कहाँ से हो ? अथवा पराजय कहाँ से हो ?
10. **आयुष्य ध्वजा समान चपल है, लक्ष्मी तरंग समान चञ्चल है, भोग सर्प की फणों की तरह भयंकर हैं, संगम स्वप्न तुल्य हैं ।**
11. यह राजा याचकों की बड़ी आशाओं को पूर्ण करनेवाला है और गाँव के नेता याज्ञिक और उनकी स्त्रियों के नित्य पूजक है ।
12. **सभी गुणों की खान, पृथ्वी के भूषण ऐसे पुरुषरत्न का विधाता सर्जन तो करता है, लेकिन उसे क्षणभंगुर बनाता है तो वह बहुत दु:ख की बात है अथवा विधाता की अज्ञानता है ।**

13. निर्धन मनुष्य को लज्जा आती है, लज्जा वाला अपने तेज से भ्रष्ट होता है, तेजरहित पराभव पाता है। पराभव से कंटाला आता है। कंटाले से शोक पाता है। शोक के वश हुआ बुद्धि से रहित बनता है बुद्धि रहित क्षय पाता है अहो ! निर्धनता सभी दु:खों का स्थान है।

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. खलप्वां स्त्रियो यवक्रियो भवन्ति।
2. **राज्ञो राज्ञ्य: स्वप्रासादादन्यत्र मार्गं वोन्मार्गं न जानन्ति अत: कूपवर्षाभ्व इव भवन्ति।**
3. सौन्दर्यतर्जितस्मरमिमं दृष्ट्वा स्त्रीणां भ्रुव उल्लसन्ति।
4. **खलप्वे इव ग्रामण्येऽयं राजा नि:स्पृहोस्ति नेर्ष्यति च।**
5. यथा धनेच्छया कोऽपि खलप्वं नेच्छति तथायं राजा धनेच्छया ग्रामण्यमपि नेच्छति।
6. **ग्रामण्यां सेनानी: स्निह्यति।**
7. श्रियै जना: प्रयतन्तेऽपि धिये न प्रयतन्ते।
8. **श्री: स्त्री वा काप्यात्मनो न, इति तत्त्वविदो वदन्ति।**

पाठ-21

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. अथवा क्या अरुण अन्धकार को भेदनेवाला होता, यदि सूर्य उसे आगे नहीं करता।
2. **आपकी प्रिय वाणी द्वारा ही आतिथ्य सत्कार हुआ है।**
3. उद्गार (ओडकार) से जैसे आहार, उसी प्रकार वाणी के द्वारा भाव मालूम पड़ते हैं।
4. **शास्त्र और लोकव्यवहार का अनुसरण करनेवाली वाणी आदर पात्र है।**
5. वास्तव में तिर्यंच भी अपने पुत्रों को अपने प्राणों की तरह सँभालते हैं।
6. **तुम भी चक्रवर्ती पुत्र प्राप्त करोंगे।**
7. जिसकी जैसी भावना होती है, उसको वैसी सिद्धि होती है।
8. **राज्य की इच्छा करनेवाला वह मरकर मिथिला महानगर के जनक राजा की पत्नी की कुक्षि में पुत्र के रूप में पैदा हुआ।**
9. खेद की बात है कि जड़ पुरुषों को उदय में विवेक कैसे हो ?

10. **ज्ञान रूपी अमृत को छोड़कर जड़ पुरुष इन्द्रियों के विषयों में (विषयों के लिए) भागते हैं, जो इन्द्रियों के वश नहीं हुआ वह धीर पुरुषों में आगे गिना जाता है ।**
11. प्रकाश सहित सूर्य के बिना दिन भी मेरे लिए रात हो गई क्योंकि अंधकार के समूह से वास्तव में सभी दिशाएँ अन्धी हैं ।
12. **वाणी और मन में स्वच्छ, बड़ों का आदर करनेवाले और उचित राजकार्य में मजबूत, ऐसे मनुष्य यहाँ राज-दरबार में हैं ।**

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. अर्यमा प्राच्यां दिश्युदयति, प्रतीच्यां च दिश्यस्तमयति ।
2. **उदीच्याम्मेरुरस्ति, अवाच्याश्च लवणसमुद्रोऽस्ति ।**
3. पुष्पाणि मुक्त्वा प्रौढस्त्रीणाम्मुखमाघ्रातुम्मधुलिडनेकश आयाति ।
4. **एभिः सम्राड्भिस्तुराषाड् ह्रियमश्नुते ।**
5. अयं पूर्जनः शास्त्रे शमे समाधौ सूनृते च प्राङस्ति ।
6. **धर्मभुद्भिः परिव्राड्भिर्धर्म उपदिश्यते ।**
7. काव्यं कविकीर्ति सर्वदिक्षु तनोति ।
8. **वृत्रघ्न आयुधं वज्रं कथयति ।**
9. जयसिंहस्य राज्याभिषेकादनन्तरं मन्त्रस्पृगृत्विग् मन्त्रपूतैर्जलाक्षतादिभिर्मङ्गलं व्यधत्त ।
10. **जैनाः परिव्राजः पादयोरुपानहौ न परिदधति ।**
11. ब्राह्मणः क्षत्रियो विट् शूद्रश्चैते चत्वारो वर्णाः सन्ति ।

पाठ-22

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. हम किस रास्ते पर हैं ?
2. **बड़े मनुष्यों का प्रयत्न, अपने कार्य से ज्यादा, दूसरों के कार्य में होता है ।**
3. आश्चर्य है कि काम-वासना बहुत बलवान है ।
4. **वास्तव में घोड़े और पवन के लिए क्या दूरी है ?**
5. पिता की मृत्यु के बाद प्रायः बडा पुत्र धुरन्धर (मुख्य) होता है ।
6. **अधिक बलवान के द्वारा घिरे हुए को, भागने के सिवाय दूसरा रक्षण का साधन नहीं है ।**

7. बुद्धि से साध्य कार्यों में बलवान भी क्या कर सकते हैं ?

8. कुमार ! सचिव का व्यवसाय बहुत गहन है, इतने मात्र से जानना शक्य नहीं है ।

9. जो तुमने तीन अलंकार खरीदे हैं, उसमें से एक दिया जाय ।

10. यह देव इस प्रकार अपने कुल की भारी प्रशंसा करता है ।

11. इन्द्र और आप में इतना ही फर्क है ।

12. गल गए तारोंवाली रात्रि, अब थोड़ी रह गई थी ।

13. नहीं देखे हुए ऊँचे–नीचे भूमि भाग पर तुम्हारे पैर वास्तव में बराबर नहीं पड़ते हैं ।

14. फूलों के गुच्छों की तरह मनस्वी मनुष्य की वृत्ति दो प्रकार की होती हैं, सर्व लोक के मस्तक के ऊपर या जंगल में ही नष्ट होती हैं ।

15. निर्गुणपना ही बहुत अच्छा है, गुण के गौरव को धिक्कार हो ।
देखो, दूसरे पेड़ आनन्द करते हैं और चन्दन के पेड़ काटे जाते हैं ।

16. वर्षा ऋतु में मोर अपने पंखों को मंडल रूप करके अच्छे कण्ठ से मधुर गीत सहित नृत्य करते हैं ।

17. सूर्यसमान देवसूरि ने वास्तव में कुमुदचन्द्र को न जीता होता तो जगत् में कौन श्वेताम्बर कमर ऊपर वस्त्र धारण कर सकते !

18. कु संसर्ग से कुलवान मनुष्यों का अभ्युदय कैसे होगा ? बोर के पेड़ के पास कदली (केले) का वृक्ष कितना आनन्द कर सकता है ?

19. इसके द्वारा आधे राजाओं को दास बनाया गया और आधे को मारा गया । आधे हाथी और आधे घोड़े इसके द्वारा (युद्ध में) सभी तैयार नहीं किये गये थे ।

20. मन, वचन और काया में पुण्यरूपी अमृत से भरे हुए उपकार की परम्परा द्वारा त्रिभुवन को खुश करनेवाले, दूसरों के परमाणु रूप गुण को भी पर्वत तुल्य मानकर अपने हृदय में खुश होनेवाले सन्तपुरुष कितने हैं ?

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. अस्माकं सैन्य इयन्तोऽरयः कति ?

2. कतिपयेऽपि देवाः कतिपया अपि नागा अस्य संनिभा नाभवन् ।

3. पर्वतेषु मेरु र्महिष्ठः प्रथिष्ठश्चास्ति ।

4. अन्नानां माषा गरिष्ठाः स्निग्धतमाश्च सन्ति ।

5. पाण्डवानां भीमसेनः स्थविष्ठो द्रढिष्ठो बलिष्ठश्चासीत् ।

6. हस्तस्य पञ्चाङ्गुलयः सन्ति तासां कनिष्ठा कतरा ?

7. भूयाननेहा गतस्तदपि रामराज्यस्य महिमानमद्यापि जना गायन्ति ।

8. अस्य शकटस्य धुरि द्वावनड्वाहौ संयोजितौ स्तः तयोरेकतरो गरीयानन्यतरश्च यवीयानस्ति ।

9. कृष्णस्याष्टाग्रमहिष्य आसँस्तासु कृष्णस्य प्रियतमा कतमासीत् ?

10. प्लवङ्गस्य लाङ्गूलं द्राघिष्ठमुष्ट्रस्य च ह्रसिष्ठमस्ति ।

11. हिन्दुस्थानस्य नगरेषु वरिष्ठं नगरं कतरज्जैनानां च तीर्थस्थानेषु वरिष्ठं तीर्थस्थानं कतमत् ?

12. चाणक्यस्य मति स्थेष्ठा वर्षिष्ठा चासीत् ।

13. सर्वाभ्यो नदीभ्यो गङ्गानद्याः प्रथिमा द्राघिमा च साधिष्ठोऽस्ति ।

14. एते सप्त छात्रास्सन्ति तेषु प्रथमे त्रयः पटिष्ठाः चरमाश्च त्रयो मन्दतमाः सन्ति ।

15. मम पार्श्वे व्याकरणस्य द्वे पुस्तके आस्तां तयोरेकतरमहं मम सहाध्यायिनयार्पयम् ।

पाठ-23

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. विनय से धन से या विद्या से, विद्या ग्रहण की जा सकती है, वास्तव में चौथा कारण नहीं है ।

2. प्रथम उम्र में बुद्धिमान पुरुषों को आत्मा के द्वारा (सम्पूर्ण मन लगाकर) विद्या ग्रहण करनी चाहिए, दूसरी (मध्यम) उम्र में धन कमाना चाहिए और तीसरी उम्र में धर्म का संग्रह करना चाहिए ।

3. राजा एक बार बोलते हैं, साधु एक बार बोलते हैं, कन्या एक बार दी जाती है, ये तीनों एक-एक बार ही होते हैं ।

4. आयुष्य के बिना बत्तीस लक्षण वाला पुरुष भी प्रशंसापात्र नहीं है । वैसे पानी के बिना सरोवर और सुगन्ध के बिना पुष्प भी प्रशंसापात्र नहीं है ।

5. दूसरे तीसरे राजा की कीर्ति को सहन नहीं करने वाला यह राजा, इस जगत् में दूसरे जगत् में और तीसरे जगत् में प्रसिद्ध है ।

6. **(मुझे) 'दो !' ऐसा वचन सुनकर शरीर में रहे हुए पाँच देवता श्री, ह्री, धी, धृति और कीर्ति उसी क्षण भाग जाते हैं । (अर्थात् 'तुम मुझे दो' ऐसा कहकर किसी के पास माँगना नहीं चाहिए) ।**
7. एक बार, दो बार, तीन बार, चार बार या पाँच बार, महान् मनुष्य अपराधों को सहन करते हैं ।
8. **पहला सुख तन्दुरुस्ती, दूसरा सुख लक्ष्मी, तीसरा सुख यश, चौथा सुख पति के हृदय में बसी हुई पत्नी, पांचवां सुख विनयवान पुत्र, छठा सुख राजा की असाधारण सौम्य दृष्टि, सातवां सुख बिना भय की बस्ती, ये सात सुख जिसके घर में है उसके घर में प्रत्यक्ष धर्म का प्रभाव दिखता है ।**
9. पाँच वर्ष तक पालन करना, दश वर्ष तक ताड़न करना, लेकिन सोलहवाँ वर्ष होने पर पुत्र को मित्र की तरह गिनना चाहिए ।
10. **सोलह विद्या देवियाँ आपका नित्य रक्षण करें ।**
11. चौबीस तीर्थंकर भगवन्त मुझ पर प्रसन्न हों ।
12. **सभी देवों से पूजित एकसौ सित्तर जिनेश्वरों को मैं वन्दन करता हूँ ।**
13. इस दिन से बासठवें दिन राजा जरूर आयेंगे ।
14. **वास्तव में बारहवें चन्द्र में पुष्य नक्षत्र सभी अर्थ का साधक होता है ।**
15. सौ रुपये वाला हजार रुपये की इच्छा करता है, हजार वाला करोड़ की इच्छा करता है, करोड़ वाला राजा बनने की इच्छा करता है और राजा भी वास्तव में चक्रवर्ती बनने की इच्छा करता है ।
16. **विक्रम के इस 2000 वर्ष में, निर्वाणप्राप्त भगवान महावीर को दो हजार चार सौ सित्तर वर्ष हुए ।**

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. अस्य नृपस्य सैन्यमस्य नृपस्य विशांशस्यापि नास्ति ।
2. **अस्माद्दिनात्षष्ठे सप्तमे वा दिने स तव नगरे समेष्यति ।**
3. सकृद् द्विर्न किन्तु शतकृत्व ऋजुकृतं शुनो लाङ्गुलमृजु न तिष्ठति ।
4. **त्रिषष्टि-शलाका-पुरुषचरितस्य दश पर्वाणि सन्ति तेषां चत्वारि पर्वाण्यहमध्यैयि ।**
5. चतुर्विंशतिस्तीर्थंकरा द्वादश चक्रवर्तिनो नव बलदेवा नव वासुदेवा नव प्रतिवासुदेवाश्चेति सर्वे मिलित्वा त्रिषष्टिः शलाका–पुरुषा एकस्यामवसर्पिण्या–मेकस्याश्चोत्सर्पिण्यां भवन्ति ।

6. स्त्रियाः चतुःषष्टिः कलाः पुरुषस्य च द्वासप्ततिः कलाः सन्ति ।

7. चैत्रमासस्य शुक्लपक्षस्य त्रयोदश्यां भगवतो महावीरस्य जन्माभवत् ।

8. अयं पाठः कतिथोस्ति ? इमं पाठं त्वं कतिकृत्व अध्यैथाः ?

9. एतस्याचार्यस्य गच्छे अष्टशतं साधवः सन्ति ।

10. सप्तविंशे वर्षेऽहं तं मोक्ष्यामि ।

11. प्रायः द्व्यशीतिं दिनानि सोऽत्र स्थास्यति ।

12. भगवान्महावीरो द्विसप्ततितमे वर्षे मोक्षं गतवान् ।

पाठ-24

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. जो सुन्दर कमलवाला नहीं है वह जल नहीं है, जो लीन भ्रमरवाला नहीं है वह कमल नहीं है, जो मधुर गुन्जनवाला नहीं है वह भ्रमर नहीं है, जिसने मेरा मन हरण नहीं किया है वह गुन्जन नहीं है ।

2. हिरण्यकशिपु दैत्य जिस-जिस दिशा को हँसकर भी देखता था, उस दिशा में भयभ्रान्त देव उसे नमस्कार करते थे ।

3. उस यात्रा में कुतूहलवश मनुष्यों के द्वारा बलभद्र और कृष्ण, शुक्ल और कृष्ण पक्ष की तरह गोरे और काले देखे गये थे ।

4. ऋषि ने प्रणाम करने वाले राजा का हाथ के द्वारा स्पर्श किया । मानों उसके अंग पर लगी हुई मार्ग की धूल को साफ न करते हों ।

5. उस आश्रम में उन दोनों भाइयों ने प्रवेश किया और नयन कमल के लिए सूर्य समान पिता को आगे देखा ।

6. और उसके बाद नौ मास और साढ़े सात दिन अधिक धारिणी ने अपनी कान्ति से जिसने सूर्य को भी न्यून किया है (सूर्य से भी अधिक तेजस्वी) ऐसे पुत्र को जन्म दिया ।

7. उस सार्थ को लूटने के लिए उस (अटवी में) बाघ की तरह चोर दौड़े और सार्थ के साथ वाले सभी मनुष्य मृग की भाँति भाग गये ।

8. उस दिन से सातवें दिन विवाह का मुहूर्त तय किया ।

9. जिसको आश्चर्य हुआ है ऐसे राजा ने उस हार को निश्चल दृष्टि से देखकर उत्तरीय वस्त्र के एक भाग में बाँधा ।

10. राजपुत्रों के साथ अनेक प्रकार के क्रीड़ासुख का अनुभव करनेवाले निरंकुशगतिवाले उस बालक के पाँच वर्ष अन्तःपुर में व्यतीत हुए ।

11. युद्ध में उसके दुश्मनों द्वारा सुन्दर धनुषों में बुद्धि न लगाकर निर्बलता और भय को धारण किया गया ।

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. भीमराजस्य पुत्री दमयन्ती स्वयंवरे नलं ववार ।
2. **अनुरक्तो लोको हाहा कर्त्तुं प्रचक्रमे तं हाहाकारं श्रुत्वा तत्रागत्य दमयन्ती जगाद, नाथ ! त्वां नाथामि यद् मयि प्रसीद द्यूतं च मुञ्च ।**
3. तस्या वाचं नलो न शुश्राव तां च ददर्शापि न ।
4. **नलः स्वीयेन भ्रात्रा पुष्करेण सह दिदेव ।**
5. सीता हेममृगं ददर्श रामश्च तं ग्रहीतुं दधाव ।
6. **रावणः सीतामपहृत्य लङ्कामानिनाय ।**
7. रामो रावणेन सह युयुधे बहवश्च योधा मम्रुः ।
8. **लक्ष्मणं मृतं मत्वान्तःपुरस्य स्त्रियश्चक्रन्दुः ।**
9. सीतामसतीं ज्ञात्वा रामस्तां तत्याज ।
10. **पक्वं धान्यं कृषीवला लुलुवुः ।**
11. भगवतो जन्म ज्ञात्वा शक्रस्स्वीयात्सिंहासनात्सप्ताष्ट पदानि दूरं गत्वा भगवन्तं तुष्टाव ।
12. **झंझावात उद्यानस्य सर्वान्वृक्षान्बभञ्ज ।**

पाठ-25

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. हे ब्राह्मण ! तुम्हारे द्वारा कलिंग में ब्राह्मण मारा गया है ? हे प्रभु ! मैं कलिंग गया ही नहीं । `निश्चय मेरे द्वारा कलिंग में ब्राह्मण मरा है' इस प्रकार सोते हुए तुमने बोला है, तो ऐसा क्यों बोला है ?
2. **क्या तुम उसको इस प्रकार नहीं जानते थे कि उस लवण नाम के दानव ने ब्राह्मणों को हमेशा पराभूत किया है, मारा है और खाया है ।**
3. `अति सुन्दर वर को हम दी गई हैं' इस प्रकार उन कन्याओं ने जाना और बहुत खुश हुई ।
4. **कर्ण राजा ने चमड़ी को, शिबिराजा ने मांस को, मेघवाहन राजा ने जीव को और दधिचि ऋषि ने हड्डियों को दिया, महात्माओं को न देने योग्य (कुछ) नहीं ।**

5. उस आश्रम में मृग के बच्चों का लालन-पालन करते, तप के कष्ट को नहीं जानते, उन स्त्री-पुरुषों ने कितना समय व्यतीत किया ।

6. वह भोजन नहीं खाता था, पानी भी पीता नहीं था और मौनपूर्वक योगी की तरह ध्यान में तत्पर रहता था ।

7. उसके वियोग के भय से मानों उसके रत्नों के आभूषण भी तेज बिना के हो गये और मुकुट की मालाएँ मुर्झा गईं ।

8. नियत समय रहते ग्रह जैसे एक राशि से दूसरी राशि में जाते हैं, उसी प्रकार वे (साधु) नियत समय रहते हुए, एक नगर से दूसरे नगर में, एक गाँव से दूसरे गाँव में और एक वन से दूसरे वन में विचरते थे ।

9. भ्रमर जैसी वृत्तिवाले वे (साधु तप के) पारणे में दाता को दुःख नहीं देते हुए प्राण बचाने के लिए भिक्षा लेते थें ।

10. मोह राजा की सेना के मानों चार अंग न हों वैसे चारों कषायों को क्षमादि अस्त्रों से सर्वथा जीते ।

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. नलदमयन्त्यौ वन आटतुः ।

2. कृष्णः कंसं जघान ।

3. रामो रावणं जिगाय ।

4. अर्जुनो द्रोणाचार्याद् धनुर्विद्यामधिजगे ।

5. यथा सम्प्रति र्महान् जैननृपो बभूव तथा कुमारपालो महान्जैननृपो बभूव ।

6. चाणक्यो नन्दस्य राज्यमाच्छेत्तुं निश्चिकाय ।

7. स्वीयस्यासनस्य कम्पेनेन्द्रो भगवतो जन्म जज्ञे ।

8. भगवता जन्ममहोत्सवसमये स्वर्गादागच्छद्भिरसंख्यै र्देवै राकाशं व्यानशे ।

9. महावीरस्य वीरतामिन्द्रः स्वीयायां सभायां नुनाव देवाश्च स्वीयानि मस्तकानि दुधुवुः ।

10. सीता सेनान्योमुखेन रामाय वाचिकं प्रजिघाय ।

11. रामराज्यं को न सस्मार ?

पाठ-26

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. उसके बाद सुग्रीव आदि सुभटों के साथ, लक्ष्मण सहित राम ने लंका विजय की यात्रा के लिए गगनमार्ग से प्रस्थान किया ।
2. **अपने सैन्य के द्वारा दिशाओं के मुख को भी ढकनेवाले करोड़ों महाविद्याधर राजा उसी समय राम के साथ चले ।**
3. विद्याधर के द्वारा प्रयाण के लिए बजाए गए अनेक वाद्ययंत्रों ने अत्यन्त गम्भीर आवाज के द्वारा आकाश को भर दिया ।
4. **स्वामी के कार्य को सिद्ध करने में अभिमानी ऐसे विद्याधर, विमानों के द्वारा, रथों के द्वारा, घोड़ों के द्वारा, हाथियों के द्वारा और दूसरे वाहनों के द्वारा आकाश में चले ।**
5. समुद्र के ऊपर से जा रही सेना के साथ राम क्षणभर में वेलंधर पर्वत पर वेलंधर नगर में पहुँचा ।
6. **वहाँ समुद्र की तरह दुर्धर और उद्धत, समुद्र और सेतु राजा ने राम की अग्र सेना के साथ लड़ाई शुरू की ।**
7. आप उन चार (श्रेष्ठियों) की चार पुत्री होंगी, वहाँ मनुष्य बने हुए उस (देव) के साथ तुम्हारा संगम होगा ।
8. **और मनक मुनि के कालधर्म होने पर श्री शय्यम्भवसूरि ने, शरद् ऋतु के मेघ के समान नयनों से अश्रुजल बरसाया ।**
9. उस नगर में समान उम्र के चार वणिक् थे, वे उद्यान के वृक्ष की तरह वास्तव में साथ में वृद्धि को पाए थे ।
10. **और उसके बाद सेवा के लिए पास में आए हुए और प्रणाम करते हुए मंत्री से राजा ने क्रोध से अपना मुँह मोड़ लिया ।**
11. क्या इस (हवेली) में जाऊँ अथवा 'क्या इस (महल) में जाऊँ' इस प्रकार हवेलियों को देखते मुनिपुंगव पूरे नगर में घूमे ।
12. **वह बोला, 'मैं मीठे और पके हुए फल वन में से लाया हूँ, ओ महर्षियो ! आप खाओ !**
13. बड़े समुद्र में से मिले हुए रत्नों से देव खुश नहीं हुए, भयंकर विष से भी भयभीत नहीं हुए, अमृत के बिना रुके नहीं, वीर पुरुष निश्चित किए लक्ष्य से रुकते नहीं हैं ।

14. ग्रहण किया है भारी किराणा जिसने और साक्षात् उत्साह समान उसने एक दिन वसन्तपुर जाने के लिए इच्छा की ।

15. और बुरे आशयवाले उन्होंने प्रत्येक स्थान के चैत्यों (मन्दिरों) को तोड़ डाला क्योंकि उनको जन्म से ही सम्पत्ति से भी धर्म को ध्वंस करने में ज्यादा रस होता है ।

16. उसके बाद राम ने दशरथ को कहा, `अगर पिताजी स्वयं म्लेच्छ का संहार करने के लिए जायेंगे, तो छोटे भाई (लक्ष्मण) के साथ राम क्या करेगा ?

17. लगता है पृथ्वी पर रहे हुए देव न हो, उस प्रकार भृकुटी को बिना हिलाए राम ने, शस्त्रों के द्वारा जैसे शिकारी मृग के झुण्ड को मारते हैं वैसे उन करोड़ों को मार डाला ।

18. विद्वत्ता और राजापना कभी भी समान नहीं है (क्योंकि) राजा अपने देश में ही पूजा जाता है और विद्वान् सभी देशों में पूजे जाते हैं ।

19. सामान्य राजाओं के घर में दुर्लभ ऐसे बहुत से पुष्पों द्वारा, पत्तों द्वारा और रत्न के आभूषणों द्वारा परम भक्ति से रोमान्चित शरीरवाले राजा ने मुनि की पूजा की ।

20. उस कुमार ने सभी प्रतिविद्याएँ सहित चौदह विद्याएँ दश वर्ष में जान लीं । सभी कलाएँ और शास्त्र को जाना । चित्रकला और वीणावादन में विशेष निपुणता प्राप्त की ।

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. राजा दशरथो दीक्षां ग्रहीतुं राज्ञीं पुत्रानमात्यांश्चाऽऽपप्रच्छे ।

2. नमस्कारं कृत्वा भरतो बभाषे `हे प्रभोऽहं भवता सह दीक्षामुपादास्ये' ।

3. तुच्छ्रुत्वा कैकेयी `मम पतिः पुत्रश्च नूनं न स्तः' इति दध्यौ उवाच च `हे स्वामिन् स्मरसि यत्त्वया स्वयं वरो ददे' तमधुना मह्यं देहि, दशरथः कथयाञ्चकाराहं स्मरामि व्रतनिषेधं विना यद् मम हस्ते तद् वृणु, कैकेयी ययाचे यदि त्वं दीक्षां गृह्णासि तदा `इमां पृथ्वीं भरताय देहि' ।

अद्यैवेयं भूमि र्भरतेन गृह्यतामिति तामभिधाय राजा दशरथो सलक्ष्मणं राममाजुहावाभिदधे च अस्याः सारथ्येन संतुष्टोऽहं प्रथममेतस्यै वरमर्पयाञ्चकार, स वरः कैकेय्याऽधुना मृगयाञ्चक्रे यद् `इमां पृथ्वीं भरताय देहि' ।

एतच्छ्रुत्वा रामो जहर्ष जगाद च यद् माता मम भ्रात्रे भरताय राज्यं ययाचे तत्सुष्ठु चकार ।

रामस्येदं वचः श्रुत्वा दशरथो यावन्मन्त्रिण आदिदेश तावद्भरतो बभाषे ।

हे स्वामिन् ! मयाऽऽदावेव भवता सह दीक्षां लातुं प्रार्थितं ततो हे तात ! कस्यापि वचसाऽन्यथा कर्तुं भवान्नार्हति ।

राजोवाच हे वत्स ! मम प्रतिज्ञां मिथ्या मा कुरु ।

रामो राजानमुवाच 'मयि सति भरतो राज्यं न ग्रहीष्यति ततोऽहं वनवासाय गच्छामि' ।

इति राजानमापृच्छ्य नमस्कारं च कृत्वा भरते उच्चै रुदति सति राम वनवासाय निर्ययौ ।

पाठ-27

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. कर्णधार के साथ उसकी मित्रता हुई ।
2. **तुमने उसको नहीं देखा, इसलिए इस प्रकार बोला है ।**
3. ऐसे जंगल के फल मैंने पहले भी खाए हैं ।
4. **ये वे सरोवर हैं, जहाँ हंस की तरह मैंने क्रीड़ा की है, ये वे ही वृक्ष हैं, जिनके फल मैंने बन्दरों की भाँति खाए हैं ।**
5. पृथ्वी को एकछत्रवाली करनेवाले महापराक्रमी उस (राजा) की आज्ञा, इन्द्र के वज्र की तरह किसी के द्वारा खण्डित नहीं की गई ।
6. **जलचर के द्वारा सागर की तरह उसका घर घोड़े, खच्चर, ऊँट और दूसरे भी वाहनों के द्वारा शोभा देता था ।**
7. जिससे तुमने प्रेम किया और उत्कण्ठा की, उसने तीर्थ में क्या दान दिया और क्या तप किया है ?

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. अद्य वयमुद्यानमव्राजिष्म तत्र वयं वृक्षस्य छायायामासिष्महि विहङ्गमा मधुरं मधुरमाराविषुः वयमन्तिके आम्रस्य वृत्रानैक्षिष्महि अस्माभिराम्रा-ण्यग्राहिषताखादिषत च, आम्राणि खादित्वा वयमुद्यानस्य सौन्दर्य-मीक्षमाणा अभ्रमिष्म (आटिष्म), तावत्येकस्यतरोरध ऊर्ध्वंस्थितो ध्यानस्थो महामुनिरस्माभिरैक्षि, स मुनि रविरिवादीपि, चन्द्रमा इव प्राकाशिष्ट वयं मुनिमवन्दिष्महि पश्चाच्च गृहं प्रत्यचालिष्म ।

2. मनो ! त्वमखिलां रजनीमाटीः ।
3. मङ्गलपाठकानां स्तुतिं श्रुत्वा राजा जागरीत् ।
4. मनुष्यभवे जन्म लब्ध्वा यूयं किमग्रहीष्ट ? पुण्यं वा पापम् ।
5. भरतेन प्रहितस्य दूतस्य वचांसि श्रुत्वा बाहुबलिरहसीत् ।

पाठ-28

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. जिसने परमार्थ को जाना है, ऐसे पण्डितों की तुम अवज्ञा मत करो। तृण के समान हल्की लक्ष्मी उनको (पण्डितों को) रोक नहीं सकती है, नये मद की रेखा से श्याम हुए हैं गण्डस्थल जिनके ऐसे हाथियों को कमल के तन्तु रोक नहीं सकते हैं ।
2. **उस राजर्षि ने इस प्रकार विचार किया `अहो ! उन कुमंत्रियों का मैंने सम्मान किया, यह निश्चय ही राख में होम किया है ।'**
3. `यह (ऋषि) शाप नहीं दे दे' इस हेतु से भयभीत बनी वे (स्त्रियाँ) शिकारी से भयग्रस्त हिरणियों की भाँति एक दूसरे को मिले बिना जल्दी भाग गईं ।
4. **वे (राजा) उसकी ओर अभिमान से आवेश करते थे, द्वेष करते थे और देखते थे । उनको इसने बाणों से ढक दिया (और) उनके प्राणों को भी हर लिया ।**
5. राजा ने रत्नों को ग्रहण किया (और) सोने को ग्रहण किया ! ग्रहण करके उसको दिया, वह चला (और) खुश हुआ ।
6. **`स्वामी ! अवसर आने पर माँगूगी, मेरा वरदान न्यास के रूप में रहे, इस प्रकार कैकेयी बोली । राजा ने भी वह (बात) कबूल की ।**
7. उसने हमारा वचन सुना ।
8. **दुष्यन्त राजा ने शकुन्तला से शादी की थी ।**
9. विद्यागुरुओं ने सभी शास्त्र उसको क्रमशः बताए ।
10. **दो घुड़सवारों को उसने देखा और पूछा, अरे ! उस सेना में खलभलाहट (भागदौड़) क्यों हो रही है ?**
11. `मेरे बारे में तुम अप्रसन्न न हो और मेरे बारे में तुम विरुद्ध न हो' इस प्रकार वह बोला । उसने लज्जा की और सखी को बोलने का आग्रह किया ।

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. यः समुद्रमधुक्षत पृथ्वींचाऽदुग्ध तस्य जयकेशिनृपस्येयं पुत्र्यस्ति ।
2. **राजा भोजनादौ नाऽराङ्क्षीत्, जलक्रीडाद्या क्रीडया नाऽरस्त, कायविकारस्य च चेष्टां नाऽरौत्सीत् ।**
3. सा कन्या ``मम पतिः कर्ण एवास्ति'' इत्यबुद्ध, अतस्त्वमपि तां कन्यां तथाऽबुद्धाः ।
4. **हे राजन् ! अस्याः कन्याया विषये त्वामन्तरायो मा व्याहत ।**
5. वचसा कस्याऽपि मर्म मा भिन्द्ध्वम् ।
6. **अहं युष्मानधुनैवास्मार्ष यूयं च अधुनैवाऽदृग्ध्वम् ।**
7. दमयन्ती हंसात्प्रशंसामश्रौषीत्, मनसा च नलमवृत ।
8. **हे स्वामिन् ! खलानां वचसा यथा मामत्याक्षीः तथा जिनभाषितधर्मं मा त्याक्षीः ।**
9. वयमस्माकं क्षेत्रस्य भूमिममास्महि ।
10. **गोपालः सायं गाः स्वगृहमनेष्ट ।**
11. सोऽमृताऽपि प्रतिज्ञां नात्याक्षीत् ।

पाठ-29

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. कोई भी पाप नहीं करे, कोई भी दुःखी नहीं हो और सारा संसार मुक्त हो, ये विचार मैत्री कहलाता है ।
2. **राम जैसे दशरथ थे, दशरथ जैसे रघुराजा थे, रघुराजा जैसे अजराजा भी थे और अजराजा जैसा दिलीपवंश था, राम की यह कीर्ति आश्चर्यकारी है ।**
3. मेरे वैराग्य का रंग दूसरों को ठगने के लिए था, धर्म का उपदेश मनुष्यों के रंजन के लिए था, विद्या का अध्ययन वाद के लिए था, हे प्रभु ! हास्य करनेवाला (करानेवाला) मेरा खुद का कितना (चरित्र) मैं (आपको) कहूँ ।
4. **'तुम मेरे हृदय में बसते हो' इस प्रकार मुझे प्रिय जो तुमने बोला, उसको मैं कपट मानता हूँ ।**
5. मेरे इस जीवन से क्या ? और बहुत से तप से भी क्या ? क्योंकि खुद के पुत्र की हार कान को सुनने में आई ।

6. उन्होंने लम्बे समय से खाली पड़े हुए किसी आश्रम स्थान का आश्रय लिया, सुखे पत्ते आदि का भोजन किया और घोर ऐसा तप किया ।

7. उसने खाखरे के पेड़ के पत्ते लेकर रहने के लिए झोंपड़ी बनाई जो कि मृगों के लिए और मुसाफिरों के लिए (भी) ठंडी छाया देनेवाली अमृत की प्याऊ (जैसी) थी ।

8. जितने में युवावस्था में (पिता का) सामने से उपकार करने के लिए (बदला चुकाने के लिए) समर्थ हुआ, इतने में पापी अजितेन्द्रिय ऐसा मैं भाग्य से यहाँ आया हूँ ।

9. अहो ! अत्यन्त घोर नरक में गिरने के लिए साक्षी समान, काम के बाण ऐसे विषयों के भेद्यपने को प्राप्त न कर ।

10. उसने युवावस्था में, कुल में उत्पन्न हुई राजकन्याओं से शादी की । उनसे युक्त वह, लता से युक्त वृक्ष की तरह शोभा देता था ।

11. किन्तु हे कुमार ! मैं पूछता हूँ, पूछने के लिए ही आया हूँ, अजीर्ण के बुखार से पीड़ित की तरह तुमने भोजन को क्यों त्याग दिया है ?

12. ऊँचे फणवाले साँपों ने उसे काटने के लिए धमणी के समान मुख से फुत्कार करते हुए पवन छोड़ा ।

13. धनपाल का सुन्दर वचन और मलय का सुन्दर चन्दन, हृदय में धारण करके वास्तव में ! कौन शान्त नहीं हुआ ?

14. मूर्छा पाए हुए आन्ध्रप्रदेश के राजा ने उस समय खून से पृथ्वी को लीपा और सींचा तथा बन्दीवृन्द ने पानी और चन्दन द्वारा उसको सींचा और लीपा ।

15. तलवार से दूसरा (साथ) और दूसरा कृष्ण (कृष्ण समान) इस राजा को दूसरे और तीसरे (सर्व) देशों से आकर राजा नमस्कार करते थे ।

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. राजा मुनिं दृष्ट्वाऽमोदिष्ट तस्य चाऽद्भुतं तपः सामर्थ्यं चिन्तयन्सभामगात् ।

2. अमी ते वृक्षास्सन्ति हि येष्वावां वानरवत्स्वैरमरंस्वहि ।

3. त्वं कं सुभगं दृष्ट्वाऽपा येन तवेदृशीदशाऽभूत् ।

4. हे सुभ्रु ! किं त्वं किंपाक–फलमच्छा आघ्राश्च वा सप्तच्छदपुष्पमच्छासीराघ्रासीश्च यतस्त्वमेवमार्तीभवसि ।

5. स बहुषु देशेष्वभ्रमत् स च बहून्यद्भुतानि वस्तून्यदर्शत ।

6. युद्धे योऽनशत् तमहं नाऽऽहसि तथाऽहं रणान्नाऽनेशम् ।

7. अहं पापानि नाऽकार्षं तदाऽहं दु:ख–गर्तायां किमपप्तम् ?

8. स पाणिना श्मश्रुमस्पृक्षत् ततश्च धनुरस्राक्षीत् ।

9. ये भुजबलेनाऽदृपन् मन्त्राऽस्त्रैश्चाऽद्राप्सु:, तान्प्रत्येकं स नृपो वश्यकार्षीत् ।

10. सिंहस्य भयेन गजा अदुद्रुवन् स्थातुं ते नाऽचकमन्त ।

पाठ–30

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. हे राजन् ! आप लक्ष्मी को वरें ! शत्रुओं को ढक दे । पृथ्वी को वरें, अत: अब सुखपूर्वक बैठों, गुरु की स्तुति करो, सन्ध्या विधि को करो और यश के द्वारा इस भुवन को ढक दो ।

2. जैसे पार्वती शंकर में संग वाली हुई और लक्ष्मी कृष्ण में संग वाली हुई, उसी प्रकार वह (कन्या) तुम्हारे संग वाली हो और शुभ के साथ संगवाली हो ।

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. सकला लब्धयो यं श्रिता: स गौतमो गणभृद्युष्माकं श्रियं पुष्यात् ।

2. सरस्वती देवी सदास्माकं मुखकमले सान्निध्यं क्रियात् ।

3. एष पुत्रो विद्याया: पारं यायात् ।

4. अहं लक्ष्मीवान्भूयासं त्वं च पुत्रवान् भूया: ।

5. एते दुष्टा मृषीरन् ।

6. विवेकमुत्साहं चाऽमश्चभ्द्यो युष्मभ्यं युष्माकं पुरुषार्थ: सिद्धिं देयात् ।

पाठ–31

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. आभूषण आदि के उपभोग से प्रभु (राजा) प्रभु नहीं होता है (परन्तु) शत्रुओं से जिनकी आज्ञा पराभूत नहीं होती है, ऐसे आपके समान प्रभु कहलाते है ।

2. हे जिनेन्द्र ! आपके दर्शन से आज मेरा जन्म सफल हुआ है, मेरी क्रिया सफल हुई है और मेरा देह धारण करना सफल हुआ है ।

3. हे स्वामी ! आपकी रूप लक्ष्मी को देखने के लिए इन्द्र भी समर्थ नहीं है (और) आपके गुणों को कहने में बृहस्पति भी शक्तिशाली नहीं है ।

4. आकाश जैसा जल है (और) जल जैसा आकाश है, हंस जैसा चन्द्र है और चन्द्र जैसा हंस है, कुमुद जैसा आकार वाला तारा है और तारा जैसा आकारवाला फूल हैं ।

5. हे मृगलोचना ! तुम्हारे मुख के आगे चन्द्र तो पिंडीभूत काजल से बना हुआ हो, ऐसा लगता है ।

6. सोई हुई, अकेली, भोली, विश्वासवाली और सती ऐसी दमयन्ती को छोड़ते हुए अल्प बुद्धिवाले नल के पाँव किस तरह उत्साहवाले हो गये ?

7. जिनकी आज्ञा अखण्ड है ऐसे इन्द्र समान उस राजा के होने पर एक चन्द्रवाले आकाश की तरह पृथ्वी एक छत्रवाली ही थी ।

8. दुर्बुद्धि (और) अल्पबुद्धिवाले उसके वचन को सुनकर, अच्छी बुद्धि वाला राजा इस प्रकार बोला, ``वास्तव में धिक्कार है कि बुद्धि बिना के (अथवा) मन्दबुद्धि वाले, अपनी आजीविका के लिए प्राणियों को मारते हैं ।

9. हे भद्र ! तुम क्या कहना चाहते हो ?

10. शुद्ध (और) कषाय रहित हृदयवाला, इन्द्रियों के वर्ग की चेष्टाओं को जीतनेवाला, कुटुम्ब के स्नेह को छोड़नेवाला योगी मोक्ष पद प्राप्त कर संसार में नहीं आता है ।

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. आसन्न-दशा गुर्जर-सुभटा मत्त-बहु-मात्तङ्गे शत्रुसैन्ये आरूढसुभटानर्ध पञ्चम-विंशानश्वानघ्नन् ।

2. हे वामोरो ! च हे पीनोरो ! च युवामत्रोपविशतम् ।

3. तीव्र-पापोदये रम्भोरुभार्यो वा शोभनभार्योऽपि वा दुःखास्पदं भवेत् ।

4. दक्षिणपूर्वायां दिशि स्थितोऽग्निः सतेजा भवेत् ।

5. समनाः कुमारः प्रणन्तुकामः पितर्यागच्छत् ।

6. सधर्माणं जनं संदृश्य सधर्माणो जनास्संतुष्यन्ति ।

7. स कुमार उपचतुरेषु जगत्सु समप्रथत ।

8. सर्वोत्तमपुरुषा जगति द्वित्रा द्विचतास्त्रिचतुराः पञ्चषा वा भवन्ति ।

9. उद्गन्धि दुग्धं सुगन्धींश्च कलमांस्त्यक्त्वा जनाः पूतिगन्धं पलं काङ्क्षन्ति ।

10. कुमारपालेन राज्ञा सुस्वामिकायामस्यां भुवि कोऽपि जनो जन्तून्नाऽहन् ।

11. प्रभूतवीर–पुरुषस्यास्य ग्रामस्य शत्रूणां भयं नोपतिष्ठते ।

पाठ-32

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. `वास्तव में मेरा व्यवहार पशुतुल्य है या सत्पुरुषों के समान है ?' इस प्रकार मनुष्य को अपना व्यवहार हमेशा देखना चाहिए ।
2. **राम का `कल्याण हो' (ऐसा) कहना और लक्ष्मण को आशिष कहना, तुम्हरा मार्ग कल्याणकारी हो, हे वत्स ! अब तुम राम के पास जाओ ।**
3. आपकी आज्ञा के पालन रूपी अमृतरस से जिन्होंने (खुद की) आत्मा का हमेशा सिंचन किया है, उनको नमस्कार हो, उनको यह अञ्जलि (हाथ जोड़ना) हो और उनकी हम उपासना करते हैं ।
4. **लम्बे समय पश्चात् भी सब को कर्म अवश्य ही फल देते हैं, इन्द्र से लेकर कीड़े तक संसार की स्थिति ऐसी है ।**
5. अत्यन्त निर्मल ऐसे शील, विनय आदि गुणों के द्वारा वह, समुद्र के मध्य में लीन होनेवाली गंगा नदी की तरह पति के हृदय में लीन हो गई थी ।

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. अनुदिनं यथाशक्ति पठ । 2. यथासूत्रं तपोनुषिष्ठ । **3. अधिवेलं भुङ्क्ष्व ।** 4. उपमूर्खमागाः । **5. अधिस्त्रि न विश्वसिहि ।** 6. अध्यात्मं लीयस्व । **7. दण्डादण्डि युद्धं मा कुरु ।** 8. अन्तर्वणं माऽट । **9. अनुनृपं बहुशो न गच्छ ।** 10. अपविचारं मा वद । **11. बहिर्ग्रामं न वस ।** 12. अनुरूपं ज्ञानं लभस्व । **13. यथाज्ञानं गुणानाप्नुहि ।**

पाठ-33

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. उसके द्वारा छाती में प्रहार किये हुए रघु राजा, सैनिकों के आँसुओं के साथ भूमि पर गिरे और पलक मात्र में व्यथा को दूर कर सैनिकों के हर्षनाद के साथ खड़े हो गये ।
2. **पापी और शठ ऐसे उन प्रधानों ने मेरे बाल पुत्र के राज्य को छीनने का प्रारम्भ किया है, उन विश्वासघातियों को धिक्कार हो ।**
3. धूल की क्रीड़ा के मित्र समान ये मृग मेरे भाई जैसे हैं । जिनका मैंने दूध पीया है, ऐसी ये भैंसें माता समान हैं ।

4. **कान से पीने योग्य, अन्य अमृत समान, देवताओं को आनन्द देनेवाली उसकी कीर्ति सुधर्म सभा में अप्सराओं के द्वारा गायी गई ।**

5. शरीर झुक गया है, काया भी लकड़ी की शरणवाली बनी है, दाँत की पंक्ति गिर गई है, कर्णयुगल सुनने में असमर्थ हो गए हैं, अन्धकार के समूह से श्याम बनी आँखें निस्तेज बन गई हैं, फिर भी आश्चर्य है कि निर्लज्ज ऐसा मेरा मन विषयों की इच्छा करता है ।

6. **जो सुख चक्रवर्ती को भी नहीं है और जो सुख इन्द्र को भी नहीं है, वह सुख यहाँ लोकप्रवृत्ति से रहित साधु को है ।**

7. वसन्त ऋतु में ठण्डी से भयभीत कोयल द्वारा गाया गया, मानों कानों से सुनने की इच्छावाले न हों, इस प्रकार पानी के भीतर रहे कमल खड़े हो गए ।

8. **जम्बुद्वीप के मध्य में पर्वतों में मुख्य मेरु नाम का सोने का बड़ा पर्वत है, वह देदीप्यमान औषधियों का भण्डार है और वह सभी देवों के रहने का स्थान है ।**

9. तुम्हे इन्द्र जैसा पति और जयन्त जैसा पुत्र मिले, तुम इन्द्राणी जैसी बनो, अन्य आशिष तुम्हारे योग्य नहीं है ।

10. **उसके बाद सीता के स्वयंवर के लिए जनक राजा द्वारा आमंत्रित विद्याधर राजा वहाँ आकर मञ्च पर बैठे ।**

11. उसके बाद सखियों द्वारा घिरी हुई, दिव्य आभूषणों को धारण (पहनना) करने वाली, पृथ्वी पर चलने वाली मानों देवी न हो, ऐसी जनक राजा की पुत्री (सीता) वहाँ आई ।

12. **जो सुबह में है वह दोपहर में नहीं है, जो दोपहर में है वह रात में नहीं है, इस संसार में पदार्थों की अनित्यता ही दिखाई पड़ती है ।**

13. मेरे दोनों नयन हमेशा (हे प्रभु) आपके मुख को निहारते रहो, मेरे दोनों हाथ आपकी सेवा में लगे रहो, और दोनों कान आपके गुणों को सुनने में मग्न हों ।

14. **यदुवंश रूप समुद्र में चन्द्र समान, कर्म रूपी सूखे घास के लिए अग्नि समान, अरिष्टनेमि (22 वें) भगवान आपके पाप को नष्ट करने वाले बनें ।**

15. हे भद्रे ! तुम कौन हो ? अथवा इस जिनालय में क्यों आई हो ? वह बोली, `हे राजन् ! आप मुझे नहीं पहिचानते ? मैं वास्तव में सभी

राजवृन्दों ने जिसके चरण सेवे हैं ऐसी राजलक्ष्मी हैं, तुम्हारी इच्छित वस्तु को प्राप्त कराने के लिए आई हूँ, कहो, आपका क्या प्रिय करूँ ?

16. **इस भवसागर में जन्मान्तर में भाई, मित्र व पदार्थों के साथ हुए नाना प्रकार के सम्बन्ध, विविध कर्म के पराधीन प्राणियों को पुनः वे अबाधित सम्बन्ध होते हैं ।**

17. यह उस इन्द्र का मित्र दुष्यन्त है ।

18. **थकान के बाद सोने वाले को निद्रा वज्रलेप की तरह लग जाती है (आ जाती है) ।**

19. पवित्र दिन है, पवित्र दिन है, खुश हो जाओ, खुश हो जाओ ।

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. साधिताशेषभरतं गगनस्थितं भरतचक्रवर्तिनश्चक्रमयोध्याभिमुखं चचाल ।
2. **आद्यप्रयाणदिनात्षष्टौ वर्षसहस्रेषु चक्रमार्गानुगो भरतोऽपि चचाल ।**
3. खेचरानपिसैन्योद्धूतरजः पूरपरिस्पर्शेन मलीमसीकुर्वन्, प्रतिगोकुलं विकसद्दृग्गोपसुदृशां हैयङ्गवीनार्धं गृह्णन् । प्रतिवनं कुम्भिकुम्भस्थलोद्भूतमौक्तिकप्रभृतीनि प्राभृतान्याददानः । प्रतिग्रामं सोत्कण्ठग्रामवृद्धानात्तानात्तैरुपानयनैरनुगृह्णन् । वृक्षाधिरूढान्नु प्लवंगान्ग्रामीणदारकान्सहर्षं पश्यन्, मलयानिल इव शनैः शनै र्गच्छन् दुर्विनीतारिशासन ऊर्वीशो भरतोऽयोध्यां प्राप ।
4. **अहम्मदाबादादग्निरथेनानन्दमागच्छतोऽर्धरात्रः संजातः ।**
5. आङ्लदेशे दशाहं स्थित्वा वयं जलमार्गेण हिन्दुस्तानं न्यवर्त्तामहि ।
6. **त्रिलोकीतिलकं श्रीमहावीरमहं नमामि ।**
7. विक्रमसंवत्पूर्वे चतुः शत्यां सप्ततौ च वर्षेषु (गतेषु) आश्विनामावास्याया अपररात्रे भगवान्श्रीमहावीरो निर्वाणं प्राप ।

पाठ-34

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. हर रोज देव, ब्राह्मण, श्रमण और गुरु की सेवा में तत्पर ऐसे उसको, अपने हाथों से उपार्जित और पूर्व पुरुषों से उपार्जित बहुत सा धन अर्थिजन मित्र, भाई और विद्वानों द्वारा भोगने के बाद बचे हुए धन को भोगनेवाले उसको अन्तिम उम्र में वसुदत्ता नाम की स्त्री को सभी अपत्यों में सबसे पहला तारक नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ ।

2. **वधू और वर को गाने वाली सभी वेश्याएँ खड़ी रहीं ।**
3. गगन (आकाश) गगन समान है, सागर (समुद्र) सागर समान है, राम और रावण का युद्ध राम और रावण समान है ।
4. **पर पदार्थ की इच्छा करना महा दु:ख है और इच्छा रहितपना महासुख है । सुख और दु:ख का यह लक्षण संक्षेप से बताया गया है ।**
5. दो बैलवाला भी मैं द्वंद्व (स्त्री-पुत्र) सहित हूँ, मेरे घर में हमेशा व्यय का अभाव है । हे पुरुष ! वह कर्म बताओ, जिससे मैं बहुत धान्यवाला बनूँ ।

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. धिया मयूरव्यंसक-छात्रव्यंसकौ नु तौ नृपौ पतद्भि: पत्रिभि:, पतद्भि: पत्रिभि: प्लक्ष-न्यग्रोधाविव रराजतु: ।
2. **स्निग्धं वाक्त्विषं तथापीठछत्रोपानहमुद्वहन् नारदस्तौ नृपौ शस्त्रपात-भयेन धवखदिरपलाशं प्रविश्यैक्षिष्ट ।**
3. तौ (नृपौ) भ्रात्रो: पुत्रयो र्नु प्रजह्रतु: । (अत्र नैमित्तिकमधिकरणम् तस्मात् निमित्त—सप्तमी)
4. **कुमारस्य पितरौ (पार्वतीपरमेश्वरौ) प्रद्युम्नस्य च मातापितरौ (कृष्णरुक्मिण्यौ) तुभ्यं क्रुद्धौ स्त:, इति मूलराज उवाच ।**
5. अश्वरथं श्रितान् द्विषो दंशमशकममन्वानो लक्षनृपश्चापं जग्राह ।
6. **तस्मिन्लक्षे नृपे इषून्वर्षति ब्राह्मण-क्षत्रिय-विट्शूद्रास्त्रेसु: ।**
7. ब्राह्मण-क्षत्रिय-विट्-शूद्रं त्राता मूलराजोऽपि जयाय चापं जग्राह, जयाय च भेरीशङ्खमुवाद ।
8. **विरोधतोहिनकुलं नु तौ (नृपौ) देवासुरैरस्तूयेताम् ।**

पाठ-35

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. प्रारम्भ किए इच्छित ग्रन्थ की समाप्ति के लिए ग्रन्थकार अभीष्ट देवता की स्तुति करता है ।
2. **प्रयत्न से पीलनेवाला (मनुष्य) रेती में से भी तेल पा ले और प्यास से पीड़ित मृगजल से भी पानी पी ले, पर्यटन करने वाला (मनुष्य) किसी दिन मृग के शृंग को पा ले, लेकिन कदाग्रही मूर्ख मनुष्य के चित्त को कोई भी साध नहीं सकता है-बदल नहीं सकता है ।**

3. हे राजन् ! अगर इस पृथ्वी रूपी गाय को दोहना चाहते हो, तो आज ही इस लोक को बछड़े की तरह पुष्ट करो, अच्छी तरह निरन्तर पोषण होने पर यह पृथ्वी कल्पलता की तरह अनेक प्रकार के फल देती है ।

4. मूर्ख से भी मूर्ख ऐसा मैं कहाँ ? और वीतराग प्रभु का स्तवन कहाँ ? अतः मैं चलकर बड़े जंगल को पार करने की इच्छावाले पंगु जैसा हूँ ।

5. सूरि बोले, भवदत्त ! यह तरुण कौन आया है ? वह बोला-हे भगवन् ! दीक्षा ग्रहण करने की इच्छा वाला मेरा छोटा भाई है ।

6. रथ की आवाज से भयभीत ये मृग, पृथ्वी को जाने छोड़ने की इच्छा नहीं रखते हो, इस प्रकार वायु के ऊपर चढ़े हुए की तरह आकाश में चलते हैं ।

7. हे सुन्दर ! व्यापार के लिए दिग्यात्रा करने की तुम इच्छा रखते हो (तो) हमारे आशिष से कुशलपूर्वक दिग्यात्रा करके जल्दी आना ।

8. जीतने की इच्छावाले एक मात्र से भी अधिक, किसी को सहन नहीं करते हैं इस हेतु से मानों, हे धरानाथ ! आपने धारानाथ को हराया ।

9. प्राणी के प्राणों को नष्ट करके जो मांस खाने की इच्छा करता है, वह मनुष्य धर्म रूपी वृक्ष के दया नाम के मूल (जड़) को उखेड़ देता है ।

10. ये धन सार्थवाह वसंतपुर जायेंगे (जानेवाला है) (तो) जो कोई भी वहाँ (वसंतपुर) जाने की इच्छा रखते हों, वे इनके साथ चले जाएँ ।

11. सर्वथा जीतने की इच्छा से रहित और पाप से अत्यन्त भयभीत आपके द्वारा तीनों जगत् जीते गए । बड़े मनुष्यों की चतुराई अपूर्व होती है ।

12. क्रिया बिना का मात्र ज्ञान वास्तव में काम का नहीं है, रास्ते को जानने वाला भी चलने की क्रिया के बिना इच्छितनगर में नहीं पहुँचता है ।

13. धन प्राप्ति की लोलुपता वाला मैं, प्यासा भी पानी नहीं पीता हूँ, भूखा होने पर (भी) खाता नहीं हूँ और रात में भी सोता नहीं हूँ ।

14. पुत्र आदि परिवार के साथ राजा दशरथ भी जाकर उनको वन्दन करने लगे और देशना सुनने की इच्छा से बैठे ।

15. भक्ति करने की इच्छावालों पर आत्मभाव होता है, वैसे ही मारने की इच्छा वाले (शत्रु) पर भी आत्मभाव रखना चाहिए ।

16. यहाँ से नजदीक रहनेवाले स्वजनों को आपकी आज्ञा से देखने की इच्छा रखता हूँ ।

17. धिक्कार हो ! धिक्कार हो ! निश्चय से मरने की इच्छा रखने वाले मैंने निंदित कर्म किया ।

18. कुमार सभी को अनुक्रम से कहे, 'वह पत्र क्या है ? किसने भेजा है, इसमें कौन सा कार्य करने के लिए कहा गया है ।'

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. विद्यार्थिनो यथा पिपठिषन्ति तथा न प्रयियतिषन्ते ।

2. चिकीर्षितानि कर्माणि अपूर्णानि सन्ति जनश्च मुमूर्षति ।

3. एष प्रासादः पिपतिषति, अतोयूयं तं न प्रविविक्षत ।

4. कुसुमान्यवचिचीषया सुधा उद्यानं गताऽस्ति ।

5. मुमुषिषु र्मुषित्वा पिपृच्छिषुः पृष्ट्वा विविदिषु र्विदित्वा जिघृक्षु र्गृहीत्वा सुषुप्सु र्सुप्त्वेव कृतकृत्यो भवेत् तथा तस्या दुःखेनानेकशो रुरुदिषुरहं तां कन्यामस्मिन्पट आलिख्यात्र चानीय कृतकृत्यो भवामि ।

6. जना धनं संचिचीषन्ति, अपि नार्पिपयिषन्ति ।

7. यूयं न मुमूर्षथ तथान्यं न जिघांसत ।

8. शूर्पणखायाः कथनेन रावणो सीतां स्वान्तःपुरमानिनीषाञ्चकार सीतायाश्चाग्रहेण रामो मृगं जिघृक्षांचकार ।

9. वल्लभेन सह युद्ध्वा कोऽपि नृपः स्वदोःशक्तिं नादिदृक्षतापि सर्वे रक्षणायेष्टदेवतामसुस्मूर्षन्त ।

पाठ-36

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

1. अज्ञानी मनुष्य को सुख से आराध सकते हैं (समझा सकते हैं) (और) विशेष ज्ञानी मनुष्य को बहुत सुख से आराध सकते हैं । (परन्तु) थोड़े ज्ञान से गर्विष्ठ मनुष्य को ब्रह्मा भी खुश नहीं कर सकते हैं ।

2. यदि तुम संसार से डरते हो और मोक्षप्राप्ति की इच्छा करते हो, तो इन्द्रियों पर विजय पाने के लिए बड़ा पुरुषार्थ करो ।

3. यहाँ से (हमारे पास से) वह दैत्य, लक्ष्मी (शोभा) को पाया है, (इसलिए) यहाँ से (हमारे पास से) विनाश के योग्य नहीं है, विषवृक्ष को भी बड़ा करने के बाद स्वयं ही उसे नष्ट करना अयोग्य है ।

4. फैले हुए तेज के द्वारा हमेशा दिशाओं को प्रसन्न करनेवाला यह सूर्य किसको अधिक आनन्द नहीं देता है ।

5. मैं कोई भी पाप वाला व्यापार (क्रिया) नहीं करूंगा और दूसरे के पास नहीं कराऊँगा, सुखपूर्वक रागरहित होकर बैठूंगा – इस प्रकार जिसके मन में इतना आग्रह है, उसको तुम कहो – कितना विवेक है ।

6. जो दूसरों को सलाह देने में होशियार हैं, उनकी वास्तव में पुरुषों में गणना कैसी ? जो खुद को सलाह देने में होशियार हैं उन पुरुषों की पुरुषों में गणना होती है ।

7. जबरदस्ती उसे खाने के लिए बैठाया, लेकिन उसने कुछ भी नहीं, खाया `मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता है', इस प्रकार बार-बार यही बोलता था ।

8. जो मनुष्य जिस प्रकार से बोध पाता हो, उसको उसी प्रकार से बोध देना चाहिए ।

9. जितने समय में मैं उतरूँ (उतने समय) नजदीक में ही रथ को खड़ा रखो ।

10. शकुन्तला के लिए वनस्पति में से फूल लाओ, इस प्रकार आपके द्वारा हमें आज्ञा की हुई है ।

11. अपने सुख की अभिलाषा रहित तुम लोगों के लिए दु:ख को झेल रहा है अथवा प्रतिदिन तुम्हारी प्रवृत्ति इसी प्रकार की है, वास्तव में वृक्ष, ऊपर से तीव्र (तेज) गर्मी सहन करता है (और) छाया द्वारा आश्रितों के परिताप (गर्मी) को मिटाता है ।

12. पापी मनुष्य की कथा करने से वास्तव में पाप को बढ़ाती है, यश को दूषित करती है, लघुता को धारण करते हैं, मन के परिणामों को बिगाड़ते हैं और धर्मबुद्धि का नाश करते हैं ।

13. काले साँप के बच्चे द्वारा चन्दन दूषित होता है ।

14. बहुत कहने से क्या ? और भी तुम्हारे मन में हो वह सब बताओ, जिससे मैं उसे जल्दी से सम्पन्न कर लूँ ।

15. स्वयंवर में आई हुई कन्याओं के साथ माता-पिता के द्वारा उसकी शादी हुई ।

16. **राक्षस – उठों उठों, अभी काल विलम्ब करना छोड़ दो । विष्णुदास को निवेदन करो कि यह राक्षस चन्दनदास को मौत से छुड़ाता है ।**
17. सभी कारण पूर्व जन्म में किये हुए कर्मों के उदय की अपेक्षा बिना फल नहीं देते हैं ।
18. **सुमित्रा ने भी, वर्षा ऋतु के बादलों जैसे वर्ण वाले सम्पूर्ण लक्षणवाले (और) जगत् के मित्र (समान) पुत्ररत्न को जन्म दिया ।**
19. राजा ने पकड़े हुए मंगल पाठक और शत्रुओं को भी छुड़ा दिया, यानी उत्तम पुरुषों के जन्म से कौन सुख से नहीं जीता है ।
20. **उसने सैन्य के समूह द्वारा पृथ्वी को दुःखी किया, शेषनाग को भार की पीड़ा बताई, शत्रुओं को यमपुरी बताई और पिशाचों को शत्रुओं का मांस खिलाया ।**
21. मोह आदि के द्वारा क्रीड़ा के हेतु से मैं क्षण में रागी बना, क्षण में विरागी बना, क्षण में क्रोधी बना और क्षण में शान्त बना ।

हिन्दी का संस्कृत में अनुवाद

1. तथा कुर्वन् राजा तस्य राज्ञ्या पुष्पावत्याऽवार्यत किन्तु तामपि स नाऽजीगणत् ।
2. **हे आर्यपुत्र ! त्वं सर्वथा दुःखं मा कृथाः, अहमचिराद् भ्रातरं बोधयिष्यामि त्वदीप्सितं च कारयिष्ये ।**
3. नमद्ग्रीवा यशोभद्रादयः शिष्या ऊचुः, भवता प्रथममस्मानपत्य-सम्बन्धः कथं न ज्ञापितः ।
4. **भूरिहर्षः सूरिरूचे, अपत्यसम्बन्धं ज्ञात्वा नूनं यूयं मणकेन मुनिनोपास्तिं नाऽकारयिष्त तस्माच्च स स्वार्थं व्यमोक्ष्यत ।**
5. तं रङ्कं प्रव्राज्य मोदकादीष्टभोजनं यथारुचि वयमबूभुजाम ।
6. **राजाऽशोकस्तं बालमानाययत्तस्य च नाम सम्प्रतिरित्यकृत ।**
7. राजाऽशोकः, दशार्हादनन्तरं सम्प्रतिं स्वराज्ये न्यवीविशत् ।
8. **कुमारस्तं लेखं वाचयामास वाचयित्वा च तूष्णीभूतः ।**
9. चन्द्रगुप्तं विषं दत्त्वा कोऽपि न घातयेदिति हेतुना चाणक्येन स दिनं प्रत्यधिकाधिकं विषाहारमभोज्यत ।
10. **मौर्यमाज्ञाप्य चाणक्येन सुबन्धुस्तस्य सचिवः कारितोऽभूत् ।**

परिशिष्ट

संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद

(1)

(1) महासत्त्वशाली, तत्त्वज्ञ, सद्बुद्धिवाले, विद्याधर के स्वामी शतबल राजा एक दिन यह विचार कर रहे थे ।

(2) स्वाभाविक अपवित्र ऐसे इस शरीर को संस्कारों के द्वारा पवित्र करके, खेद की बात है कि कितने समय रखेंगे ?

(3) वास्तव में दुर्जन की तरह यह काया, अनेक बार संस्कार करने पर भी जब संस्कार नहीं करते हैं, तब विकृत हो जाती है ।

(4) अहो ! आश्चर्य है कि बाहर गिरे हुए विष्ठा, मूत्र और कफ आदि से प्राणी लज्जित होते हैं, परन्तु काया के भीतर रही विष्ठा आदि से लज्जित नहीं होते हैं ।

(5) जीर्ण होते हुए वृक्ष के छिद्रों में क्रूर सर्प उत्पन्न होते हैं, उसी प्रकार इस शरीर में अत्यन्त पीड़ादायी रोग पैदा होते हैं ।

(6) शरद् ऋतु के मेघ की तरह यह काया स्वभाव से ही नष्ट हो जानेवाली है और उसमें पहले देखी गई और नष्ट हुई (क्षणिक) यौवन की शोभा बिजली की तरह है ।

(7) आयुष्य ध्वजा के समान चपल है, लक्ष्मी तरंग की तरह अस्थिर है, भोग साँप के फण समान हैं और संगम स्वप्न तुल्य है ।

(8) काम-क्रोध-आदि ताप से रात दिन तपाता हुआ शरीर के भीतर रही आत्मा, पुटपाक की तरह पकायी जाती है ।

(9) जिस प्रकार अशुचि में सुख माननेवाला विष्ठा का कीड़ा लेश भी वैराग्य नहीं पाता है, उसी प्रकार अति दुःखदायी विषयों में सुख माननेवाला मनुष्य, आश्चर्य है कि वह लेश भी वैराग्य नहीं पाता है ।

(10) जिस प्रकार अन्धा व्यक्ति अपने पाँव के सामने रहे कुए को नहीं देखता है, उसी प्रकार खराब परिणामवाले विषयों के आस्वाद में मनवाला मनुष्य अपने पाँव के आगे रही मृत्यु को नहीं देखता है ।

(11) प्रारम्भ में ही मधुर ऐसे विष समान विषयों से आत्मा मूर्च्छित ही रहती है, वह स्वहित के लिए जागृत नहीं होती है ।

(12) चारों का पुरुषार्थ समान होने पर भी खेद की बात है कि पापी ऐसे अर्थ-काम में आत्मा प्रवृत्ति करती है, परन्तु धर्म और मोक्ष में प्रवृत्ति नहीं करती है ।

(13) इस अपार संसार सागर में प्राणियों को महारत्न की तरह अमूल्य मनुष्यपना अति दुर्लभ है ।

(14) मनुष्य पणा प्राप्त होने पर भी देव के रूप में अरिहंत भगवान और गुरु के रूप में सुसाधु की प्राप्ति पुण्ययोग से होती है ।

(15) यदि मैं मनुष्यपने का फल प्राप्त न करूँ तो अभी पाटण में रहते हुए भी चोरों के द्वारा ठगा गया हूँ ।

(2)

जैसे-तैसे व्यक्ति को उपदेश नहीं देना चाहिए । देखो, मूर्ख ऐसे बन्दर ने सुघरी (पक्षी) को घर रहित बना दिया ।

दमनक ने कहा `यह कैसे ?'

उसने कहा, किसी वन प्रदेश में खीजड़े का वृक्ष है, उसमें लटकनेवाली शाखा में जंगली चिड़ा व चिड़िया रहते थे ।

उसके बाद किसी समय वे दोनों सुखपूर्वक रहे हुए थे, तभी हेमन्तऋतु का मेघ धीरे-धीरे बरसने लगा ।

उस समय पवनयुक्त बरसात से भीगा हुआ, रोमांचित देहवाला, दाँतों की वीणा को बजाता हुआ और कँपता हुआ कोई बन्दर खीजड़े के वृक्ष के मूल को पकड़कर बैठा ।

उसके बाद उसकी इस स्थिति को देखकर सुघरी ने कहा: `हे भद्र, तुम हाथ-पाँव सहित पुरुष की आकृतिवाले दिखते हो, तो हे मूढ़ ! ठंड़ी से क्यों दु:खी हो ? घर क्यों नहीं बनाते हो ?

इस बात को सुनकर गुस्से में आकर उस बन्दर ने कहा, `हे अद्यम ! तुम क्यों मौन नहीं रहती हो ।'

`अहो ! उसकी धृष्टता ! आज मुझ पर हँस रही है । सुई जैसे मुखवाली दुराचारिणी, अपने आपको पंडित माननेवाली, रंडा ! बोलती हुई शरमाती नहीं है ? तो क्यों न उसे मारूँ ? इस प्रकार प्रलापकर उसको कहा `हे मुग्धे ! तुम्हें मेरी चिन्ता करने की जरूरत नहीं है ।'

कहा भी है–`श्रद्धालु को कहो, पूछनेवाले को विशेष कहो, परन्तु श्रद्धा रहित को कहना तो अरण्यरुदन जैसा ही होता है । तो (हे भाई) ज्यादा कहने से क्या फायदा ?

उस समय उस बन्दर ने खीजड़े के वृक्ष पर चढ़कर उसके घोंसले के सौ-सौ टुकड़े कर दिए । इसलिए मैं कहता हूँ–`जैसे-तैसे व्यक्ति को उपदेश नहीं देना चाहिए ।'

(3)

(1) हिरण हिरण के साथ, गाय गाय के साथ, घोड़ा घोड़े के साथ, मूर्ख मूर्ख के साथ और समझदार समझदार के साथ संग करता है, समान आचार और आदतवालों के साथ मैत्री होती है ।

(2) अपार इस संसार में किसी भी प्रकार से मनुष्यभव को प्राप्त कर विषयसुख की तृष्णा में डूबा हुआ जो मनुष्य धर्म नहीं करता है, वह मूर्खों में मुख्य है, वह तो समुद्र में डूबते हुए भी श्रेष्ठ जहाज को छोड़कर पत्थर पकड़ने का प्रयत्न करता है ।

(3) विद्वान पुरुष के परिश्रम को वास्तव में विद्वान पुरुष ही समझता है क्योंकि वन्ध्या स्त्री, गर्भवाली स्त्री की प्रसववेदना को नहीं जानती है ।

(4) सूर्य उगते समय लाल होता है और अस्त समय भी लाल होता है । बड़े व्यक्ति सम्पत्ति और विपत्ति में एक समान होते हैं ।

(5) नीच जाति, अनिष्ट का समागम, प्रियवियोग, भय, दरिद्रता, अपयश और सभी लोगों का पराभव ये सभी पाप रूपी वृक्ष के फल हैं ।

(6) वास्तव में हमेशा आवाज करने में होशियार प्रत्येक वटवृक्ष पर बगले आवाज करे, प्रत्येक पिपल वृक्ष पर बिचारे कौए का-का करे, (परंतु) वह रसिले नए पान को कवल करने के उल्लास में होशियार, खेलती हुई कोयल के कंठ कुंजन की कला का लीला-विलास का क्रम कुछ और ही है ।

(7) हे भाई ! कहो, सत्संगति पुरुषों को क्या नहीं करती है । वह बुद्धि की जड़ता दूर करती है, वाणी में सत्य का सिंचन करती है, मान की उन्नति करती है, पाप को दूर करती है, चित्त को प्रसन्न करती है और सभी दिशाओं में कीर्ति फैलाती है ।

(8) जब तक लीला से उन्नत पूँछवाला सिंह नहीं आता है, तभी तक मद से उन्मत्त बने हुए हाथी वन में गर्जना करते हैं ।

(9) तपे हुए लोहे पर गिरे हुए पानी का नाम ही नहीं रहता है, वही पानी कमल के पत्ते पर रहा हुआ हो तो मोती के आकार से शोभता है। स्वाति नक्षत्र में सीप के सम्पुट में गिरा हो तो वह पानी मोती बनता है। प्राय: करके अधम, मध्यम और उत्तम गुण संगति के अनुसार होते हैं।

(10) गुणीजन अपने गुणों से ही सेवनीय हैं, लक्ष्मी से नहीं। क्या फल की ऋद्धि से रहित चन्दन का वृक्ष आनन्द नहीं देता है ?

(11) दरिद्रता समान होने पर भी अहो ! चित्तवृत्ति में कितना अन्तर है ? कुछ `नहीं दे पाए' इस कारण शोक करते हैं, तो कुछ `कुछ नहीं मिला' इस प्रकार विचार कर शोक करते हैं।

(12) कई (संत पुरुष) अत्यधिक दु:ख में भी विपरीत आचरण नहीं करते हैं, जलता हुआ भी कपूर अपनी सुगन्ध को नहीं छोड़ता है।

(13) सज्जन के संग में इच्छा, दूसरों के गुणों में प्रीति, गुरु में नम्रता, विद्या में व्यसन, अपनी स्त्री में रति, लोक निन्दा में भय, अरिहन्त में भक्ति, आत्मदमन में शक्ति, दुर्जन के संग से मुक्ति – जिसमें ये निर्मल गुण रहते हैं, वे इस पृथ्वी पर प्रशंसनीय हैं।

(14) राज्य, सम्पत्ति, भोग, सुकुल में जन्म, सुन्दर रूप, पाण्डित्य, दीर्घ आयुष्य और आरोग्य–ये धर्म के फल हैं।

(15) हे प्रभो ! हमें इच्छित की प्राप्ति नहीं होती है, उसमें आपका दोष नहीं है, वह हमारे ही कर्मों का दोष है, उल्लू दिन में नहीं देखता है तो उसमें सूर्य का दोष कैसे ?

(16) यदि सज्जनों के मार्ग का सम्पूर्ण अनुसरण शक्य न हो तो आंशिक भी अनुसरण करना चाहिए क्योंकि मार्ग में रहा हुआ खेद नहीं पाता है।

(17) विपत्ति में दीन न बनना, महान् पुरुषों के मार्ग का अनुसरण करना, न्याययुक्त वृत्ति को प्रिय बनाना, प्राणनाश के प्रसंग में भी मलिन कार्य को करणीय नहीं मानना, दुर्जनों से प्रार्थना नहीं करना, सज्जनों के इस विषम असिधाराव्रत को किसने बताया है ?

(18) शक्य बात में प्रमादी मनुष्य टपके का पात्र बनता है, अशक्य बात में मनुष्य अपराध के योग्य नहीं है।

(19) जो मनुष्य अपने और दूसरे के बल-अबल का विचार किए बिना अशक्य अर्थ में प्रवृत्ति करता है, वह विद्वानों के लिए हँसी का पात्र ही बनता है ।

(20) शक्ति होने पर बुद्धिशाली व्यक्ति को परोपकार करना चाहिए, परोपकार की शक्ति न हो तो स्व उपकार में विशेष आदर करना चाहिए ।

(21) विद्या और ध्यानयोग में अच्छी तरह से अभ्यास होने पर भी हितेच्छु को सन्तोष नहीं करना चाहिए, बल्कि उन दोनों में स्थिरता ही हितकर है ।

(22) सत्पुरुष, नम्र व्यक्तियों में दयालु, दीन का उद्धार करने में तत्पर, स्नेहपूर्वक चित्त देनेवाले के विषय में अपने प्राण भी देनेवाले होते हैं ।

(23) गुरु प्रत्यक्ष में स्तुति योग्य है । मित्र और बन्धु परोक्ष में स्तुति योग्य हैं । नौकर वर्ग कार्य के अन्त में स्तुति योग्य है । पुत्र स्तुति करने योग्य नहीं है और स्त्रियाँ मरने के बाद स्तुति करने योग्य हैं ।

(24) एकान्त सुख और एकान्त दुःख को पाया हुआ कौन है ? चक्र की धारा के समान मनुष्य ऊपर और नीचे जाता है ।

(4)

चाणक्य:– सुन्दर ! वत्स, मणिआर शेठ चन्दनदास को अभी देखने की इच्छा करता हूँ ।

शिष्य:– वैसा ही करता हूँ । (बाहर निकलकर चन्दनदास के साथ प्रवेश करके) श्रेष्ठी ! इधर–इधर ।

चन्दनदास : (अपने मन में सोचता है)

दयाहीन चाणक्य के विषय में, अचानक बुलाए हुए निर्दोष व्यक्ति को भी शंका पैदा होती है तो दोषयुक्त मुझे शंका क्यों न हो ?

इसलिए मैंने अपने घर रहे धनसेन आदि को कहा है–कदाचित् वह दुष्ट चाणक्य घर की छानबीन कराए, `तो मालिक राक्षस मंत्री के गृहजनों को सँभालना, मेरा जो होना हो सो हो ।'

शिष्य: (पास में आकर) उपाध्याय, ये श्रेष्ठी चन्दनदास !

चन्दनदास : `आपकी जय हो !'

चाणक्य : (नाटक के द्वारा देखकर) श्रेष्ठी ! आपका स्वागत है। इस आसन पर बैठो।

चन्दनदास : (प्रणाम करके) क्या आप नहीं जानते हो कि अनुचित उपचार (सम्मान) हृदय को पराभव से भी अधिक दु:ख पैदा करता है, इस कारण यहीं पर उचित भूमि पर बैठता हूँ।

चाणक्य : हे श्रेष्ठी ! ऐसा नहीं है, ऐसा नहीं है, हमारे द्वारा यह सम्भवित ही है, अत: आप इस आसन पर बैठो।

चन्दनदास : (अपने मन में सोचता है) इस दुष्ट के द्वारा कुछ बाहर लाया गया। (प्रगट बोलता है) आप जैसी आज्ञा करते हैं। (ऐसा कहकर बैठ गया।)

चाणक्य : हे श्रेष्ठी चन्दनदास ! क्या व्यापार में वृद्धि और लाभ मिल रहा है ?

चन्दनदास : (मन में सोचता है) अति आदर शंका के पात्र है। (प्रगट बोलता है) हाँ ! आपकी मेहरबानी से मेरा व्यापार अखण्डित है।

चाणक्य : चन्द्रगुप्त राजा के दोष क्या अतिक्रान्त राजा के गुणों की याद नहीं दिलाते हैं ?

चन्दनदास : (कान बन्द करके) पाप शान्त हो, ऐसा न बोलो। शरद् ऋतु की रात्रि में उदय पाए हुए पूर्णिमा के चन्द्र समान चन्द्रगुप्त राजा से प्रजा अधिक खुश है।

चाणक्य : हे श्रेष्ठी ! यदि ऐसा है तो खुश प्रजा से राजा प्रतिप्रिय (बदले में प्रिय वस्तु) चाहता है।

चन्दनदास : फरमाइए ! इस मनुष्य के पास से आप क्या चाहते हो ?

चाणक्य : हे श्रेष्ठी ! यह चन्द्रगुप्त का राज्य है, नन्द राजा का नहीं। अर्थरुचि ऐसे नन्दराजा को ही अर्थ (धन) का सम्बन्ध प्रीति उत्पन्न करता है। चन्द्रगुप्त राजा को तो आपका अक्लेश ही प्रीति उत्पन्न करता है।

चन्दनदास : (खुश होकर) हे आर्य ! आपके द्वारा मैं अनुगृहीत हूँ।

चाणक्य : संक्षेप में राजा के विषय में अविरुद्ध वर्तन होना चाहिए।

चन्दनदास : वह कौन अभागी है, जो राजा से विरुद्ध है– ऐसा आपके द्वारा जाना गया है।

चाणक्य : पहले तुम ही ।

चन्दनदास : (कान बन्द कर) पाप शान्त हो, पाप शान्त हो, ऐसा न बोले, ऐसा न बोलें । तृण को अग्नि के साथ विरोध कैसे ?

चाणक्य : यह ऐसा विरोध है, जो तुम अभी भी राजा के अहितकारी राक्षस मंत्री के गृहजन को अपने घर में लाकर रखते हो ।

चन्दनदास : आर्य ! यह असत्य है, किसी अज्ञात व्यक्ति ने आपको निवेदन किया है ।

चाणक्य : हे श्रेष्ठी ! शंका रहने दो । भयग्रस्त पहले के राजपुरुष, नगरजनों को नहीं चाहते हुए भी घर में अपने लोगों को छोड़कर देशान्तर में जाते हैं, अतः उन्हें छिपाना, गुनाह ही है ।

चन्दनदास : उस समय हमारे घर में राक्षस मंत्री के गृहजन थे ।

चाणक्य : पहले कहते थे `असत्य है' और अब कहते हो `वे थे' ये परस्पर विरोधी वचन हैं ।

चन्दनदास : इतना ही मेरी वाणी का छल-कपट है ।

चाणक्य : चन्द्रगुप्त राजा के विषय में छल का अपरिग्रह है, अतः राक्षस मंत्री के गृहजनों को सौंप दो । तुम्हारे छल का अभाव हो ।

चन्दनदास : हे आर्य ! मैं आपसे विनती करता हूँ कि उस समय, हमारे घर में राक्षस मंत्री के गृहजन थे ।

चाणक्य : तो अब कहाँ गए ?

चन्दनदास : मुझे पता नहीं है ।

चाणक्य : (थोड़ा हँसकर) क्यों नहीं जानते हो ? हे श्रेष्ठी ! सिर पर भय है, उसका प्रतिकार अतिदूर है ।

चन्दनदास : (मन में बोलता है) `क्या यह दुःख आ पड़ा है । ऊपर आकाश में मेघ की गर्जना है और स्त्री दूर है । सिर पर साँप पड़ा है और दिव्य औषधियाँ हिमालय में हैं ।

(5)

उज्जयिनी नगरी के मार्ग में बीच में एक बड़ा पीपल का वृक्ष है, उसके ऊपर हंस और कौआ रहता है । एक बार ग्रीष्म ऋतु में एक थका हुआ मुसाफिर उस झाड़ के नीचे धनुष में बाण जोड़कर सोया है ।

थोड़ी देर में उसके मुख पर से वृक्ष की छाया चली गई, अतः सूर्य के तेज से उसके मुख को व्याप्त देखकर उस वृक्ष पर रहे हंस ने दया से अपनी पाँखों को फैलाकर उसके मुख पर छाया की ।

उसके बाद अत्यन्त निद्राधीन उस व्यक्ति ने अपना मुख चौड़ा किया ।

दूसरे के सुख को सहन नहीं करनेवाला कौआ अपने दुर्जन स्वभाव से उसके मुख में बीट (विष्टा) कर भाग गया । उसी समय उस मुसाफिर ने उठकर ऊपर देखा, उसने वहाँ रहे हंस को देखा । उसने बाण से हंस को मार दिया । इसीलिए कहा जाता है 'दुर्जन के साथ न रहें ।'

दुर्जन व्यक्ति दुष्ट आचरण करता है और निश्चय ही उसका फल सज्जनों को मिलता है । रावण ने सीता का हरण किया और बन्धन समुद्र को हुआ ।

(6)

(1) न बाजुबंध, न चन्द्र जैसे उज्ज्वल हार, न स्नान, न विलेपन, न फूल, न अलंकृत बाल पुरुष को विभूषित करते है । एक मात्र वाणी ही पुरुष को अच्छी तरह से अलंकृत करती है, जो संस्कार की हुई धारण करता है । वास्तव में आभूषण नष्ट होते है, (परंतु) वाणी का भूषण हमेशा ही भूषण (रहता) है ।

(2) मनुष्य को विद्या ही वास्तव में श्रेष्ठ रुप, छीपा हुआ गुप्त धन है । विद्या ही भोग का कारण, यश=सुख का कारण और विद्या ही गुरु का गुरु है । विदेश यात्रा में विद्या ही बन्धुजन है । विद्या ही श्रेष्ठ देवता है । विद्या ही राजा में पूजी जाती है, न कि धन । (इसलिए) विद्या रहित मनुष्य पशु के समान है ।

(3) हिंसा का त्याग, परधन को चुराने में संयम, सत्यवचन, उचित काल में शक्ति अनुसार दान, परस्त्रीजन की कथा में मुंगा बनना (परस्त्री कथा का त्याग) तृष्णा के फैलाव को रोकना, गुरु में विनय करना, सभी जीवों के प्रति अनुकंपा, सभी शास्त्रों में अप्रयुक्त विधि–सुख का सामान्य से यही मार्ग है ।

आओ ! संस्कृत सीखें (भाग-3) की मार्गदर्शिका

संस्कृत वाक्य के हिन्दी अनुवाद

पाठ-1

1. दिशाओं में बादल इकट्ठे होते (जमा होते) है, आकाश में (चन्द्र, सूर्य, तारा आदि) ग्रह फीके पडते है, वर्षाऋतु कुछ प्रेरणा करती है (आती है) और कामी मनुष्य के शरीर स्वयं क्षीण होते है ।

   वाक्य में **क्षीयन्ते कामिविग्रहा :–** ये कर्मकर्तरि प्रयोग है ।
   अर्थात् कामी मनुष्यों के शरीर स्वयंमेव ही क्षीण होते है । वर्षाऋतु कामी मनुष्यों के शरीर को क्षीण करती है, ऐसी विवक्षा नहीं की है क्योंकि वर्षाऋतु को अल्प प्रयत्न करना पडा है ।
2. **सभी मनुष्य धन के द्वारा अक्कड (गर्विष्ठ) होते है और दूसरा विद्या के द्वारा अक्कड होते है, विद्या और धन के द्वारा समृद्ध होने पर भी सज्जन ऐसा है जो अक्कड नहीं होता । (ऐसे श्लोक एक कृष्ण नाम के राजा को उद्देश्य करके कहे गए है ।)**
3. दिशाओं को लहराता हुआ और कदंब वृक्षों को भी हिलाता हुआ यह पवन मेरे मन को हिलाता है और मेरी आशा का छेद कर देता है ।
4. **उतने में गधा एकदम उछला । (=भडक उठा ।)**
5. हे भीरु ! जिससे तुम तिरस्कार की शंका रखते हो, वह ये तुम्हारे संगम के लिए उत्सुक खडा है, प्रार्थना करनेवाले मनुष्य लक्ष्मी को प्राप्त करे या न करे, परंतु लक्ष्मी ने जिसको मिलने की इच्छा की है ऐसा मनुष्य लक्ष्मी के द्वारा मुश्किल से प्राप्त किया जाय ऐसा कैसे हो ?
6. **इस बीच कोई बंदर हवा और वर्षा से पीडित, रोमांचित शरीरवाला दांतों की वीणा को बजाता हुआ और थरथर कांपता हुआ शमीवृक्ष के मूल में आकर बैठा ।**

पाठ-2

1. चार समुद्र की जिसे सीमा है ऐसी यह पृथ्वी का वह रक्षण करता है, पाप से डरता है, हमेशा उदारमति वाला है, जो याचकों से धन को

भी छिपाता नहीं है, ऐसा धीर पुरुष बडे भी कार्य समुह में व्याकुल नहीं होता है ।

2. **जो क्षमावान पुरुष है वह अपराधवाले साधुओं के प्रति भी क्षमा करता है, स्तुति करनेवाले बन्दी समूह के द्वारा बोली हुई वाणी जिसे निरंतर उत्तेजित-उत्साहित करती है ।**

3. जिसकी मति नष्ट नहीं होती, जो शत्रु समूह का नाश करता है, वह व्याधि का प्रतिकार करता है और प्रजा में अच्छी तरह से निवास करता है ।

4. **जो परस्त्रिओं से डरता है, जो युद्ध में मति करता है (मजबूत करता है), जिसके शत्रुओं की स्त्रियाँ दु:ख से पीडित होकर बालों को बांधती नहीं है । (शत्रुओं को वश किया है ।)**

5. खड्गलता (बडी तलवार) को तीक्ष्ण करता है, तलवार रुपी चन्द्रिका (छोटी तलवार) को तीक्ष्ण करता है, युद्ध में तत्पर जिसका सैन्य है, वह गात्र (शरीर) को जल्दी तीक्ष्ण करता है । (मजबूत करता है ।)

पाठ-3

1. **अहो ! बाहर गिरे हुए विष्टा, मूत्र और कफ आदि के द्वारा ये प्राणी रोष करते है । (जबकि) काया के अंदर रहे हुए विष्टा आदि के द्वारा रोष क्यों नहीं करते है ?**

2. हमेशा गाय की पूजा करते है, भक्ति के द्वारा ब्राह्मणों की पूजा करते है, लोक में जिसकी कीर्ति बढती है और जिसकी लक्ष्मी बढती है ।

3. शब्दादि विषय जिसे आपत्ति बिना सुख देते हैं, जो हमेशा लक्ष्मी के द्वारा सुख का अनुभव करता है और विद्या के द्वारा सुखी होता है ।

4. **इस प्रकार वहाँ नगरजनों के खेलने पर, स्वामी (प्रभु) ने विचार किया–क्या ऐसी क्रीडा किसी स्थान पर देखी है ?**

5. कमलों के फल द्वारा और मूल द्वारा मुनि की तरह जो इस प्रकार की मेरी (हंस की) वृत्तियाँ (आजिविका) है, उस विषय में भी आज दंडधारी तुम्हारे जैसे पति के द्वारा पृथ्वी (प्रजा) क्यों लज्जित नहीं होती है ।

पाठ-4

1. ...और इस प्रकार होने पर, हे महाराज ! जो इन जिनवचन रूपी अमृत से बाहर रहे हुए संसार रूपी गर्भ में रहे जन्तु, बिचारे मजबूत कर्म की परंपरा रूपी डोरी से निरंतर बंधे जाते है, असंतोष रूपी विषय की (तृष्णा) भूख के द्वारा पीडित होते है, विषयों की आशा रूपी तृषा की गरमी के द्वारा सतत तप्त रहते है, मिथ्यात्व रूपी महाकोढ रोग से ग्रहण किया जाते है, दूसरों की इर्ष्या रूपी शूल से पीडित होते है, दीर्घ काल तक संसार में रहने के द्वारा जीर्ण होते है, राग रूपी महाज्वर से बार-बार अतिशय जलते है, काम रूपी काचपटल के द्वारा अन्धे किये जाते हैं, भाव दरिद्रता से आक्रमित किये जाते है, वृद्धावस्था रूपी राक्षसी से हराए जाते है, मोह रूपी अंधकार के द्वारा ढके जाते है, इन्द्रिय रूपी घोडों के द्वारा खींचे जाते है, क्रोध रूपी तीव्र अग्नि के द्वारा पकाये जाते है, मान रूपी महापर्वत से आश्रित किये जाते है, माया रूपी जाल से घेरे जाते है, लोभ रूपी सागर के बहाव से बहे जाते है, (खीचे जाते है), इष्ट वियोग रूपी वेदना से तपाये जाते है, अनिष्ट के संग रूपी ताप से अतिशय दु:खी कराये जाते है, काल परिणति की परवशता से चक्कराए जाते है, कुटुम्ब के पोषण की पराधीनता के कारण अतिशय दु:खी होते है, कर्म रूपी कर (टॅक्स) ग्रहण करनेवालों के द्वारा हैरान किये जाते है, महामोह रूपी निद्रा से मूर्च्छित कराये जाते है, मृत्युरुपी महामगरमच्छ के द्वारा कवल किये जाते है ।

पाठ-5

1. शराब पीनेवाला व्यक्ति भूत से पीडित की तरह बार-बार नांचता है, शोकातुर की तरह बार-बार रोता है और दाह ज्वर से ग्रसित की तरह बार-बार भूमि पर आलोटता है । (सोते हुए करवट बदलता है ।)
2. **क्या तुम अप्सरा अतिशय हो ? अथवा क्या अति उद्यान देवता हो ? (क्योंकि) जो तुम्हारा अतिशय लावण्य है वह तुम्हारे दिव्यता को अच्छी तरह से कहता है । (द्वाश्रय काव्य सर्ग-9, श्लो-42)**

3. क्रोध से धमधमे हुए मनुष्य के प्रति मधुर वचन कलह को बढाने वाला है । (जैसे) तपा हुआ घी वास्तव में पानी के द्वारा अतिशय जलता है, (भडकता है) इसमें कोई संशय नहीं है ।

'द्वाश्रय महाकाव्य सातवाँ सर्ग'

4. अब दूसरे दिन, पृथ्वी का रक्षण करनेवाले, इन्द्र के साथ स्पर्धा करने वाले, तथा उस (अतिशय रुपवाली होने से प्रसिद्ध) कन्या की (मरुदेश के राजा महेन्द्र की बहन को पाने की) इच्छा करनेवाले उस दुर्लभ राजा ने नगरी में प्रवेश किया ।।76।।

5. उस वक्त (नगरी में प्रवेश करते समय) व्यापारियों के मार्ग (बाजार) में जाते हुए उस (दुर्लभ राजा) को देखकर, कोई स्त्री (दुर्लभ के रुप से आकर्षित हुई) पीछे जाती हुई, इष्ट वस्तु को खरीदने वाली नहीं हुई । (खरीदना भुल गई) ।।77।।

6. हमें संताप करनेवाला यह दुर्लभ, वास्तव में त्रिपुर असुर का दाह करनेवाला हर (शिव) का विजेता काम है । इस प्रकार दुर्लभ की प्रशंसा किये जाते हुए (किसी स्त्री के प्रशंसा किये जाने पर) कौनसी स्त्री उस समय उसकी प्रशंसा करनेवाली नहीं हुई ? ।।78।।

7. ईन्द्र के समान उस दुर्लभ की इच्छा करती हुई, उसकी ओर जाती कोई स्त्री, उस समय पीछे आते हुए अपने बालक की निंदा करने लगी ।।79।।

8. अत्यंत विलासवाली (और) नारिओं के प्रति पूजा के योग्य ऐसी कोई स्त्री ने उस (दुर्लभ) को लक्ष्य करके युं ही कान को खुजलाती हुई हाथ के मूल (कक्षा) को उसे (दुर्लभ राजा को आकर्षित करने के लिए) बताए ।।82।।

9. उस दुर्लभ के आगमन के उत्सव में (वाजींत्र के आवाज से) बार-बार सुचित होने पर (दुर्लभ राजा के दर्शन करने में अति उत्सुकता से) कोई स्त्री, बार-बार खाते और बार-बार मूत्र करते बालक को छोडने के लिए अत्यंत प्रयत्न करने लगी ।।85।।

10. आंखो को अत्यंत आच्छादित करती हुई निरंगी (मुख ढकनेवाले वस्त्र के अंचल) को कोई कुलांगना ने ऊपर किया और कुटिलता से चलती हुई (उसने) आगे जाती हुई स्त्री को (जल्दी से चल इस तरह) सामने से तर्जना की ।।86।।

11. काम (खाने की अभिलाषा) के द्वारा निंदित प्रकार से (बडे कवलों से) खाती हुई स्त्री, जिस तरह लज्जा को गर्हित रुप से (एकदम) छोड देती है, उसी तरह काम से गर्हित (निर्दय) पीडा को पाती, लावण्य रूप अमृत मय उस (दुर्लभ राजा) को, दृष्टि से गर्हित रूप से (निन्दित हो इस तरह निरंतर) खाई जाती (देखती) किसी स्त्री ने लज्जा को एकदम से छोड दिया ।।87।।

12. अतिशय शोभित वह दुर्लभ राजा, अत्यंत शोभा वाली, अनुचित बोलने वाली स्त्रियों को क्षुब्ध करता हुआ स्वयंवर मंडप में गया ।।89।।

13. बार-बार होनेवाली शोभा जिसे है ऐसे राजाओं के प्रति, श्रेष्ठ होनेवाली शोभा है जिसकी ऐसा दुर्लभ राजा मंडप की पवित्रता को करता हुआ वहाँ (मंडप में) ऊचित आसन पर बैठा ।।90।।

पाठ-6

1. जो झूठी बातों के द्वारा कभी भी बढाई (होशियारी) नहीं करता है, (परंतु) युद्ध में शत्रुओं के समुह को दो हाथों से बिखेरता हुआ सामना करता है ।

2. वह रत्न के आभूषणों की किरणों से आकाश का, चित्रों के द्वारा चित्रित करता है और जिसके बडे चित्र के द्वारा लोग आश्चर्य पाते है ।

3. व्यायाम से मजबूत देहवाला होने पर भी जो गर्व नहीं करता है (वह) सुन्दर है । कभी किसी (स्व) प्रयोजन में मंद होता है, परंतु दूसरों के बडे प्रयोजन में कभी मंद नहीं होता ।

4. जो सभी शत्रुओं को बंधन के द्वारा बांध देता है, परंतु ज्ञान के द्वार कर्मक्षय करता हुआ आत्मा को बंधन में से छुडवाता है ।

5. वहाँ जलचर जीव, उत्सुक होने पर एक दूसरे को स्वेच्छा से खाते है, मच्छीमारों के द्वारा पकडे जाते है और बगुले आदि के द्वारा निगले जाते है ।

6. चमडी को ग्रहण करनेवालों के द्वारा उखेडे जाते है, खाने की इच्छावालों के द्वारा सलिये पर सेके जाते मांस की तरह सेके जाते है और पकाए जाते है, चर्बी के अर्थियों द्वारा नीचोये जाते है ।

7. वीरकुमार, ऊपर चढकर कुमारों को घोडे की तरह चलाते है, बडे बलवानों में मुख्य वीरकुमार, देवता की भी पीठ पर आरुढ हुए ।

8. उसके बाद दुष्ट बुद्धिवाले देव ने, विकराल वेताल रुप को धारण करके पर्वतों को भी छोटा करते हुए, बढने के लिए प्रारंभ किया ।

9. पाताल के समान उसके मुख में जीभ के द्वारा तक्षक सांप की तरह आचरण किया गया और ऊँचे मस्तक रूपी पर्वत पर रहे पीले बालों के द्वारा दावानल की तरह आचरण किया गया ।

10. उसकी अति भयंकर दो दाढ करवत के समान हुई और दोनों आँखें अत्यंत जलती हुई अंगारे की सगडी के जैसी हुई ।

11. जितने में वह बढने से अटका नहीं, उतने में महाबलवाले वीर स्वामी के द्वारा पीठ के ऊपर मुष्टि से मारकर उसे वामन कर दिया गया ।

12. खेद की बात है, कि शराब के पान में विवश (परवश) किया गया है मन जिसका, ऐसे पापी लोग माता के साथ पत्नी तुल्य आचरण करते है और पत्नी के साथ माता के तुल्य आचरण करते है ।

13. शराब से जिसका मन चलित हुआ है ऐसा मनुष्य पराया अथवा अपना (कुछ भी) जानता नहीं है । बिचारा अपने आप को स्वामी जैसा और स्वामी (मालिक) को नोकर जैसा मानता है ।

14. हमेशा मांस के भोजन को करता जो व्यक्ति दया करने की इच्छा करता है, वास्तव में वह जलती हुई अग्नि में बेल को रोपने (उगाने) की इच्छा करता है ।

15. जो मन की शुद्धि को धारण किये बिना मुक्ति की इच्छा से तप करते है, वे नाव को छोडकर दोनों हाथों से समुद्र को तैरने की इच्छा करते है ।

16. ज्यादा कहने से क्या ! जो यौवन को उचित है, चित्तवृत्ति को पसंद है, पंडितों को आराधना करने योग्य है, उभयलोक को बाधक नहीं है और भी, विवेक की पूर्णता द्वारा, कुलाभिमान की स्थिरता द्वारा, विनय के सुंदर अभ्यास द्वारा और सत्त्ववृत्ति की बहुलता द्वारा जिस प्रकार धर्म में कमजोर नहीं होता है, जिस प्रकार अर्थ क्षय नहीं पाता है, जिस प्रकार राजलक्ष्मी उन्मनवाली नहीं होती है, जिस प्रकार कीर्ति मंद नहीं होती है, जिस प्रकार प्रताप कम नहीं होता है, जिस प्रकार गुण श्याम (फीके) नहीं होते है, जिस प्रकार श्रुतज्ञान हँसीपात्र नहीं बनता है, जिस प्रकार परिजन वर्ग उदासीन नहीं होता है, जिस प्रकार मित्रवर्ग ग्लान नहीं होता है, जिस प्रकार शत्रु चंचल नहीं होते है उस प्रकार उस राजा ने सब किया ।

``द्व्याश्रय महाकाव्य सांतवाँ सर्ग''

17. जो स्वयंवर में जल्दी से आये हुए है, उन विवाह की इच्छावाले राजाओं को, उस दुर्लभ देवी की द्वारपालिका ने, आगे कहे जाने वाले प्रकार से स्तुतिपूर्वक कह बताई–

18. हे सुन्दर स्त्री (सुभ्रु) ! जीवन जीने की इच्छा से शत्रुओं के साथ जिसे लडने की इच्छा नहीं है और जीने की इच्छा वाले को जीवन देनेवाला यह अंग देश का राजा है, क्या तुम इसे चाहती हो ? ।।97।।

19. जो पूर्व दिशा में ईन्द्र की तरह रहता है तथा जो शास्त्र के प्रति पंडित की तरह प्रवृत्ति करता है परंतु मूर्ख की तरह खडा नहीं रहता, शूरवीर की तरह आचरण करता है ऐसे उस अवन्ती के राजा के प्रति तुम इन्द्राणी की तरह आचरण क्यों करती हो ? ।।99।।

20. जिसकी वाणी दूध जैसी मीठी है और सौंदर्य दूध जैसा है ऐसे चेदिदेश के राजा के प्रति, अप्सरा जैसी तुम, क्या क्रीडा करने के लिए तैयार हो ? ।।100।।

21. जो कोप से पाप कर्म में प्रवृत्ति नहीं करता और लोभ से पाप कर्म में प्रवृत्ति नहीं करता और नहीं काम से पाप कर्म में प्रवृत्ति करता है, ऐसे इस मथुरा के राजा को क्या तुम पसंद करती हो । (भजती हो) ? ।।103।।

22. जिसके प्रति लक्ष्मी दु:ख का अनुभव नहीं करती और सरस्वती के द्वारा वैर नहीं किया जाता, जिसने यश का शंख बजाया है वे ये श्री गुर्जर देश का राजा है ।।106।।

23. तथा नमस्कार करते और सेवा करते ऐसे जिन तपस्विओं को आश्चर्य किया है, वह यह नाम से दुर्लभ राज को क्या तुम वरने की इच्छा करती हो ? ।।107।।

24. उसके बाद हाथ को ऊँचा करती हुई दुर्लभ देवी ने, उस दुर्लभ राजा के कंठ में वरमाला पहनाई और कोपायमान राजाओं का समुह, ऊँची पूंछ को करते हुए घोडों के साथ चला गया ।।108।।

25. वस्त्र को अच्छी तरह पहनते हुए जो यज्ञ के लिए यज्ञ के उपकरण इकट्ठे करते है, ऐसे मंत्र को बोलते हुए ब्राह्मणों ने उन दोनों का हस्त मिलाप किया ।।110।।

पाठ-7

1. (मन में) दया का भाव रखना (आसेवन करना) दूसरों का पराभव नहीं करना, क्रोध भाव को छोड देना, दुर्जन का संग छोड देना, झूठे वचन बोलना त्याग करना, गुणानुराग का अभ्यास करना, चोरी करने का मन नहीं करना, झूठा अभिमान छोड देना, परस्त्री गमन की इच्छा नहीं करना, धन आदि का गर्व छोड देना, दु:खिओं को दु:ख से रक्षण करने की इच्छा करना, गुरुजनों की पूजा करना, देवों के समुह को वन्दन करना, परिजनों का सन्मान करना, प्रेमी लोगों का पोषण करना, मित्र वर्ग का अनुसरण करना, दूसरों की नींदा नहीं बोलना, अन्य के गुण ग्रहण करना, अपने गुणों की प्रशंसा करने में लज्जा करना, छोटा भी सुकृत याद करना, परोपकार करने में प्रत्यन करना, विशिष्ट लोगों से पहले बोलना, धार्मिकजन की अनुमोदना करना, अन्य के मर्म (गुप्त बातों) को प्रकट नहीं करना, अच्छे वेष और अच्छे आचार वाले बनना, फिर आपको सर्वज्ञ के कहे हुए सद्धर्म की योग्यता (प्राप्त) होगी ।

2. **वास्तव में वैद्य के द्वारा रोगी को देखकर रोग का मूल कारण इस प्रकार है, वह जानना (प्राप्त करना) चाहिए। रोगी की शारीरिक प्रकृति पहले ही समझनी, शरीर का संहनन (संरचना) विचार करना, शरीर का प्रमाण जानना, रोगी के अनुकूल पथ्य आहार–पानी का विचार करना, शक्ति को जाननी, आहार के रस-कस जानने, व्यायाम का महत्त्व जानना, उम्र का प्रमाण परखना चाहिए।**

3. सुख संतोष से पैदा होता है, यह जानकर जो ज्ञात परमार्थ हुआ है, ऐसा प्राणी भी यदि इन्द्रियों के द्वारा बाधित होता हो, तो यहाँ महामोह ही कारण है।

4. **सभी शास्त्रों को पढकर अपने आपको पंडित मानने वाला व्यक्ति, (पांच इन्द्रिय के) विषयों में आसक्त रहता है, तो यहाँ महामोह ही प्रकट होता (दिखता) है।**

5. जिनेश्वर परमात्मा संबंधित जैनेन्द्र मत को जानने वाले पुरुष, जिस कारण से लोक में कषाय के वश प्रवर्तन करनेवाले होते है, वह महामोह का ही शासन (आज्ञा) है।

6. **कुलवान स्त्रियाँ, अपने विश्वासु पति का त्याग करके जो दूसरे पति (परपुरुष) में प्रवृत्ति करती है, वह महामोह का फल (कार्य) है।**

7. मैं पौद्‌गलिक भावों का कर्ता नहीं हूँ, करानेवाला भी नहीं हूँ और अनुमति देनेवाला भी नहीं हूँ, इस प्रकार के आत्मज्ञान वाला (साधु) किस तरह कर्म से लिप्त होता है ?

8. **समताकुण्ड में स्नान करके जो पाप से उत्पन्न होनेवाले मैल का त्याग करके फिर से मलीनता को प्राप्त नहीं होता, वह अन्तरात्मा में लीन, परम पवित्र है।**

9. ज्ञान के द्वारा ज्ञेय पदार्थ को देखकर मुनि को भय के साथ कहाँ रहना है ? (क्योंकि उन मुनिओं को) कही पर भी छीपाना नहीं है, रखना नहीं है, छोडना नहीं है, त्याग करना नहीं है और कही भी देना नहीं है।

10. हमेशा दुध और पानी की तरह मिले हुए कर्म और आत्मा को जो अलग करता है, वह मुनि रुपी हंस विवेकवाला है ।

11. अपने-अपने कर्म का अनुभव करनेवाला पुरुष अपने अपने कर्म में आवेश (आग्रह) वाले होते है । मध्यस्थ पुरुष उनमें न तो रागवाले होते है, न ही द्वेष वाले होते है ।

12. आगे-आगे बढती है तृष्णा जिनकी ऐसे जड पुरुष ज्ञानामृत को छोडकर मृगतृष्णा (मायाजल) समान इन्द्रिय के लिए दौडते है ।

'द्व्याश्रय महाकाव्य ग्यारहवाँ सर्ग'

13. उसके बाद चांदी के पात्र जैसे उज्ज्वल मुखवाली देवी (मयणल्लाने) गर्भ को धारण किया । गर्भ को जानकर वह कर्णराजा सोच सोचकर रक्षण करने के लिए प्रयत्न करता था ।।3।।

14-15. राजगुरु की श्रेष्ठ स्त्रियों उस देवी को इस प्रकार सीखा रही थी–प्रमाद बिना तुम्हे धीरे बोलना, अधोवस्त्र की गांठ ढीली बांधनी और दारु आदि मद्य तुम्हें नहीं करना, चलने की गति धीमी रखनी और पैर फैलाने नहीं, तथा शराबियों से सेवित भूमि में जाना नहीं और उनसे बोलना नहीं तथा मासिक धर्मवाली स्त्री के पास जाना नहीं और बोलना नहीं ।13-14।।

16. निष्पाप उस देवीने नौ महिने बीताकर धर्म रूपी किराणे के स्थान और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र के स्वामी ऐसे पुत्र को जन्म दिया ।।15।।

17. उसके बाद ``वीरभू और रन्ति राजा की तरह यह बालक बढे ।'' इस प्रकार गाती हुई वृद्धस्त्रियों ने कुमार का `जयसिंह' इस प्रकार नाम रखा ।।39।।

18. मस्तक को काटने वाले की तरह आकम्प (भय) करनेवाला, वह (जयसिंह राजा का) नाम, शत्रु राजाओं ने सूना और भयभीत होकर अपने नगरों के किल्ले कराये ।।40।।

19. (युद्ध के लिए) वीर (सुभट बच्चों) को बुलाकर, बुनकर और बनियों के बच्चों की तरह राजाओं के बच्चों को हराकर वह राजपुत्र बडा हुआ ।।43।।

20. दान से दीन गरीबों के पेट को भरनेवाला, कीर्ति से स्वर्ग और पृथ्वी के पेट को भरनेवाला कर्णनंदन, प्रशंसा के योग्य उदारता को प्राप्त हुआ ।।49।।

21. जिसका मन भी पाप को ग्रहण करने वाला नहीं है, जो गुरु के चरण की रज को ग्रहण करने वाला है, ऐसा वह, फल को धराण करनेवाले वृक्ष की तरह (नम्र होकर) सत्पुरुषों को सेवनीय हुआ ।।56।।

22. (न्याय, दानादि गुणों से) भास्करज (मनु अथवा कर्ण) को अतिक्रान्त करनेवाला, चन्द्र कुल में मुकुट समान वह हमेशा सूर्योदय के समय पिता को सूर्य की तरह नमस्कार करता था ।।60।।

23. उसके बाद एक दिन पृथ्वी के प्रति सूर्य के समान ऐसे कर्ण राजा ने आँख के प्रति चन्द्र के समान, अनंत भक्ति को करने वाले उस पुत्र को बुलाया ।।65।।

24. उसके बाद पिता की सेवा करने वाले, आज्ञा करनेवाले और हर्ष करने वाले ऐसे कुमार ने भी पहेली को पूरी करने के लिए श्लोककार जैसे पाद चरणों की सेवा करता है, वैसे पिता के चरणों की सेवा की ।।66।।

25. सूत्रकार (नीति सूत्र बनाने वाले) के साथ वैर नहीं करनेवाले, मंत्रियों के साथ संवाद करनेवाले और वैयाकरण की तरह वाणी है जिसकी ऐसे उस (कर्ण) राजा ने कलह नहीं करनेवाले ऐसे उस (जयसिंह) को इस प्रकार कहा ।।67।।

26. प्रिय बोलनेवाले, यदि तुं परंतप (शत्रुओं को तपानेवाला) और वशंवद (जो कहे वह मानने वाला) है, तो शत्रु को तपानेवाला ऐसा यह राज्य ग्रहण कर, जिससे मैं मुक्ति के लिए प्रयत्न करुं ।।72।।

पाठ-8

1. जो वापस तुम कहो कि हम सुख से रहते है क्योंकि हम मांस खाते है, इत्यादि तो वह भी विवेकी जीवों को हँसने तुल्य आपकी मुग्धता का विलास ही है, क्योंकि सभी कष्ट जिसके समीप है ऐसी काया में विविध रोग के जुडने पर, वृद्धावस्था जल्दी से आने वाली होने पर,

राज्यादि उपद्रव मन और शरीर को संताप करने वाले होने पर, यौवन कुटिलता से जाने वाला होने पर, संपत्तियाँ सभी दु:ख को पैदा करनेवाली होने पर, इष्ट (वस्तु या व्यक्ति) का वियोग मन को दु:खी करने वाला होने पर, अप्रिय का संयोग मन को दु:खी करनेवाला होने पर, मरण हमेशा आनेवाला होने पर, शरीर सर्वथा अशुचि का भंडार होने पर, विषय-पुद्गल के परिणाम मात्र होने पर, शरीर सर्वथा अशुचि का भंडार होने पर, विषय–पुद्गल के परिणाम मात्र होने से सार रहित होने पर, असंख्य लाखों दु:ख से भरे हुए जगत् में प्राणिओं को सुख कैसा ?

2. **स्वयंभूरमण समुद्र की स्पर्धा करनेवाले और बढने के स्वभाववाली समता जिनमें है ऐसे मुनि को जिसके द्वारा उपमा दी जा सके ऐसा कोई पदार्थ जगत् में नहीं है ।**
3. लक्ष्मी–तरंग के समान चपल है, आयुष्य–वायु की तरह अस्थिर है, शरीर–बदलों के जैसा क्षण भंगुर है, यह महाबुद्धिशालिओं को हमेशा ध्यान रखना चाहिए ।
4. **विद्यारुपी अंजन को स्पर्श करनेवाली दृष्टि के द्वारा अविद्या-अज्ञान रुपी अंधकार का नाश होने पर, वास्तव में योगी पुरुष, आत्मा में परमात्मा को देखते है ।**
5. तितर, पोपट, कबुतर और चिढिया आदि पक्षी, मांस की आसक्तिवाले बांज, क्रोंच और गीध पक्षी आदि के द्वारा ग्रहण किये जाते है ।
6. **और प्रवेश करते ही उस राजा ने, उस सिद्धायतन के दरवाजे पर, जल्दी से आने के खेद से निरंतर गहरा श्वास लेते हुए एक वैमानिक को देखा, देखने मात्र से ही उसके प्रति पैदा हुआ है देवत्व का निश्चय जिसे, ऐसे और चक्षुनिमेष आदि चिह्न को देखने से निश्चय किया है स्वर्ग से च्यवन के समय को जिसने, ऐसे और रूप संपत्ति को देखने से अपने प्रति सुन्दरता के अभिमान की गांठ जिसकी ढीली हो गई है, ऐसे राजा के मन में हुआ–अहो ! सुरलोक की भूमि का प्रभाव ! वास्तव में जहाँ, अच्छी तरह से पैदा हुए पुण्यशालिओं के शरीर भी इस प्रकार के होते है जिसके**

अंतिम अवस्था में भी पास में जाना तो दूर रहा, देखने के लिए भी बिजली की आग की तरह पुरुष समर्थ नहीं होते ।

वह इस तरह इसके अत्यंत सौम्य शरीर के प्रति भी वह कोई स्वभाव से प्रकाशित होता हुआ प्रताप स्फुरित होता है । जिसके प्रति स्वभाव से चंचल होने पर भी भयभीत की तरह, (लज्जित की तरह) अत्यंत कुपित की तरह, मेरी ये दो आंखें लक्ष्य को लम्बें समय तक देख नहीं सकती है ।

आश्चर्य यह हैं कि, इसके ये, टुटे हुए मणशिल के गर्भ जैसे उज्ज्वल, अत्यन्त बलवाले, शरीर की प्रभा समुह में निरंतर निमिग्न हुए, आयतन के दीपकों के अपने तेज को तिरस्कार के द्वारा लज्जित हुए की तरह, थोडा भी आत्मिक दर्शन नहीं करवाता है ।

और वापस चारों ओर दोडे हुए, अग्नि के प्रकाश के अत्यंत लोभी पतंगों का समुह जैसे नष्ट हुए दीपकों की शोध के लिए घुम रहे हो वैसे भ्रमण कर रहे है ।

मैं सभी प्रकार से कृतार्थ हूँ, जो मुझे मनुष्य पणे में भी प्रकट किया है दिव्य शरीर जिसने, ऐसे इसके द्वारा दर्शन दिये गए है ।

इस प्रकार विचार करके और खूब अभिमान के साथ ढाल सहित तलवार को छोडकर, जोडे है हाथ जिसने, ऐसे (राजाने) थोडे पास जाकर स्वागत किया ।

'द्व्याश्रय महाकाव्य बारहवाँ सर्ग'

7. एक दिन ऋषिगण उस (जयसिंह) के पास आकर इस प्रकार बोले, हे राजन् ! जिसमें हम गए है, जिसमें हमने दुध पीया है तथा जिसमें कल और आज हमने भोजन किया है, वह तुम्हारी दानशाला राक्षसों ने नष्ट कर दी है ।।3।।

8. **और पहले जिसमें वह दुर्वासऋषि रहे है, उसके बाद मंडुसुनु रहा है, अन्य भी ऋषि जिसमें रहे है, उस वन (सरस्वती के कीनारे पर रहे आश्रय स्थल) को तोड गिराया है, वास्तव में उस वक्त किसी ने भी रक्षण नहीं किया ।।9।।**

9. यजमानों के लिए भी पूजा के योग्य, हे राजन् ! जिन कारणों से (हम लोग राक्षस के भय से) दु:ख पूर्वक पढते है और प्राणों को भी वास्तव में दु:ख से धारण करते है, उस कारण से अनीति के द्वेषी ऐसे तुम अनीति को करनेवाला और मनुष्य को खानेवाले (राक्षसों) को मारनेवाले बनों ।।15।।

10. (मुनिओं के वचन से) लज्जालु बने हुए, फैलते हुए राक्षसों के लिए असहिष्णु और नाश करनेवाला, फैलती हुई देदीप्यमान दांतों की कान्ति के द्वारा आकाश को अलंकृत करता हुआ और शोभा पाता हुआ राजा (जयसिंह) (मुनिओं के प्रति) बोला ।।16।।

11. जिस कारण से (स्नात्र के तीर्थजल से आत्मा को) शुद्ध करनेवाले (धर्मार्थी होने से) आत्मा के द्वारा (स्वयं) परिपक्वता से हर्ष करनेवाले, स्थिर मनवाले होने पर (धर्म में विघ्न से) भी ग्लानमुखवाले आपके द्वारा आज तक आपत्ति में रहा गया, इस कारण से अत्यंत ढीला और क्षीण होता है पराक्रम जिसका ऐसे मुझे धिक्कार हो ।।18।।

12. जय का आसक्त नहीं हूँ, ऐसा नहीं परंतु आसक्त हूँ, राक्षसों के प्रति क्रोधी नहीं हूँ, ऐसा नहीं, परंतु क्रोधी ही हूँ ऐसा मैं तेज घोडों के द्वारा उन (राक्षसों रे राजा) के प्रति अच्छी तरह से जानेवाला हूँ । ऐसा बोलकर अति जाज्वल्यमान (राजा जयसिंह) खडा हुआ ।।24।।

पाठ-9

1. हजारों नदिओं से भी नहीं भरा जा सके ऐसे समुद्र के पेट समान इन्द्रियों का समुह तृप्तिवाला नहीं होता है, अत: ऐसा जानकर (तुम) अंतरात्मा से तृप्त बनों ।

2. देह और आत्मा आदि का यह अविवेक संसार में हमेशा सुलभ है परंतु उसके भेदज्ञान रूपी विवेक करोडों जन्मों के द्वारा भी अति दुर्लभ है ।

3. शुद्ध अंतरंग परिणाम से मध्यस्थ होकर, उपालंभ न मिले इस तरह रहने योग्य है, कुतर्क रूप कंकड डालने के त्याग द्वारा बचपन की चंचलता छोडने योग्य है ।

4. **मध्यस्थ व्यक्ति का मन रूपी बछडा, युक्ति रूपी गाय के पीछे दौडता है । जबकि तुच्छ आग्रहवाले के मनरूपी बंदर युक्ति रूपी गाय को पूंछ से खींचता है ।**

5. हम राग मात्र से स्व-आगम को स्वीकार या द्वेष मात्र से अन्य के आगम को त्याग नहीं करते परंतु, मध्यस्थ दृष्टि के द्वारा हम (आगम को) स्वीकार या त्याग करते है ।

6. **मुझे वीर के विषय में पक्षपात नहीं और कपिल आदि के विषय में द्वेष नहीं है (परंतु), जिसका वचन युक्ति युक्त है उसका परिग्रह (स्वीकार) करना चाहिए ।**

7. हे वीरप्रभु ! श्रद्धा से ही आपके प्रति पक्षपात नहीं है और द्वेष से ही अन्य के प्रति अरुचि नहीं है परंतु, जिस प्रकार हो सके उस प्रकार से आप्त (सत्पुरुष) की परीक्षा के द्वारा आपको ही हम आश्रित है ।

8. **स्वभाव से एकत्व को प्राप्त हुए जिनको अन्य की अपेक्षा नहीं है, उसे संसार के परिभ्रमण से पैदा हुई थकान की परंपरा का पतलापन कैसे न हो ?**

9. हंस-सारस की आवाज का अनुकरण करते सुस्वरवाले पुरुष सुखी होते है और कौए-गधे की आवाजवाले दु:खी होते है ।

10. **हे वत्स ! सुखपूर्वक लालन-पालन कराये गये ऐसे तुम, स्वभाव से सरल हो, देशान्तर दूर है, मार्ग विकट है, लोग कुटिल हृदयवाले है, स्त्रियाँ ठगने में होशियार है, दुर्जन खूब ज्यादा है, सज्जन अति अल्प है, ठगाई करनेवाले ठगने में चतुर है, अन्यायी बनिये मायावी होते है, किराणे के समुह का रक्षण दुष्कर है, नवयौवन विकार करने वाला है, कार्य की गति मुश्किल से जानी जाती है, यमराज अनर्थ करने की रूचिवाला है, चोर-लुटेरे आदि बिना अपराध के क्रोध करनेवाले है, इसलिए तुम्हें सभी प्रकार से किसी वक्त निष्ठुर, किसी वक्त दयालु, किसी वक्त निर्दय, किसी वक्त बहादुर, किसी वक्त कायर, किसी वक्त त्यागी, किसी वक्त कृपण, किसी वक्त बगुले की तरह, तो किसी वक्त होशियार**

बनने के द्वारा, सभी प्रकार से दुसरों से नहीं प्राप्त हो सके मध्यम भाग जिसका, ऐसा अगाध क्षीर समुद्र की तरह धीर-गंभीर बुद्धिवाला बनना चाहिए ।

11. अत्यंत हर्षवाले महर्षि ने राजा को कहा–

हे राजन् ! तुम्हारा संतति प्रतिबंधक पाप अब बहुत-सा भोग लिया गया है, इसलिए मन में धैर्य धारण करो, थोडा भी विषाद मत करो, प्रतिकूल आचरण करने के द्वारा सदा सुख के उचित अपनी प्रिया के चित्त को खेद मत करो, जंगल में जाने की इच्छा को छोडो, घर में रहते हुए ही देवता की आराधना करो, शरीर को वनवास के उचित सारे क्लेश दो, मुनिव्रत की क्रिया का स्वीकार करो, दूर रहे अन्य देवताओं से क्या ? **यही प्रकृति से सौम्य, हमेशा पास में रहे सारे क्षितिपाल (राजाओं) के कुलदेवता की राज्यलक्ष्मी की उपासना करो, वात्सव में यह इक्ष्वाकु कुल भरत, भगीरथ आदि राजाओं के पराक्रम से खरीदे हुए तुम्हारे वंश के स्वभाव से पक्षपाति सारे भुवन को प्रतीक्ष्य (सेवा करने योग्य) पवित्र धार्मिक ऐसे, इन्द्रियवृत्ति वश में है जिसे ऐसे, दृढभक्तिवाले, उदार आशयवाले, प्रमाद को त्याग करने वाले, कालोचित जाननेवाले और क्रमशः प्रकट किया है क्षत्रिय संबंधि तेज जिसने, ऐसे तुम्हारे द्वारा विधि के अनुसार आराधना की जाती हुई (कुलदेवी) निश्चय से प्रसन्नता को प्राप्त करेंगी और जल्दी से इष्ट अर्थ विषयक वरदान को देंगी ।**

हे राजपुत्रि ! तुम्हारा यह प्रिय (पति), जंगल में जाने से तो अटकाया गया है परंतु अति दुष्कर ऐसी देवताराधना की क्रिया में जुडा है । मन में कोप नहीं करना क्योंकि, हमारे द्वारा प्रश्न नहीं करके, जवाब नहीं सुनकर महाभाग्यशाली तुम्हारी अनुमति नहीं लेकर, उसके मन की नियंत्रणा कराई गई है और विषयोपभोग सुखों की निवारणा कराई गई है । **ऐसे करने में अपने कल्याण करने की जल्दबाजीवाली चित्तवृत्ति अपराधी है, बुद्धि नहीं । और यह आचार है कि, उससे कितनेक दिन दूर रहते हुए ही कल्याणभागी आपके द्वारा सभी भर्तृजनोचित भक्ति करनी चाहिए ।**

'द्व्याश्रय महाकाव्य बारहवाँ सर्ग'

12. ``हे राजन् ! यदि तुम युद्ध में जाओंगे तथा यदि तुम शत्रुओं का रोध करोंगे और यदि तुम बाणों को बरसाओंगे तो विजय होगा और कीर्ति पैदा होगी,'' इस प्रकार कष्ट सहित मुनिओं के द्वारा प्रेरित किया गया वह (जयसिंह) रथ पर चढा (बैठा) ।।50।।

13. (राजा की बिरुदावली गानेवाले वेत्री, सुभटों को कहते है) यह तुम्हारा प्रभु (राजा) (शत्रुओं के साथ) लडेगा, (शत्रुओं को) जीतेगा, (जीतकर) शत्रुओं की शांति करेगा इस हेतु से जाता है और (शत्रुओं के जय से उत्पन्न हुए) कल्याण को प्राप्त करेगा तथा धर्म का उद्धार करेगा और कीर्ति उत्पन्न के लिए (कीर्ति को उत्पन्न करेगा) इस हेतुओं से बाहु युगलों को देखता है ।।56।।

14. विशिष्ट यम और नियम वाला जैसे विशिष्ट यम अथवा नियम के प्रति और संयमी की तरह बहुत संयम के प्रति उद्यत होता है, वैसे कीर्ति रूपी वधु का पाणिग्रहण करने में और इसी प्रकार विजयलक्ष्मी का पाणिग्रहण करने में उद्यत (तत्पर) राजा (जयसिंह) शोभित होता था ।।61।।

15. धनुषों की आवाज से, बाणों की आवाज से, मनुष्यों की आवाज से, राक्षसों की आवाज से, रथों की आवाज से और उनकी प्रतिध्वनि से उस वक्त जगत् केवल शब्दमय हुआ ।।62।।

तेरहवाँ सर्ग

16. मुट्ठीभर धान्य के प्रति भी इच्छा बिना, भोजन मात्र को भी नहीं इच्छा करता पैदल सैनिकों की व्यवस्था के द्वारा वह (बर्बर राक्षस) जयसिंह के आनंद के लिए राजा जयसिंह की सद्भाव से हमेशा सेवा करता था ।।2।।

17. जिस कारण से स्वप्न में भी प्रश्न (क्या यज्ञ की रक्षा करु या नहीं, अथवा कैसे करुं ? इस प्रकार) की याचना बिना (बर्बर) यज्ञ के रक्षण के प्रति यत्नवाला था, इस कारण से राजा (जयसिंह) ने उसके ऊपर याचना बिना (स्वाभाविक) महेरबानी की ।।3।।

18. किसी वक्त राजा (जयसिंह) राजनीति के स्वीकार से लोगों की बातों को सुनने के लिए और पीडावालों की पीडा हरने के लिए रात्रि के समय अकेला निकला ॥5॥
(राजनीति ऐसी है कि–लोगों की चर्चा जानने के लिए राजा को गुप्त रूप से रात्रि में अकेला घुमने निकलना चाहिए ।)

19. उसके बाद, क्रोध के द्वारा कौओं के साथ में युद्ध करने में तत्पर ऐसे उल्लुवाले और भय देनेवाले कुंज में भयरहित वह जयसिंह राजा ने इस प्रकार दीन वचन सुना ॥17॥

20. एकान्त अनुरक्त अपनी प्रिया मुझे, अन्जान की तरह, हे नाथ ! लज्जा बिना के तुम लज्जा को छोडकर किस लिए इस प्रकार त्याग करते हो ?
उतने में लाचार ऐसी मैं, हे नाथ ! तुम्हारी ग्लानि और हानि को न देखुं और तुम्हारे कुल में म्लानि और ज्यानि (वृद्धावस्था) को न देखुं, उतने में आज ही मेरा मरण हो जाय ॥19॥

पाठ-10

1. उसके बाद चांदि के पात्र जैसी उज्ज्वल मुखवाली देवी (मयणल्ला) ने गर्भ धारण किया, गर्भ को जानकर वह कर्णराजा विचार-विचार कर लक्षण करने के लिए यत्न करता था ।

2. उस समय रात्रिओं को छोटी करने की तरह, सरोवर और नदियों के पानी (के प्रवाह) को छोटा करते हुए, निरंकुश मुसाफिर के लिए भयंकर ऐसा ग्रीष्मऋतु आया ।

3. उस सार्थ के मुसाफिर पेड-पेड पर बैठे, प्याउ-प्याउ पर प्रवेश करके पानी पी-पीकर आलोटते रहे ।

4. सार्थ की स्त्रियाँ मार्ग की नदिओं के चारों ओर प्रवेश करके कमलिनी के दंड को मूल में से उखेड कर गले की नाल में डाली ।

5. महापराक्रमी वे राजपुत्र घोडे घुमाने की जगह में बार-बार घोडों को घुमाते हुए, अनेक रुपवाले सूर्यपुत्र की शोभा को धारण करते थे ।

6. उनके कलाभ्यास में कलाचार्य साक्षीमात्र ही थे क्योंकि बडों के गुण स्वयमेव प्रकट होते है ।

7. शिला की तरह पर्वतों को भी हाथ से उठाते हुए उनकी बलक्रीडा किसी से जरा भी पूरी नहीं की गई । (उनके साथ किसी ने थोडी भी बलक्रीडा नहीं की ।) ।

8. जमीन के समीप धीरे-धीरे फैलते हुए पवन के द्वारा नोकरों की तरह पृथ्वी की धूल दूर की गई ।

9. बादलों के द्वारा कपडा भीगोकर (कपडा भीगे इतना) गंधोदक बरसाया गया और पृथ्वी, भीगाए हुए बीज की तरह उच्छ्वास को प्राप्त हुई ।

10-11. अंतरिक्ष में तृण की तरह बडे वृक्षों को फेंकता हुआ और दिशाओं में पत्थर के कंकडों को धूल की तरह उडाता हुआ, आकाश और पृथ्वी के खोखले भाग को चारों ओर धमणी की तरह भरता हुआ वह (संगम देव से पैदा किया गया) कठोर पवन, भगवान को उठा-उठाकर पछाडता था ।

12. असंख्य द्वीप और समुद्रों के वायु की तरह वेग से उल्लंघन करके वह विमान नंदीश्वर द्वीप के प्रति आकर पहुँचा ।

13. पंडित जैसे ग्रंथ का संक्षेप करता है वैसे वहाँ अग्निकोने में रतिकर पर्वत के ऊपर जाकर इन्द्र ने उस विमान को संक्षेप किया ।

14-15. उसके बाद द्वीप-समुद्रों को अच्छी तरह से उल्लंघन कर, उल्लंघन कर और वह विमान को उससे भी अधिक क्रमशः संक्षेप करता हुआ, इन्द्र जंबूद्वीप नाम के द्वीप में दक्षिण भरतार्ध में तीर्थंकर आदिनाथ भगवान के जन्म भवन में पहुँचा ।

16. हे गुणसमुद्र ! चन्द्र जैसे उज्ज्वल तुम्हारे गुणों को बोलने में बुद्धि से बृहस्पति के समान भी कोन पुरुष समर्थ है ? अथवा कल्पान्त काल के पवन से उछले है मगरमच्छ का समुह जिसमें, ऐसे समुद्र को दो हाथों से तैरने में कौन समर्थ है ?

17. उस (इन्द्र) ने अपने आप को पांच प्रकार का किया, जिससे पांच इन्द्र हुए । वह स्वामी की योग्य भक्ति अनेक अंगों से करने में समर्थ हुआ ।

18. **कितनेक (देव) भात खाकर पेट भरे हुए छात्रों की तरह कुद रहे थे, स्वामी की प्राप्ति से पैदा हुए उस प्रकार के आनंद को किसके द्वारा छिपाया जा सकता है ?**

19. हे नाथ ! आप में रहे हुए वास्तविक गुणों को कहने में, मैं समर्थ नहीं हूँ। स्वयंभूसण समुद्र के पानी को मापने में कौन समर्थ है ?

20. **हे देव ! तुम्हें भोजन करना योग्य नहीं है, तुम्हारा शरीर प्रबल ज्वरवाला है, क्योंकि दृष्टि अत्यंत चंचल घुमती है, मुख एकदम लाल और स्निग्ध है, कान और भाल के बीच के दोनों भाग डगडग होते है, संधि के स्थान धमधम होते है, जाने कि बाहर की चमडी जल रही है, जाने कि हाथ जल रहे है, इसलिए भोजन से अटक जाओ, बंध कमरें में जाओ, पवन के अभाव में रहो, भूखे रहो, उबला हुआ पानी पीओ, इसके सभी इलाज विधिपूर्वक करो, नहीं तो तुम्हें सन्निपात हो जाएगा ।**

द्व्याश्रय महाकाव्य चौदहवाँ सर्ग

21. **इस प्रकार संत को घुम-घुमकर और अद्‌भूत कर्म कर करके (लोगों के जगने से) पहले आकर और रात के चौथे प्रहर में पहले जगकर देव और गुरु के आगे बैठकर उसने देवों और गुरुओं की पूजा की ।।1।।**

22. प्रभात में पहले (अन्य क्रिया किये बिना) हाथी के ऊपर चढकर और कदाचित् पहले घोडे के ऊपर चढकर (सवारी करके) अथवा पहले हाथिनी के ऊपर चढकर (रजवाडी में) घुमता हुआ वह (सिद्धराज) रात्रि में मनुष्यों के द्वारा जाना गया ।।2।।

23. **अन्यथा (यदि विद्याधर न हो तो) किस प्रकार हमारा यह (प्रत्यक्ष कहा जाता) अशेष रहस्य इस प्रकार से (इसके द्वारा जो बना है उस प्रकार कहने के द्वारा) जाना है, उससे यह (जयसिंह) को (अज्ञात) विद्याधर हो, इस प्रकार मनुष्यों के द्वारा रात्रि विहारी (यह राजा) तर्क (शंका) किया गया ।।3।।**

24. मंत्र को सिद्ध करनेवाला उस राजा (जयसिंह) ने कपट में तत्पर (कुत्सित) शाकिनी-भूत आदि को भी इस प्रकार से (रात्रिचर्या रुप

प्रकार से) शिक्षा की । अन्यथा (यदि शाकिनी आदि को मैं शिक्षा न करुं तो) इस प्रकार रात्रिचर्या के द्वारा देखे हुए प्रकार से सरल बोलने वाला व्यक्ति सच्चे अर्थ में सुखी कैसे हो ? ।।4।।

25. एक दिन अवन्ती की (मालवदेश की) एक योगिनी ने योगिनी के प्रति अशंक (निर्भय) हुए उस (जयसिंह) को इस प्रकार कहा-अहो (राजन्) ! हम जिस प्रकार से फिरते है, उस प्रकार से फिरते है, इससे तुम्हे क्या ? ।।5।।

26. हे (राजन्) ! तुम शाकिनी शब्द कहकर किस लिए हम पर आक्रोश करते हो । (तथा) क्या यहाँ (पृथ्वी के प्रति) भोजन को मीठा करके तुम नहीं खाओंगे ? तथा वैषयिक सुख मीठा करके यहाँ जगत् के प्रति क्या तुम अनुभव नहीं करोंगे ? तथा हमारी चर्चा के द्वारा निरर्थक किस लिए तुम हैरान होते हो ? ।।6।।

27. हे हताश ! यहाँ (पृथ्वी के प्रति) विलासिनी स्त्रिओं के गीत-अमृत को मीठा करके तुम क्यों नहीं पीते हो ? हे अतिमूढ ! यहाँ (पृथ्वी के प्रति) योगिनी को देख-देखकर (जिसे जिसे योगिनी देखता है, उसे उसे) वैरिणी हो वैसे जानकर प्राप्त कर और विचार करके किस लिए तुम अभिभव करते हो–हैरान करते हो ? ।।7।।

28. वास्तव में (हे राजन् !) जब तक जीते हो तब तक, लम्बेकाल तक यदि अपने सुख की इच्छा करते हो तो जितना प्राप्त करे उतना खानेवाली (भुक्कड) ऐसी हमको जल्दी से पेट भरकर चर्म (चमडे का कटाह) बलि दो ।।8।।

29. हे अधम नृप ! हमारे रुष्ट होने पर, तुम्हारे देश में नदी भरकर या गोष्पद भरकर के (बहुत कहने से क्या !) कंबल भीगे या वस्त्र भीगे (नदी भरी जा सके, या गाय के पैर पडने से बना खड्डा भरा जा सके उतना या कंबल या वस्त्र भीगे) उतना बारीश (भी) नहीं बरसेगा ।।9।।

30. वस्त्र को भीगाए या पुरुष को भीगाए (इतना भी) मेघ नहीं बरसने पर, हे राजन् ! वात्सव में खाने के लिए कौन शुष्क (बोरडी के फल आदि को) पिसता, कौन रूक्ष (कांटे आदि) को पिसता और कौन चूर्ण (छीलकों को) पिसता हुआ निन्द्य नहीं होगा ?

पाठ-11

1. **हे चौलुक्य राजन् (सिद्धराज) ! जैवन्ति राजा की तरह और अश्वत्थाम राजा की तरह तुम खडे रहो, खडे रहो, (भागकर मत जा) इस प्रकार बोलती हुई, प्रकट किये है अनेक रूप जिसने ऐसी जिस (काली) ने अस्त्र की वर्षा के द्वारा, कार्तिकेय और अश्वत्थाम को (शौर्यादि गुणों के द्वारा करके) अतिक्रान्त करके जाय ऐसे सिद्धराज को एकदम जल्दी से ढक दिया ।।61।।**

2. इन्द्रजित् (रावण का पुत्र) के द्वारा लक्ष्मण, विश्वामित्र के द्वारा वाशिष्ठ (परमारादि पुरुष), भीमपुत्र (घटोत्कच) के द्वारा जैसे कर्ण, वैसे श्वाफल्क और कृष्ण समान राजा (जयसिंह), उस (काली) के द्वारा अस्त्रों से क्षण में ऊपर से फेका गया । (पीछे धकेला गया) ।।62।।

3. **त्रैवण, छागल, शौंग और वैकर्ण आदि मुनिओं के द्वारा और स्वयं धनद के द्वारा भी जो (अस्त्र) अतिदुर्लभ है ऐसे उस माया का हनन करनेवाले अस्त्र को रामचन्द्र के समान बलवान (सिद्धराज) ने उस (अस्त्र) को याद किया । (उस अस्त्र का स्मरण किया ।) ।।63।।**

4. कोप से जरासंघ के शत्रु (कृष्ण) समान (अतिक्रोधी) भी योग्य माता के पुत्रपने से दया को धारण करनेवाला और हसता है मुख जिसका ऐसे उस (सिद्धराज) ने अस्त्र के द्वारा दूर किये है, दूसरे (सभी) रूप जिसके ऐसी अकेली (काली) ने इस प्रकार कहा ।।64।।

5. **हे प्रशस्यमाता की पुत्री ! तुम अबला (स्त्री) हो, जिससे लज्जा रूपी नार्मद-नील ह्रद में मग्न ऐसा यह मैं जयसिंह क्या करुं ? क्या स्त्री का वध करने से पूर्व के शकुन्तलापुत्र-भरतचक्री भिष्मपितामह आदि को वास्तव में, मैं लज्जित करुं ? ।।65।।**

6. और वह विकसित मुखवाली इस प्रकार बोली, ``हे साम्बकुमार के पिता, कृष्ण के अंश ! पैलेय-पैलीपति साल्वमित्र-साल्वेय और मांडुक प्रमुख मुनिओं के द्वारा जिस प्रकार गाया गया है उस प्रकार के तुम हो ।।66।।''

7. मांडुकि प्रमुख और मांडुकेय की उपमावाले अन्य भी मुनि जिनका ध्यान करते है, उस गरुडासनवाले दैत्यद्विषत्–विष्णु का दानवों के विनाश के लिए तुम अवतार हो ।।67।।

8. तुम्हारे धैर्य और सत्त्व के द्वारा मैं प्रसन्न हुई हुँ, तम्हारे समान अन्य युवति को नहीं देखा, गरुड जिस प्रकार नागों को जीतता है, उस प्रकार दात्तेय, सैप्र, यशोवर्म नृप आदि राजाओं को जीतों ।।68।।

पाठ-12

1. बैल, ऊंठ और घोडों के समुह के द्वारा उडी हुई धूल उस प्रकार आकाश में छायी, जैसे सलिये के द्वारा भेद किया जाय, ऐसा अंधेरा चारों ओर हुआ ।

2. असत्य सर्वथा त्याग करना चाहिए, क्योंकि असत्य वचनों के द्वारा प्राणी संसार में घुमते हुए वायु से तिनके की तरह लंबे समय तक घुमता है ।

3. जात्य सुवर्ण जैसी जिसकी कांति है ऐसा वह युगलिक प्रियंगु जैसे (श्याम) वर्णवाली पत्नी के साथ, जैसे बादलों के साथ सुमेरु शोभता है वैसे शोभता था ।

4-5-6. पूजित है मुख जिसका ऐसा और रम्य सोने के, चांदि के, रत्न के, सोने चांदि के, सोने रत्न के, सोने चांदि और रत्न के और रत्न के, चांदि के और मीट्टी के इस प्रकार प्रत्येक के एक हजार आठ कलश उन (आभियोगिक) देवों ने बनाए । उसके बाद अपने आप को शुद्ध (मैं शुद्ध होता हुँ, इस प्रकार) मानते हुए आरण और अच्युत के इन्द्र ने स्वयं प्रभु के शरीर को सुगंधी कषाय रंग से रंगी हुई चद्दर (रुमाल) से पोछा ।

द्व्याश्रय महाकाव्य पंद्रहवाँ सर्ग

7. पुरुषों को हितकारी जयसिंह राजा, एक दिन सहायता पुरुष और हाथिओं के समुह से युक्त, स्वभाव से बने रैवतक (गिरनार) पर्वत पर गया ।।61।।

8. **पत्थर से बने होने पर भी वह पर्वत वन्दनीय है, क्योंकि जैसे बकरे के जांघ के मांस की तरह विवाह से घृणा करके वापस लौटे श्री नेमनाथ भगवान ने यहाँ तप तपे है ।।63।।**

9. जिस प्रकार केरडा या चित्रक के लकडे की भस्म, खून को छेदने (बंद करने) के लिए होती है, वैसे ही इस पर्वत की रज भी पुरुषों के पाप को छेद करने वाली होती है ।।64।।

10. **जतु और त्रपु के टुकडे के जिस तरह (अग्नि से) पिघल जाते है, उस तरह ताड के धनुष को खींचते हुए शिकारियों के हिंसक विचार, तीर्थ के तेज से पिघल जाते है (नाश हो जाते है) ।।65।।**

11. उसके बाद उस (सिद्धराज) ने इस प्रकार स्तुति की—हे स्वामिन् ! तुम्हारे सिवाय अन्य के पास से जो मनुष्य सुख की इच्छा करता है, वह मनुष्य बोरडी को छोड कर एरंड के मूल से धनुष बनाता है ।।80।।

12. **हे जंबूश्याम ! हाथ में रहे आवले की तरह जगत् को देखते ऐसे तुम को, निंदीत प्लक्ष, पिपल और जंबूवृक्ष के फल को खाने वाले का व्रत धिक्कार के पात्र है ।।81।।**

13. जो मनुष्य तुम्हारे पास से चित्त को खिंचकर अन्य के पास ले जाता है, वह खराब वृद्धिवाला मनुष्य कोठे के रस को द्रुवय के बनाए पात्र से गोबर की राख में डालता है ।।83।।

14. **काका, मामा, वृद्ध नाना और दादा बंधन के ही कारण है, तुम ही मोक्ष के कारण हो ।।84।।**

15. इस प्रकार श्री नेमिनाथ भगवान की स्तुति करके राजाओं के साथ वह (जयसिंह) पर्वत के ऊपर से नीचे उतरा और उतरकर धर्मज्ञ राजाओं के साथ धर्मकथा को करता हुआ शत्रुंजय गया और उस पर्वत के ऊपर चढा ।

16. **नडवाले, कुमुदवाले, वेतसवाले और पंकवाले प्रदेश जहाँ है, ऐसे पर्वत के शिखर ऊपर माहिष्मती पुरी के पति (सहस्त्रार्जुन) को उल्लंघन करके उस (जयसिंह)ने श्री ऋषभदेव का मंदिर देखा ।।91।।**

17. फलकि, प्रेक्षि, तृणसा, नदसा और काशिल के राजाओं के साथ जिनेन्द्र की पूजा करके चौलुक्य (सिद्धराज), पर्वत के ऊपर से नीचे उतरा ।।95।।

पाठ-13

1. जिस कारण से नदी की बाढ के समान बलवाला वह (कुमारपाल) थोडे भी कार्य में सोता न था (आलस्य करता न था), इस कारण से पास में रहे हुए माहेयराड् (महियडा-क्षत्रियों के राजा) तथा राष्ट्रीय (राष्ट्र में रहे हुए क्षत्रियों के) राजा प्रमुख सभी राजा इस (कुमारपाल) की सेवा करते थे ।।6।।
2. **उसके बाद मद से समुद्र में रहनेवाले (ऐरावण) हाथी को उल्लंघन करने वाले ऐसे आन्न राजा, उत्तरदेश में रहनेवाले तथा शिवहारा नदी के राजा तथा (शिवहारा नदी के) इस ओर किनारे पर रहने वाले तथा सामने ओर किनारे पर रहने वाले राजाओं के साथ ही उस (कुमारपाल) के प्रति विरोधी हुए ।।7।।**
3. नीति में दिव्यमंत्री (बृहस्पति) को उल्लंघन कर जाय ऐसे उत्तरदिशा के देशो के राजा (आन्न) दक्षिण दिशा के, समुद्र (के पास) में रहनेवाले राजा के साथ पूर्व (अवन्ति देश) के वल्लालदेव नाम के राजा को (अवन्ति देश में रही) पारा नदी के पास (आगे) से पश्चिम देशों में रहने वाले मनुष्यों के राजा कुमारपाल के पिछले के देश को उपद्रव करने के लिए जोडे (जब कुमारपाल मेरे साथ लडे तब तुम्हे उसके पिछले देश पर आक्रमण करना, इस प्रकार मैत्री, दान, सन्मान आदि करने के द्वारा प्रेरणा की ।) ।।8।। (गुजरात की अपेक्षा सपादलक्ष (मलवा) देश उत्तर में है, सपादलक्ष देश की अपेक्षा गुजरात पश्चिम में है, गुजरात और सपादलक्ष की अपेक्षा से अवन्तिदेश पूर्व में है, समुद्र के पास के देश दक्षिण में है ।)
4. **तुम कहाँ के हो ? (क्या) तुम वहाँ (पाटण) से आये हो ? मैं वहाँ का नहीं हूँ । मैं निश्चय से यहाँ रहनेवाला हुँ । इस प्रकार (आन्न के) चंडलों को ठगकर किसी गुप्तचर पुरुष के प्रकट होने पर चुलुक्य (कमारपाल) के पास आया ।।12।।**

5. नमस्कार करके वह इस प्रकार बोला—इस साल में हुआ होने पर भी इस साल में हुआ हो ऐसा नहीं, (परंतु लंबे काल में हुआ हो ऐसा) उसके जैसा तुम्हारा शत्रु आन्न बीते हुए कल के दिन में वहाँ से चला है और आने वाले कल को निश्चय से तुम्हारे देश की सीमा में आएगा ।।13।।

6. वह (तुम्हारा सेवक) गोनर्द पत्तन में होनेवाला (बल्लाल) भी उस (आन्न) की बुद्धि से पराये (शत्रु आन्न संबंधी) वृत्ति (कमाई) वाला अराजकीय हुआ है । (आपका नहीं रहा है ।) उस कारण से उष्णकालीन आतप जैसे पैर के तलिये को जलाता है, वैसे उस (आन्न) की ओर जाते हुए तुम्हारे पैर के तलिये जलेंगे ।।17।।

7. उसके बाद (गुप्तचर के कहने के बाद) विकाल में हुई उस (आन्न) की वृत्ति को उसी समय में हुए की तरह जानकर तथा उस काल में हुए क्रोध की विकृति को जीत (दबा) कर राजा (कुमारपाल) ने तात्कालिक बुद्धि से इस प्रकार विचार किया ।।18।।

8. उस समय, वह चेदिदेश की भक्ति (विनय) को बताते हुए और आज-अभी अचानक से अचैदिकी (अविनीत) भक्ति को बताते हुए उस (आन्न) के द्वारा काशि की माया से काशिदेश की कला को जानने वाले भी वह (सिद्धराज) तात, आह ! खेद की बात है कि ठगे गए है । (काशिदेश मायावी है, चेदि देश प्रायः विनीत है ।) ।।19।।

9. ऐरावतक आभिसारक, दार्वक स्थालक, धौमक त्रैगर्तक और आभिसार गर्तक राजाओं के साथ स्वयं उस (कुमारपाल)ने शत्रु (आन्न) की ओर प्रयाण किया ।।24।।

10. उसके बाद राजाओं, नोकरों, यौद्धाओं और भीलों आदि के साथ वह कुमारपाल राजा, अर्बुदगिरि के पास आया ।

11. उसके बाद शोभा पाती ऐसी उस पर्वत की भूमि का रक्षण करनेवाला कुमारपाल राजा का अपना विक्रमसिंह नाम का सेवक, सेवकों के साथ इस प्रकार बोला—हमारे वंश की उत्पत्ति स्थान होने पर भी यह प्रशस्य पर्वत तुम्हारी महेरबानी से हमारा है ।

12. हमारे पूर्वजों को, तुम्हारे वंश की तरह शरण करने में योग्य इस पर्वत के प्रति तुम्हारी नहीं होने पर भी, जैसे तुम्हारी ही हो ऐसी किन्नरियाँ तुम्हारे यश को गाती है ||36||

13. इस पर्वत में ऊँचे वृक्षों के द्वारा पूर्वाह्न का और अपराह्न का सूर्य ढका हुआ रहता होने पर मुनीन्द्र (योगीजन) पूर्वाह्न और अपराह्न की संध्या को नाडी के (उच्छ्वास-निःश्वास के) द्वारा जानते है ||47||

14. यहाँ लंबे समय के अचलेश्वर (महादेव) की सुबह की पूजा, सुबह के खीले हुए विविध पुष्पों के द्वारा और शाम की पूजा, शाम को ही खीले हुए विविध पुष्पों के द्वारा की जाती है ||48||

15. यहाँ, श्री ऋषभदेव भगवान के वार्षिक पर्व के प्रति, वार्षिक पूजा के फल की इच्छा से हेमन्तऋतु के दिन की तरह अल्प किये गए पाप वाला कौन (मनुष्य) नहीं आता है (यहाँ श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर महातीर्थ है।) ||50||

16. इस पर्वत के मध्य में रही, मध्यभाग में रहे कमल है जिसमें ऐसी और मध्यभाग में रहे कुमुद है जिसमें ऐसी, अरजस्वला स्त्री की तरह भोग के योग्य, यह बनास नदी गंगा की तरह पूर्व में (आगे) है ||65||

17. इस (बनास नदी) में पानी के प्रवाह में उत्पन्न हुई तरंगे बीच में रहे पत्थरों के समुह में टकराते कभी अंगुठी (ठं) जैसी, कभी ट वर्ग के व्यंजन जैसी और कभी जिह्वामूलीय (ᳵ) की तरह शोभती है ||66||

18. उसके बाद लगभग घुटने के समीप रहे प्रचंड हाथवाला राजा (कुमारपाल) लगभग कान के समीप में आयी ऐसी (लंबी) और सरलता से खूलती हुई दृष्टि से धान्यवाली, गांव के समीप में रही क्षेत्रभूमि से सेनाओं का रक्षण करता हुआ वहाँ रहा ||71||

वसंत ऋतु

19. पिता से प्राप्त हुए और दुकान में से आये हुए (स्वयं प्राप्त किये) सोने से जैसे व्यापारी शोभता है, एवं पिता और होम करने वाले से आये हुए मंत्र से जैसे ब्राह्मण शोभता है, वैसे फूलों से अशोक शोभता था और जैसे अभी दारु पीये हुए मनुष्य नाचते है, वैसे तीर्थ के (नदी के किनारे से) आये हुए पवन से नाचता था ||76||

20. पापिष्ठ की तरह पाप से आये हुए और पुण्य से आये हुए फल को नहीं जानता, शंका बिना का अनंग (काम), ऐरावण हाथी जैसे गंगा के किनारों को भेद करता है वैसे युवानों के हृदय को भेद करता था ।।78।।

शरदऋत्तु

21. इस (शरद ऋतु) में मधुप्रिय मनुष्यों को जैसे अच्छा मध, वैसे मानसवारि तुल्य (शुद्ध) मनुष्यों को पीने (संभालने) योग्य पाणिनिने बनाए व्याकरण, जैसे वररूचि ने बनाए सुवाक्यों (वार्तिको) से शोभता था-वैसे ।

मद्य जिनको प्रिय है, ऐसे मनुष्यों को अच्छा मद्य-जैसे पीने योग्य होता है वैसे मानसरोवर के पानी तुल्य (अति निर्मल) मनुष्यों को पीने योग्य पानी फूलों के द्वारा शोभता था ।।92।।

पाठ-14

1. सभी ऋतुएँ प्रकट होने के बाद, बिजली जैसी चपल स्त्रियाँ वल्लभों को आगे करके सैन्य में से बनास नदी जिस दिशा में है उस दिशा में होने पर वनों में पुष्पों को इकट्ठे करने गई ।

2. जैसे (इन्द्रिय रुपी) पाशा से जीतती स्त्री, पाशा से जुगार खेलते जुगारी के पास से पाशा से जीते हुए से भी अधिक से अधिक लेने की इच्छावाली होती है वैसे–

ऊपर से पुष्प को लेने की इच्छावाली, हाथ के मूल (कक्षा के भाग) को ऊँची करती कोई स्त्री को, कोदाली से खोदते मनुष्यों ने कौतुक (अभिलाषा) से देखा ।।4।।

3. जैसे नाव से, त्रापा से और घट से नहीं तैरती स्त्री डूबती है, वैसे पुष्पोच्चय से पैदा हुआ है श्रम का पानी (पसीना) जिसके प्रति ऐसी कोई स्त्री के प्रति प्रेमी की दृष्टि डुबी ।।7।।

4. जल (कण) के साथ रहे और जोर से नहीं बल्कि मृदु तथा प्रतिकूल न होते अनुकूल पवन ने, पुष्पोच्चय के श्रम से थकी हुई उन स्त्रियों को साहसिक होकर (बिना विचारे) स्पर्श किया ।।18।।

5. **पक्षि, मत्स्य और मृगों को मारते हुए (पापी–शिकारियों) के द्वारा भयंकर ऐसे इस वन के प्रति, वास्तव में यह (मेरी पत्नी) भय न पाये (इस हेतु से) नगर का रक्षण करते (तलारक्षक) पति के द्वारा, वन के प्रति अन्य (किसी) स्त्री को पीछे देखा गया ।।19।।**

6. ``हे पारदारिक ! तथा हे साभर्तुकिक ! (शोक पास में जानेवाली) तुम्हारी इस माला से रहने दो, इस माला से प्रतिपथ (सभी रास्तो) से जानेवाली (कुलटा) उस (स्व-प्रिया) की शोभा कर ।'' इस प्रकार अन्य (कोई) स्त्री ने पति को फेंक दिया (दूर किया) ।।24।।

7. **कोई स्त्री, पल्लव से शय्या को बनाकर, खूब विचित्र और शुभ बोलनेवाले पति को ``शय्या सुखकारी है ?'' इस प्रकार पूछने वाली हुई (पूछने लगी) ।।27।।**

8. पर्शु हथियार वालों और शक्ति (नामक) हथियार वालों के द्वारा की गई है रक्षा जिसकी ऐसी उन स्त्रियों ने पर्शुवालों और शक्तिवालों के द्वारा फैंक दिया है किनारे के मूल को जिसने ऐसी नदी में प्रवेश किया गया ।।37।।

9. **आतरिक (नदी के किनारे पर झूके हुए) पुरुषों के द्वारा जिसकी इच्छा नष्ट नहीं हुई (नदी में प्रवेश करते जिसको अटकाया नहीं) ऐसी स्त्रिओंने नदी का अवगाहन किया ।।43।।**

10. योजन से, अभिमुख गमन के योग्य, सौ कोस से अभिगमन के योग्य और सो योजन से अभिगमन के योग्य यह नदी, सैनिकों को (सैनिक भी दिग्विजय के लिए सौ कोस और सौ योजन जाते है, इसलिए) अपने (नदी के) तुल्य होने से उत्कंठित की तरह उर्मियों से गले लगी । (क्रोशाद् योजनाच्च शतिकी–क्रौशशतिकी यौजनशतिकी च इति ।)

11. **वेष से शोभा पाता और स्नान से स्पष्ट हुआ वेश्या के नख के घाव वाले पति को, ``हे कर्म के द्वारा शोभित !'' इस प्रकार बोलती हुई कर्म से शोभित एक स्त्री ने कमल के द्वारा मारा ।।60।।**

12. **महिने और छह महिने से हुए मत्स्य को लक्ष्य करके, छह महिने का बगुला छिपा होने पर एक स्त्री ने (अपने) शठ (मायावी) पति को, ``यह तुम्हारे जैसा है ।'' इस प्रकार कहा । (जैसे तुम मुझे देखते हो और अन्य का ध्यान करते हो, वैसे यह बगुला अन्य को देखता है और अन्य का ध्यान करता है ।) ।।68।।**

13. उसके बाद वह स्त्रियाँ अपने स्थान गयी, अब रवि (सूर्य) पश्चिम दिशा में पहुँचा । जैसे ऋतु आयी है जिसकी, ऐसे पत्तों के साथ लता, जैसे काल प्राप्त हुआ है जिनको ऐसे भ्रमरों के द्वारा, भक्षक जिसे प्राप्त हुआ है ऐसा है, वैसे सामायिक (जिसका समय प्राप्त हुआ है ऐसा) संध्या के राग से सहित ऐसा आकाश, जिसका काल प्राप्त हुआ है ऐसे अंधकार से, भक्षक जिसे प्राप्त हुआ है ऐसा हुआ ।।74।।

14. **जाने की बीस रुपयों से, तीस रुपयों से, बहुत रुपयों से अथवा कितने रुपयों से खरीदा गया है । इस प्रकार मुग्ध स्त्रिओं के द्वारा तर्क किया गया, संध्या राग रूप कुसुम्भ से रंगीत वस्त्र को पश्चिम दिशा ने धारण किया ।।76।।**

15. आकाश में चन्द्र, बीस, तीस किरणों को धारण करते हुए, (साथ रहनेवाले) पांच पक्षिओं के जैसे, किसी स्थान पर उडकर जाते है, वैसे अंधकार किसी स्थान पर उडकर चला गया ।।102।।

16. **(ग्रसन के द्वारा) चन्द्र को पीडा करनेवाला राहु, क्या निश्चय से छेदन-भेदन, शीर्ष छेदन के योग्य नहीं है ? इस प्रकार चन्द्र की किरणों से आनंदित वैरागी (मुनि) भी बोले ।**

पाठ-15

1. सभा के प्रति विचक्षण स्त्रियाँ, सभा के प्रति विचक्षण प्रियाओं (प्रेमीओं) के साथ भोजन में (खाने में) अच्छे चावल से जिसकी उत्पत्ति है ऐसी मदिरा पीकर, सभा के प्रति, विचक्षण प्रिया के प्रति अनुचित नहीं बोली ।।19।।

2. (स्त्रिओं के) मुख से विजय प्राप्त हुए होने पर भी, सभीजनों के प्रति उपकारक है किरण जिसके ऐसे चन्द्र ने मदिरा के मद से सचेष्ट चेतना बिना की स्त्रिओं को सचेतन की, क्योंकि सत्पुरुषों की साधुता (उपकारकता) शत्रुओं के प्रति (भी) होती है ॥120॥

3. उस वक्त, पंचजन (रथकार और चारवर्ण) को हितकारी, सभी जनों को हितकारी, स्त्रीसंभोग के लिए हितकारी और युवा पुरुषों की आत्मा के लिए हितकारी ऐसी रात्रि की हवा ने युवानों के रति क्रीडा के श्रम को दूर किया ॥130॥

4. सर्व जनों को हितकारी होने पर भी यह पवन, महाजन (मुनिजन) को हितकारी नहीं है ऐसे स्मर (काम) का पालन किया । सभी को हितकारी नहीं ऐसे के प्रति (भी), सभी को हितकारी की तरह जो हितकारी है वही सर्वजन के प्रति हितकारी होता है ॥131॥

5. जिस तरह अंगारे के लिए लकडे जलाते है उस तरह विरहिणी स्त्रियों के अंगों को काम ने जलाया है । जिस तरह चमडे की पट्टी और जुते के लिए चमडे को चीरा जाता है, उस तरह काम ने मन को चीर डाला ॥132॥

6. काम के योग्य आचरण करता और क्षत्रिय की तरह प्रहार करता तथा स्त्रिओं को तृण की तरह चंचल करता ऐसा काम, नोकर की तरह किसके द्वारा सेवन नहीं किया गया है ? ॥135॥

7. जैसे किसी लक्ष्मी की इच्छा करता हो वैसे पश्चिम दिशा की इच्छा करता हुआ चन्द्रमा, वृक्ष के ऊपर से जैसे कोई उतरता है उस तरह आकाश के ऊपर से नीचे उतरा जैसे नगर की तरह पर्वत के प्रति आचरण करती उन स्त्रिओं को देखने के लिए अथवा जैसे नगर की तरह अर्बुद् पर्वत की शोभा देखने के लिए नीचे न उतरा हो ॥136॥

8. गोत्ववाले का (गो का) जैसे गोत्व, शुक्लता वाले का (शुक्ल का) जैसे शुक्लत्व प्रकट होता है, वैसे चन्द्रास्त के बाद प्रबोधित्व वाले राजा कुमारपाल को जागरण-निद्राभाव और प्रयाण विषयक बुद्धि हुई ॥137॥

प्रबोधित्ववतः जागरूकस्य धीमतश्च राज्ञः ।
प्रबोधिता जागरणं प्रयाणकविषया बुद्धिश्च ।

जगने के स्वभाववाले और बुद्धिशाली ऐसे राजा का जगना हुआ और प्रयाण के लिए बुद्धि उत्पन्न हुई ।

द्व्याश्रय महाकाव्य, अठारहवाँ सर्ग

9. उसके बाद कुमुदिनी की अपटुता (संकोच) को करनेवाले और पद्म की अपटुता (संकोच) को दूर करनेवाले सूर्य के उदय का तेज होने पर, वह राजा (कुमारपाल) बुद्धि के विस्तार से, अज्ञान से हुए जगत् के अकौशल को हरण करनेवाला (आन्न के प्रति) चला ।।1।।

10. उसके बाद, संग्राम रूपी व्यापार के प्रति जिसका नए प्रकार का अग्रदूतपना (आगे बढना) है, ऐसे और यम के दूत कार्य के योग्य ऐसे घोडों के हणहणाट शब्द को सुनकर और दूत क्रिया का (दूत भेजने का) औचित्य वास्तव में व्यापारियों का है (क्षत्रियों का नहीं है) इस प्रकार कहकर आन्न लडाई के लिए खडा हुआ ।।9।।

11. बंदरों के बंदरपने की तरह घोडों के घोडेपने की तरह, बच्चों के बचपने की तरह और युवानों के यौवन की तरह अतिशय यौवन से शोभित उस (आन्न) का अहंकार दिखा ।।11।।

12. पुरुषत्व की सौरभ (उत्कर्ष) से समृद्ध (भरपुर), वैररूपी ज्वलन (दाह) के महत्त्व के पितृत्व (के कारण) को धारण करता हुआ तथा स्नेह को धारण करता हुआ वह (आन्न) पुरुषत्व का भागी और स्नेह को धारण करता हुआ राजाओं से सेवित हुआ ।।13।।
तथा अमात्य (मंत्री) के द्वारा यह आन्न आश्रित हुआ ।

13. उसके बाद मुख्य मंत्री ने उस (आन्न) को इस प्रकार कहा–

तुम्हारे (यहाँ आने पर) संमुख होने पर, ठंडी को सहन करने वाला, (हवा की गरमी को सहन करनेवाला) वातूल, (शत्रु के सैन्य को सहन करनेवाला) बलूल सैन्य जिसके पास है, ऐसा तथा ठंडी को सहन नहीं करने वाला और गर्मी को सहन नहीं करनेवाला होने पर भी अपने देश के दुःख को सहन नहीं करने वाला ऐसा यह कुमारपाल, इर्ष्या से यहाँ (तुम्हारे पास) आया है ।।21।।

14. अन्जान सार्थवाह को व्याप्त कर (सभी वाहनों के ऊपर चढ सके) ऐसे, सर्व काम को व्याप्त (सभी कार्य करने में समर्थ) ऐसे ही सेवक जिसके पास है ऐसा, तथा सर्व पथ को व्याप्त (सर्व मार्ग को रोक सके) ऐसे हाथी जिसके पास है ऐसा, तथा सर्व पात्र को व्याप्त (सभी पात्र को पहुँच सके) उतना धन जिसके पास है ऐसा, तथा सर्वांग (शरीर) को व्याप्त करने में समर्थ ऐसी प्रभा है जिसकी ऐसा, वह (कुमारपाल) जल्दी से पहले आपके साथ लडाई की अपेक्षा रखता है ।।22।।

15. हे राजन् ! बल के गर्व से तुम अपने पूर्वजो के नाश के लिए न हो, अपना भी वस्त्र प्रपद (घुटने) तक पहुँचने पर गिरने का कारण होता है ।

हे राजन् ! तुम्हारे किसी भी पूर्वजों ने चौलुक्य के साथ वैर नहीं किया, यह मैं जानता हुँ ।

16. हे राजन् ! हे नीतिशास्त्र रूपी सागर की पार पाने वाले ! हे अन्याय रूपी नदी के पार पाने वाले ! इच्छानुसार जानेवाले हाथियों के द्वारा, इच्छानुसार जानेवाले घोडों के द्वारा और अत्यंत (तेज) जानेवाले ऊँटों के द्वारा चौलुक्यों के साथ हमेशा संधी करके तुम्हारे पूर्वजोंने, शत्रुओं के विजय से यहाँ (इस जगत् में) समुद्रगामी यश प्राप्त किया है ।।25।।

17. हे राजन् ! अपने पूर्वजों के, समुद्र के इस पार और उस पार जानेवाले, तथा स्वर्ग मार्ग के मुसाफिर तुल्य उस यश को, गोपाल जैसे मूर्ख की बुद्धि से, न्याय मार्ग पर चलने वाले इस कुमारपाल का विरोध करके तुम्हारे द्वारा हारा न जाय ।।26।।

18. अथवा, हे शत्रु के सन्मुख जानेवाले ! यह (कुमारपाल) अमित्र की (ऐसे तुम्हारी) ओर उठकर जानेवाला होने पर, प्रतिवर्ष प्रसव करती तथा आज अथवा कल प्रसव करनेवाली गायों की तरह चलने में असमर्थ, गाय का प्रदान करे तब तक काम करने वालों की तरह, इन सैनिकों में तुम्हारा कौनसा सैनिक, युद्ध में शत्रु (कुमारपाल) की ओर जानेवाला होगा ? (कोई नहीं) ।।27।।

19. इस कारण से, हे पुरुष के लिए समर्थ शक्तिवाले ! आबादी के लिए कुमारपाल के प्रति मित्रता को, आज अथवा कल ब्यानेवाली गाय की तरह पुष्टकर तथा इस अषडक्षीण (जिसमें छह आँखे नहीं ऐसे तुम्हारे और मेरे सिवाय अन्य से अंजाने) मंत्र के प्रति जल्दी से समर्थ हो । (इस मेरे विचार को बिना विलंब किये अमल करो ।) ।।20।।

20. आन्न ने इस अमात्य के वचन को, जिसमें गायों को चराई है, ऐसे जंगल में रोना जैसे अच्छा नहीं माना है और कहा, हे दुष्ट आशय वाले ! मुझे डराने के लिए तृणमय पुरुष के (खेत में धान्य के रक्षण के लिए किया जाता है, उसके) समान चुलुक्य (कुमारपाल) की किस लिए तुम प्रशंसा करते हो ?

उस आन्न ने, जितने में वह मंत्री को कहा, उतने में पर्वतों की अधोभूमि और ऊपरी भूमि में गर्जना करते कुमारपाल के सैन्य की आवाज हुई ।

21. उसके बाद हाथी प्रमाण शिलाएँ है जिनमें ऐसी और हाथी है प्रमाण जिसका ऐसी नदी को, पुरुष है प्रमाण जिसका, उसकी तरह लांघ कर, पुरुष प्रमाण लम्बी कुद को करते बंदिओं के द्वारा उस (आन्न) को, **``कुमारपाल आया है''** ऐसा कहा गया ।।42।।

22. हाथी की सूंढ प्रमाण हाथ के द्वारा, ताड प्रमाणवाले और हाथ प्रमाण है फल के अग्र भाग जिसके, ऐसे भाले को धारण करता हुआ तथा पैर रखने के द्वारा फाड दी है हाथ प्रमाण पृथ्वी जिसने, ऐसा आन्न हाथी के ऊपर चढा ।।43।।

23. दस है प्रमाण जिसका, उतने मुखवाला, बीस है प्रमाण जिसका, उतने हाथ वाला, तैतीस है प्रमाण जिनका ऐसे देवों को जीतने के लिए तैयार हुआ, जैसे राक्षस-रावण हो ऐसा, तथा शुत्र का सैन्य इतना, मेरा कितना है ? इस प्रकार बोलते हुए आन्न ने तुरंत ही डोरी को धनुष पर चढाई ।।45।।

24. शत्रु के जितने सैनिक है, उतने बाण फेंके । उतने ये गुर्जर सैनिक भी अहो ! सात समुद्र के सात अवयव है जिसके ऐसे समुह रूप हमारे सैन्य में इतने (शत्रु) कितने है । इस प्रकार बोलते हुए जल्दी से उतने बाण फेंके ।।46।।

25. वर्ष को पूर्ण करनेवाली (अक्षय तृतीया आदि) तथा अर्धमास को पूर्ण करनेवाली (अमावस्या अथवा पूर्णिमा) तिथि के पर्व की तरह युद्ध को जानता कोई महापराक्रमी सैनिक, अस्सीवाँ वर्ष जिसे है ऐसा वृद्ध भी, साठवाँ वर्ष जिसे है ऐसे (तरूण) बडे हाथी की तरह लडा ।।51।।

26. वास्तव में इकसठवाँ वर्ष जिसे है ऐसा भी कोई सैनिक, इकसठ वें कौरव (सेना) की तरह तथा कोई सैनिक पांचवे पांडव (सहदेव) की तरह, खूब दिन को पूरे करनेवाले दिन के बाद (लंबे काल से) युद्ध के हर्ष को पाया ।।52।।

(कौरव और पांडवो का युद्ध साठ वर्ष के बाद हुआ था, उसमें सेनापति और सहदेव थे ।)

पाठ-16

द्व्याश्रय महाकाव्य अठारहवाँ सर्ग

1. जैसे सिंगवाले और बढे हुए पैरवाले जंगली पशुओं के साथ सिंगवाले और बढे हुए पैर वाले जंगली पशु, जल्दी से लडते हुए देखे जाते है, वैसे ही समुह वाले सैनिकों के साथ अवृन्दारक अकेले सैनिक जल्दी से लडते हुए इस युद्ध में देखे जाते है ।।70।।

2. और उसके बाद कुमारपाल ने बाणों की वर्षा बरसाई और आन्न के सैनिक वायु के रोगवाले, अतिसार के रोगवाले, भूत से ग्रस्त और पांच वर्ष के बालक की तरह जमीन पर लोटने लगे ।।90।।

3. कुमारपाल ने लोह के बाण से आन्न को मारा, घाव की पीडा से वह भूमि पर गिरा, उसके बाद वह (आन्न) आयुष्यवाला जीवित हुआ, इस प्रकार उपेक्षा करते हुए कुमारपाल ने उसे मारा नहीं, सिर्फ उसके हाथी के समुह को और घोडों को ग्रहण किया ।

4. उसके बाद शत्रुओं ने, हे भाई ! तुम शरण के लिए कहाँ जाओगे ? हे भाई ! मैं शरण के लिए किसके पास जाऊँ । इस प्रकार बोलते हुए जल्दी से कुमारपाल राजा के पास से भाग गया ।

उन्नीसवाँ सर्ग

5. उसके बाद (आन्न के ऊपर विजय से) सर्वत्र (तीनों जगत में) खूब स्थानों में प्रसिद्ध हुए कुमारपाल यहाँ (रणभूमि के पास) ही रहा और इस युद्ध के प्रति किसी स्थान पर पडे हुए शत्रुओं के और किसी स्थान पर पड़े हुए अपने सैनिकों को ढुंढवाता था ॥1॥

6. जब उस (कुमारपाल) के जय का कीर्तन हुआ, तब उलटा उसे लज्जा हुई। क्योंकि उसे किसी एक भी (शत्रु विजय रूप अभ्युदय) बार उच्छृखलता नहीं हुई, तथा दूसरी (अभ्युदय) बार भी उच्छृखलता नहीं हुई। न किसी काल, न सर्वदा हुई ॥2॥

7. इस बार आन्न का दूत कुमारपाल के पास आया और हमेशा पटु ऐसा वह इस प्रकार बोला, जो (युद्धादि) के समय (उस काल में) आन्न ने किया उसे वह अभी (आज) अच्छा नहीं मानता है ॥3॥

8. आन्न दो प्रकार से (भक्त और अभक्त) तथा तीन प्रकार से (भक्त, अभक्त और मिश्र) नहीं होगा। (अत्यंत ही भक्त होगा) और तुम भी दो प्रकार (प्रसन्न और अप्रसन्न) तथा तीन प्रकार (प्रसन्न, अप्रसन्न और मिश्र) वाले नहीं होंगे। महापुरुष एक बार, दो बार, तीन बार, चार बार अथवा पांच बार भी अपराध को सहन करते है ॥11॥

9. सिद्धराज के नीचे से ऊपर (स्वर्ग में) जाने पर, तुम (इन्द्र) ऊपर से नीचे (मर्त्यलोक) में आये हो। तुम्हारे दोनों के द्वारा दो (स्वर्ग और मर्त्यलोक) का अनुभव किया गया है, यह आन्न ने नहीं जाना ॥14॥

10. दक्षिण दिशा में रहे जिस मुनि के द्वारा दक्षिण दिशा रम्य है, उस मुनि (अगस्त्य) के समान गुरु (पुरोहित) को माता के साथ आन्न ने तुम्हें लडकी देने के लिए भेजा है ॥21॥

11. जन्में हुए ऐसे जिनके द्वारा उत्तर दिशा प्रसिद्ध है और बढे हुए ऐसे जिनके द्वारा उत्तरदिशा श्रेष्ठ है, उन (कोंकण देश के) घोडों को विवाह के मंगल में देने के लिए आन्न ने भेजे है ॥23॥

12.-13.-14. इस प्रकार बोलकर दूत के रहते हुए कुमारपाल राजा बोला, पत्थर समान हिम को, सूर्य जैसे पानी पानी कर देता है वैसे आन्न की भक्ति पत्थर समान हमारे मन को पानी-पानी करता है । पुत्री, घोडें और हाथिओं को आन्न अणहिलपाटक (पाटण) भेजे और गुरु तथा माता अणहिलपाटक को देखे ।।30।।

15. फिर उस दूत को विसर्जन करके कुमारपाल अपने देश की ओर वापस लौंटने पर, पाटण के समीप में गया और अपने नगर में प्रवेश किया ।

16. वाद्य यंत्र जल्दी से झणत् इस प्रकार झणत् झणत् इस प्रकार करने पर और पटह पटत्-पटत् इस प्रकार बजने पर उस (कुमारपाल) ने अपने स्थान को अलंकृत किया ।।42।।

17. खूब शत्रुओं को जीतनेवाले उस (कुमारपाल) के पास एक एक नगरजन आया । कुमारपाल ने भी घोडा-घोडा भेट देते हुए उन सभी को पास में बुलाया ।।44।।

18. जैसे `र' कार और `ष'कार मूर्धन्य है, वैसे विद्वानों में मूर्धन्य (शिरोमणि) अहंकार रहित तथा नमस्कार के योग्य ऐसे आन्न के गुरु अन्य दिन आये ।।49।।

19. अच्छे रुपवाली और अच्छे भाग्यवाली तथा रेफ की तरह वक्र है भ्रकुटि जिसकी ऐसी, नाम से जहलणा कन्या, दादी के साथ आयी ।।50।।

20. मनुष्यों के प्रति नये (दूसरे) सूर्य के समान राजा कुमारपाल ने, ये नए महेमानों को नवीन अश्वशाला और नया आवास दिया ।।51।।

21. कुमारपाल ने आन्न के पुरोहित को विवाह के कार्य पूछे, राजा कुमारपाल विवाह के लिए उचित्त विशेष पहनावे के साथ सज्ज हुआ । उसने पुरोहित को बुलाया । कुमारपाल जल्दी से पुरोहित के घर गया ।

पाठ-17

द्व्याश्रय महाकाव्य उन्नीसवाँ सर्ग

1. गणिकाओं जिनमें मुख्य है ऐसे नहीं–यानी कुलांगनामय इस महोत्सव में (विवाहोत्सव में) बहुत मंगल (स्वस्तिकादि) जहाँ किये गए है ऐसे द्वार में (घर के द्वार के आगे) राजा और गणिका सिवाय की जिनमें मुख्य है ऐसी स्त्रिओं को (कुलांगनाओं को) दहिमय–दहिस्वरूप तिलक किया ।।56।।
2. **अच्छा गानेवाली, उत्कृष्ट विलास करती, श्रेष्ठ स्त्रिओं ने खूब मालपुए और मोदक रखकर वहाँ धवल मंगल धारण किये ।।57।।**
3. अत्यंत पतले वस्त्रवाला, चुलुक वंश में जन्मा हुआ, अत्यंत श्रेष्ठ, अत्यंत उज्ज्वल उस कुमारपाल ने नमक (और अग्नि) से युक्त शराव संपुट को तोडकर द्वार की भीतर गया ।।58।।
4. **उन दोनों में जाने कि यह (वर) ज्यादा रुपवाला है कि क्या ? यह (वधु) ज्यादा रुपवाली है, इस प्रकार वधु से सखी वर्ग द्वारा देखे हुए राजा ने मातृगृह में प्रवेश किया ।।59।।**
5. आगे से ही खुश और उस वक्त (कुमारपाल के आगमन समय में) ज्यादा खुश हुए पुरोहित ने भी सांकाश्य में रहनेवाले ब्राह्मणों से ज्यादा पूज्य ऐसे नागरेयक ब्राह्मणों के साथ वहाँ मातृगृह में आया ।।60।।
6. **हाथ और पैर में, क्या हाथ ज्यादा कोमल है ! अथवा पैर ज्यादा कोमल है ! यह अच्छीं तरह से जानने के लिए कन्या को उठाकर सखिओं द्वारा यहाँ मातृगृह में लाया गया ।।61।।**
7. क्या यह (कुमारपाल) ज्यादा उत्कृष्ट है या यह (कन्या) ज्यादा उत्कृष्ट है इस प्रकार विचार करते हुए, जाने कि, पुरोहित ने दोनों के हाथ इकट्ठे किये ।।62।।
8. **जैसे अति प्रभात में हर्षित भौरे कमलों में अति जोर से गाते है, वैसे वहाँ (विवाह में) ब्राह्मणों ने एकदम पहले (अन्य से पहले) मंत्रों को अतिशय जोर से गाये ।।63।।**
9. उसके बाद (हस्तमिलाप के बाद) वधु की उत्तम सखियाँ हास्य प्रधान धवल गीतों को इस प्रकार गा रही थी, जैसे `खूब होंशियार ऐसा यह (कुमारपाल) खूब होशियार ऐसी हमें क्या ज्यादा ठगता है ?' ।।64।।

10. कमल जैसे हाथ में वज्र जैसे हाथ के द्वारा ग्रहण करता यह होशियार चोर, यह हमारी सखी को होंशियारी से चोरी करता है ।।65।।

11. और हल्दी (बलराम) जैसा यह वर, हाथ के द्वारा कडक जैसा पकडता है और यह वधु पूर्ण रुप से कांपती है, यहाँ हम क्या बराबर जैसा बोले ? ।।66।।

12. उसके बाद स्नातक (वेद के पार को पाये हुए) में मुख्य, पतले सूत की जनोई को धारण करता जैसे ब्रह्मा का निपुण कृत्रिम पुत्र न हो, ऐसे पुरोहित ने अग्निकार्य शुरु किया ।।72।।

13. वह वर, ज्यादा उम्रवाली वधु के साथ अग्नि की फेरी धीरे से घुमता है और नहीं पहचानती सभी स्त्रियाँ, सभी को आनंद देनेवाले मंगल गीत गाती है ।।75।।

14. प्रसन्न हुए पुरोहित ने, देविओं में अन्य (एक) वधु और देवों में अन्य (एक) उस (वर) को करमोचन कराया । (दोनों के हाथ भिन्न किये) ।।88।।

15. हे ब्राह्मणों ! तुम्हारे में कौन कठ है अथवा कौन विद्वान है ? इस प्रकार (अपने मनुष्यों के द्वारा) बुलाते हुए राजा ने ब्राह्मणों को धन के द्वारा खुश किया, (परंतु) सभी ब्राह्मणों को नहीं ।।89।।

16. उसके बाद काले लोहे की छूरी को धारण करता हुआ राजा, सौन्दर्य रूपी अमृत से पूर्ण वधु को ग्रहण करता हुआ घर की ओर चला और उस चंद्रमुखी वधु के साथ घर में प्रवेश किया ।

17. कितनी राते जाने पर राजा ने वर्षारात्र से पहले, पवित्र रात्रि की अर्धरात्रि (मध्यरात्रि) में सासु और उस पुरोहित को विसर्जन किया ।।133।।

18. सारी रात जगने वाला (सदा उद्यत) उस (कुमारपाल) ने शत्रुओं की पृथ्वी को वश किया, उच्च देश के अधिपति आदि राजाओं ने घोडों और हाथिओं के द्वारा उस (कुमारपाल) की पूजा की ।

19. मोक्ष के अर्थी मुनिओं के द्वारा भी जिसकी भुजाओं की स्तवना की गई है तथा तलवार जिसके हाथ में है ऐसे उस कुमारपाल ने जैसे किसी

न्याय मार्ग के दो अंगुल को वास्तव में उल्लंघन नहीं करता है और जैसे कोई न्याय मार्ग के अंगुल को (भी) उल्लंघन करने वाला वास्तव में नहीं था, उसी प्रकार न्यून दस महिने से पृथ्वी को जीत ली थी ।।137।।

20. उसके बाद एक बार कुमारपाल राजा के द्वारा तीन, चार, पशुओं को रास्ते में खींच जाता कोई दीन ग्राम्य नर देखा गया, इस (कुमारपाल) ने उसे कहा–अरे ! चलने में अशक्त भेडों को किस कारण खींच कर ले जाता है ? उसने जवाब दिया–हे राजन् ! मैं अति दरिद्र हुँ, इससे यह पशुओं को धन के बदले देने के लिए कसाई की दुकान में ले जाता रहा हूँ। निन्द्य लोग इसके मांस को धन के बदले प्राप्त करने के लिए इच्छुक होते है ।

21. दुर्बद्धि और अल्प बुद्धि वाले उनके वचन सुनकर, सद्बुद्धिवाले राजाओं के द्वारा इस प्रकार बोला गया ``बुद्धिहीन और अल्पबुद्धि वालों को वास्तव में धिक्कार है, क्योंकि वे अपनी आजीविका चलाने के लिए प्राणिओं को मारते है'' ।।9।।

22. अच्छी गंध वाले दूध को और सुगंधी चावल को छोडकर लोग दुर्गंधवाले (परंतु कर्पुरादि सुगंधी द्रव्य को डालने से) उल्लसित गंधवाले और सुगंधी मांस को, जिस कारण से खाने की इच्छा करते है उस कारण से उसके राजा का विवेक वास्तव में खराब है ।।12।।

23. ना मैं न्याय गंधवाला हूँ, ना ही धर्म गंधवाला हूँ। धिक्कार है कि पुरीष (पाप रुपी विष्ठा) के जैसी गंधवाला ऐसा मैं, गोबर जैसी गंधवाले (मैले) शरीर के लिए कर (Tax) लेता हूँ बल्कि भूमि के रक्षण के लिए कर नहीं लेता ।।14।।

24. उस (कुमारपाल) ने उस पशु को ले जानेवाले मनुष्य को इस प्रकार कहकर, अधिकारी को इस प्रकार आदेश किया–``तुम्हें झूठ बोलने वाले को शिक्षा करनी चाहिए। झूठ बोलने वाले से भी परस्त्री गामी को अधिक शिक्षा करनी चाहिए। उससे भी जगत् में प्राणी की हिंसा करनेवाले को अधिक शिक्षा करनी चाहिए।'' उन अधिकारिओंने उस (कुमारपाल) के वचन के साथ ही तरुण लोगों के द्वारा, त्रिककुद् पर्वत तक (लंका तक) अहिंसा की घोषणा की ।

पाठ-18

द्व्याश्रय काव्य बीसवाँ सर्ग

1. एक दिन तीक्ष्ण तलवार जिसके पास है ऐसे कुमारपाल राजा ने मध्य रात्रि में दु:खवाला स्वर (आवाज) सुना ।
2. **उसके बाद राजा ने इस प्रकार विचार किया ``कोई स्त्री शोक से भरी हुई मरने की इच्छा से यहाँ रो रही है ।''**
3. उसके बाद अल्प मुल्यवाले वस्त्रों को पहनकर, ग्रहण किया है संपूर्ण शरीर को ढकनेवाला नील (श्याम जैसा) वस्त्र जिसने ऐसा राजा (कुमारपाल) पदिकों को सोते हुए छोडकर उस स्थान से चला गया ।
4. **क्या कुरुजंगल देश में रहनेवाली है या विश्वधेनु देश में रहनेवाली है, अथवा न कुरुजंगल देश में रहनेवाली या न विश्वधेनु देश में रहनेवाली है, परंतु वास्तव में यह सुवर्णवलज–पुर में रहनेवाली है, यह विचार करते हुए, उस कुमारपाल ने वृक्ष के नीचे रोती हुई स्त्री को देखा ।।44।।**
5. उसके बाद पिता की तरह वह कुमारपाल राजा बोला, हे पुत्री ! सुवर्णवलज-पुर में रहने वाली तुम क्यों इस प्रकार दु:खवाली हो ? सौभाग्य के गर्व से चला गया है (तुम्हारे प्रति) प्रेम जिसका ऐसे पति के द्वारा प्रेमवाली क्या तुम्हारा तिरस्कार किया गया है ? ।।45।।
6. **अतिनिकट अपने भाई की तरह नजदीक से भी नजदीक आकर उस समय इस प्रकार बोलकर राजा के मौन रहने पर, उसके बाद पास रही वह स्त्री, पास रहे राजा के चरण युगल को दांत की कांति से, जाने अतिशय पुष्पमालावाला करके (नीचे मुह करके) बोली ।।49।।**
7. समुद्र में हाथ से तैरने से जैसे (व्यक्ति) नाश को पाता है, अथवा जिसके पास धनुष प्रहरण नहीं है ऐसे घी बेचने वाला जैसे रास्ते में चोरों से लुंटा जाता है, उसी प्रकार विष्ठा से भरी हुई अशाश्वत यह शरीर रूपी लकडी अचानक नाश पाती है । इससे उस (विनश्वर अंगयष्टि) को, अनाथ (पति, पुत्र रहित) मैं क्यों धारण करुं ? (नहीं धारण करुं ।) ।।76।।

8. पुत्र मरण से अपुत्र हुए का धन राजा ले लेता है, इस कारण से धन में भी आशा नहीं है, (इसलिए) हे (महापुरुष) ! तुम को (मेरे निमित्त कोई आपत्ति न आये इसलिए) तुम चले जाओं (वापस कोई सुन लेगा इसलिए) मत बोलों मत बोलों । इस प्रकार बोलती हुई वह स्त्री वृक्ष के प्रति अपने आपको फांसी देने के लिए तैयार हुई ।।77।।

9. उसके गले पर बांधने वाले वस्त्र-पाश को जल्दी से जबरदस्ती खींच लिया और बार-बार (अपने आप की) निंदा करके राजा ने उस (स्त्री) को इस प्रकार कहा–यह राजा तुम्हारे धन को नहीं ग्रहण करेगा, नहीं ग्रहण करेगा (कभी ग्रहण नहीं करेगा) । तुम्हें मेरे वचन को थोडा थोडा भी मानना चाहिए ।।78।।

10. जिस कारण से राजा (यहां का राजा) अत्यंत दया को करता है, उस कारण से मरे हुए का धन छोड देना, जिससे ``हे पुत्री ! पति–पुत्र को पानी का एक-एक घडा देने के लिए तुम वास्तव में जीवित रहो । (मरो मत)'' इसके बाद राजा ने इस स्त्री को इस प्रकार ऊँचे उद्‌बोधन करके (समझाकर) अपने घर गया ।।79।।

11. धन को जबरदस्ती लेने से नगर नगर में, अपुत्रीय अपुत्रीय (पुत्र रहित सभी लोग) दु:खी है, इस प्रकार याद करते हुए एक एक प्रजा को खुश करनेवाले उस (कुमारपाल) राजा ने, उसके बाद एक-एक मंत्री को इस प्रकार आदेश किया ।।84।।

12. हे मत्रिओं ! मेरी कमाई में दो-दो लाख या दो-दो करोड भले ही कम हो, परंतु तुम्हें पुत्र मरण से अपुत्रीय बने (व्यक्ति) का धन ग्रहण नहीं करना है । यह रहस्य (आदेश) मैं तुम्हे निर्देश करता हुँ ।।85।।

13. हे आचार्य भगवंत ! मैं आपको वंदन करता हूँ । हे कुमारपाल ! तुम्हारा जय हो, तथा हे उपाध्याय आदि भगवंत ! तुम्हे भी मैं वंदन करता हूँ । हे कुमारपाल ! तुम सुकृतवाले हो, तथा हे कुमारपाल ! तुम बडे आयुष्यवाला हो, इस प्रकार (आचार्यादि) आर्हतों के द्वारा आशीर्वाद पाये हुए कुमारपाल राजा ने, सुवर्ण और इन्द्रनील मणिओं के द्वारा, स्फटिक की बनायी हुई श्री पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा है, जिसमें ऐसा मंदिर यहाँ (अणहिल पाटक पाटण में) किया । (बनवाया) ।।98।।

जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर, मरुधररत्न, पू.आ. श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा मुख्यतया हिन्दी भाषा में आलेखित 278 पुस्तकों में से उपलब्ध एवं अवश्य पठनीय साहित्य-सूची

Sr. No.	पुस्तक का नाम	मूल्य
1.	Pearls of Preaching	60/-
2.	Panch Pratikraman Sootra	100/-
3.	अमृत रस का प्याला	300/-
4.	ध्यान साधना	40/-
5.	शंका समाधान (भाग-5)	160/-
6.	शत्रुंजय यात्रा	40/-
7.	शत्रुंजय की भाव यात्रा	230/-
8.	आओ संस्कृत सीखें भाग-2	400/-
9.	दंडक सूत्र विवेचन	90/-
10.	प्रवचन का अमृत	200/-
11.	पर्युषण अष्टानिका प्रवचन	120/-
12.	गणधर-संवाद	80/-
13.	आओ ! उपधान पौषध करें !	130/-
14.	श्री नमस्कार महामंत्र	180/-
15.	संस्मरण	50/-
16.	आध्यात्मिक पत्र	60/-
17.	चिंतन का अमृत कुंभ	80/-
18.	पंच-प्रतिक्रमण सूत्र (भाग-1)	210/-
19.	पंच-प्रतिक्रमण सूत्र (भाग-2)	220/-
20.	पंच-प्रतिक्रमण सूत्र (भाग-3)	125/-
21.	पंच-प्रतिक्रमण सूत्र (भाग-4)	135/-
22.	विवेकी बनो	90/-
23.	श्रमण क्रिया के मुख्य सूत्र	200/-
24.	प्रवचन-वर्षा	60/-
25.	आओ श्रावक बनें !	25/-
26.	व्यसन-मुक्ति	100/-
27.	श्रावक जीवन दर्शन	250/-
28.	महावीर प्रभु की पट्टधर परंपरा 58-80	280/-
29.	प्रतिक्रमण उपयोगी संग्रह	80/-
30.	समाधि मृत्यु	80/-
31.	तीन भाष्य	150/-
32.	आठ कर्म निवारण पूजाएं	200/-
33.	तत्त्वार्थ-सूत्र-भाग-1	200/-
34.	तत्त्वार्थ-सूत्र-भाग-2	200/-
35.	सज्झायों का स्वाध्याय	100/-
36.	कोयंबतुर-प्रवचन	150/-
37.	दक्षिण भारत प्रवचन	160/-
38.	विविध देववंदन	100/-
39.	नवतत्त्व विवेचन	110/-
40.	लघु संग्रहणी	140/-
41.	समाधि की साधना	300/-
42.	New Message for a New Day	600/-
43.	आओ ! पर्युषण प्रतिक्रमण करें !	150/-
44.	इन्द्रिय पराजय शतक	150/-
45.	दूसरा कर्मग्रन्थ	55/-
46.	तीसरा कर्मग्रन्थ	90/-
47.	चौथा कर्मग्रन्थ	140/-
48.	पाँचवाँ कर्मग्रन्थ	160/-
49.	छठा-कर्मग्रन्थ	210/-
50.	नित्य देववंदन	निशुल्क
51.	संबोह-सित्तरि (वैराग्य का अमृत कुंभ)	160/-
52.	श्री सिद्धहेमचन्द्र-शब्दानुशासनम् (भाग:-1)	1170/-
53.	श्री सिद्धहेमचन्द्र-शब्दानुशासनम् (भाग:-2)	1040/-
54.	श्री सिद्धहेमचन्द्र-शब्दानुशासनम् (भाग:-3)	900/-
55.	श्री सिद्धहेमचन्द्र-शब्दानुशासनम् (भाग:-4)	1270/-
56.	श्री भद्रंकर प्रश्नोत्तरी	170/-
57.	अध्यात्मयोगी से प्रश्नोत्तर	160/-
58.	योग की आठ दृष्टियाँ	430/-
59.	10 श्रमण-धर्म	250/-
60.	साचा माणस बनीए ! (गुजराती)	300/-
61.	शुभ-संदेश	250/-
62.	भक्ति से मुक्ति	200/-
63.	सहनशील बनों (22 परीषह)	180/-
64.	आओ ! प्राकृत सीखें भाग-1	350/-
65.	आओ ! प्राकृत सीखें भाग-2	300/-
66.	नवकार-प्रवचन	180/-
67.	जीवन-प्रसंग	360/-
68.	सात वासुदेव-प्रतिवासुदेव बलदेव	50/-
69.	समाधि मृत्यु	80/-
70.	पर्युषण अष्टाह्निका प्रवचन	120/-
71.	प्रतिक्रमण उपयोगी संग्रह	80/-
72.	श्रमण-हितशिक्षा	250/-
73.	हृदय प्रदीप (भाग-1)	260/-
74.	हृदय प्रदीप (भाग-2)	260/-
75.	हार्दिक-भावांजलि	210/-
76.	हालार-गौरव वज्रसेन-सौरभ	200/-
77.	आओ ! भाव सामायिक करें !	200/-
78.	चिंतन की चांदनी	200/-
79.	आओ ! संस्कृत सीखें ! भाग-3	360/-
80.	आओ ! संस्कृत सीखें ! Guide Book	270/-

पुस्तक प्राप्ति स्थान : दिव्य सन्देश प्रकाशन C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor, बे व्यु बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी, मुंबई-400 002. M. 84 84 84 84 51 (only whatsapp)

Kamal PRINTER'S
M. 9820530299